V-1

ASTROLOGY BASED ON PALMISTRY

ज्योतिष की

मदद से हस्त रेखा के जरिये दरूस्त

की हुई जन्म कुंडली से जिंदगी के हालात देखने के लिए

Free by Astrostudents

लाल किताब

1952

बीमारी का बगैर दवाई भी इलाज है,
मगर मौत का कोई इलाज नहीं ।
दुनियावी हिसाब-किताब है,
कोई दावा-ए-खुदाई नहीं।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

"लाल किताब" विषय सूची

फरमान नः	विषय	पृष्ठ नः
	प्रथम : ध्यान रखे साख तौर पर पुराने ज्योतिष और लाल किताब में अंतर	1
	लाल किताब के फरमान आगाज	
1	कुदरत से किस्मत किस तरह आई।	3
2	उसकी कुदरत का हुकमनामा कहां पाया गया।	4
3	ऊंचे फल्क का अक्स किधर है।	5
4	आलिम को इल्म में शक क्या है।	6
	व्याकरण :	6
5	तकदीर पहले या तदबीर (राशि)	6
6	किस्मत की ही गांठों से ग्रह मण्डल बनेगा (ग्रह)	8
	ग्रहों की मित्रता शत्रुता	10
	जिस्म व ग्रहों का संबंध	11
	ग्रहों की मियाद	11
	दरमियाने ग्रह	12
	ग्रह की उम्र का असर	12
	रियायती 40 दिन ताकत	12
	का पैमाना ग्रह की अवस्था 35 साला चक्कर	13
	जन्म दिन एवम् जन्म वक्त के ग्रह।	14
	ग्रहों की किस्में : पापी ग्रह पाप धर्मी ग्रह, अंधे ग्रह, रंताध ग्रह साथी ग्रह, बिन मुकाबिल के ग्रह, ग्रहों की कुरबानी के बकरे कायम ग्रह, ग्रह का घर, घर का ग्रह, मित्र एवम् शत्रु ग्रह ऊंच नीच बराबर के ग्रह, बालिग और नाबलिग ग्रह	15
		16
		17
7	युन से रह ने अपना घर क्यों पूछ लिया	18
	ग्रह राशि का आपसी संबंध।	18
	ग्रह बुर्ज या राशियों की गलतफहमी	20
8	12 पक्के घर :	20
	कुंडली का पक्का घर खाना नः 1	20
	खाना नः 2	21
	खाना नः 3	23
	खाना नः 4 & 5	24
	खाना नः 6	
	खाना नः 7	
	खाना नः 8	
	खाना नः 9 & 10	
	खाना नः 11	
	खाना नः 12	
	सोये हुए पक्के घर या पक्के घर में बैठे सोये ग्रह (सोया घर या सोया ग्रह)	
	ग्रह दृष्टि (आम हालत)	
	ग्रहों की वाहम दृष्टि का राशियों से संबंध	
	कुंडली के खानों का संबंध	
	100% और अपने से सातवें देखने का फर्क।	
	ग्रहों का असर ग्रह में : ग्रह का असर ग्रह के घर में और उनका फर्क।	
	खास-खास चीजों के लिए दृष्टि (सेहत, बीमारी संतान आदि)	
	ग्रहों की वाहम दृष्टि के वक्त उनके मुश्तरका असर की मिकदार	
	खानों की दृष्टि :	
	वाहम मदद, आम हालत	
	टकराव व बुनियाद, धोखा मुश्तरका	
	दीवार, अचानक चोट	
	पहले या बाद के घरों के ग्रह	
	उलझन के ग्रह	
	ऋण पितृ के ग्रह	
	उनका देखना और उपाय	
	महादशा का ग्रह	
	लाल किताब की चंद्र कुंडली	
	धोखे का ग्रह	
9	सहायता के लिये उपाय	
10	ग्रह का असर (खास बातें)	
	साझे ग्रहों का असर देखने का ढंग।	
	खास खास असर	
11	ब्रह्मांड में ग्रह वाली बच्चे की अवस्था	
12	कुंडली की बनावट व दरस्ती	
	हस्त रेखा से कुंडली बनाने का ढंग	
	चंद्र मुट्ठी का कुंडली का आपसी संबंध	8
	फलादेश देखने का ढंग	
	ग्रह कुंडली की मकान कुंडली से दुरस्ती	8
	सारे परिवार की इकट्ठी कुंडली	8
13	वर्षफल	8
14	टेवे की किस्में	8
15	फलादेश देखने का ढंग	9

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

प्रथम

याद रहे या न रहे, मगर ख्याल जरूर रहे कि -
इन्सान बन्धा खुद से लेख से अपने, लेख विधाता कलम से हो
कलम चले खुद कर्म पे अपने, झगड़ा अक्ल किस्मत हो
क्योंकि [1] [2]
लिखा जब किस्मत का कागज, वक्त था वो गैब का
भेद उसने गुम था रक्खा, मौत दिन और गैब का
ख्याल रखना था बताया, कृतघ्न इन्सान का
एवज लड़की लड़का बोला, खतरा था शैतान का

[1] = अक्ल = बुध,
[2] किस्मत = बृहस्पत,

1 हवाई ख्याल की बुनियादी दीवार का मजमून बेशक तुझे मौत का दिन, किसी के भेद या ऐब और माता के पेट में लड़का है या लड़की का इशारा कर देगा। अगर ऐसी बातों का अपने वक्त से पहले ही जाहिर कर देगा तेरे खून को कोढ़ (बीमारी) का सबूत देगा। क्योंकि दुनिया में अगर इलाज है तो सिर्फ बीमारी का ही है मगर मौत का कोई चारा नहीं और ज्योतिष भी गैब की वकिफियत का इल्म जरूर है मगर कोई जादू मन्तर नहीं यह सब दुनियावी हिसाब किताब है कोई दावा-ए-खुदाई नहीं अगर है तो सिर्फ अपने जाती बचाव में किसी हद तक रूह की शान्ति के लिए मदद का जरिया है। मगर किसी दूसरे पर हमला करने का हथियार नहीं। किस्मत के मैदान में अगर कहीं पानी की नाली पीछे से भरी आ रही हो और उसके रास्ते में कोई ईंट पत्थर गिरकर उसकी रवाना को रोक रहा हो तो मजमून की मदद से उस कंकर पत्थर को दूर करके पानी की धाल को दुरुस्त करने की बामौका कोशिश की जा सकती है मगर पानी कि मिकदार या किस्मत के मैदान में कोई कमी बेशी नहीं की जा सकती। हां इतना जरूर है कि यह मजमून बाज औकात अपनी बरकत से किसी प्राणी पर हमला करने वाले जालिम शेर के सामने एक ऐसी गैबी दीवार खडी कर देगा जिससे कि वो शेर उसका कुछ बिगाड़ न सके। फिर भी शेर और ऊंची छलांग से हमला करे तो ये मजमून गैबी दीवार को और भी ऊंची करता जाएगा मगर हमला करने वाले शेर पर न गोली चलाएगा और न ही उसकी टांग पकड़ेगा मगर रहानी मदद से वो शेर थक हार कर खुद ब खुद ही चला जाए या हमले का इरादा ही छोड़ देगा। जिससे दोनों अलहदा-अलहदा हो जाने पर वो प्राणी सुख का सांस लेने लगेगा। 6

2 मजमून की बुनियाद पर "लाल किताब" की जिल्द सुर्ख खूनी लाल रंग की जो चमकीला न हो मुबारिक होगी इस रंग के इलावा बाकी सब रंग मनहूस असर के ही होंगे।

3 इस किताब में सामुद्रिक विद्या की क ख (वर्णमाला) मुकम्मल तौर पर देने की कोशिश की गई है मगर चूंकि एक फरमान दूसरे से बिल्कुल जुदा ही होता चला गया है इसलिए तमाम की तमाम ही किताब का शुरू से आखिर तक कई दफा बार-बार बतौर नावल बेशक बगैर समझे ही पढ़ते जाना स्वयं ही मजमून का भेद बना देगा।

4. किसी बात को आजमाने से पहले उसे अपने जाती फैसला से गल्त समझकर वहम खड़ा कर लेना मजमून की वाकफियत के लिए मददगार न होगा।

5. किताब के बगैर फर्जी मन मानी या मनघड़न्त बात वहम पैदा कर देगी और वहम का इलाज शायद ही कहीं मिलता होगा।

6. कुंडली का बनाना और उसकी दुरुस्ती का जाँचना तमाम सम्बन्धित विद्या के परिचय के बाद शुरू करें और दरम्यानी वक्त में मौजूदा ज्योतिष की बनाई हुई कुंडली से ही तर्जुबा हासिल करें मगर ख्याल रहे कि अपने ही हाथ का खाना या अपनी ही जन्म कुंडली, मजमून सीखने के रास्ते में सबसे बड़ी रुकावट होगी। 7

7. मजमून की गल्ती बताने वाला इस इल्म को बढ़ाने के लिए सबसे मददगार दोस्त होगा क्योंकि असल दोस्त वो है जो नुक्स बतलाएं।

8. बात की असलियत को पाने के लिए किसी दूसरे इल्म या आलिम की बदखोई से परहेज करें।

9. इसमें शक नहीं कि तहकपन की तबीयत वाले निन्दक (बदखोई करने वाला) और कुएं के मेंढक (अपने दायरे में महदूद) जैसे दिमागी मालिक और मखौल उड़ाने वाले भोले बादशाह (बेवकूफ) से फराहत आ ही जाया करती है मगर दुनियावी साथियों को क्षमतानुसार (हस्बे हैसियत) इस इल्म के फायदा पहुंचाना इन्सानी शराफत होगी। क्योंकि

कर भला होगा भला
आखिर भले का भला

---

8 नए और पुराने मजमून का फर्क

यह किताब

जन्म वक्त दिन माह उम्र साल सब कुछ — इस्म नाम को भी मिटा देती है।।
फक्त रेखा फोटो मकानों से कुंडली — जन्म भय चन्द्र बना देती है।।
लिखित जब विधाता किसी की हो शक्की — उपाय मामूली बता देती है।।
ग्रह फल व राशि के टुकड़े दो करता — या रेखा में मेख लगा देती है।।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

1. इस विद्या की नींव सामुद्रिक विद्या पर है जिससे मौजूदा ज्योतिष के मुताबिक बनी हुई जन्म कुंडली के लगन की दुरुस्ती करने में मदद मिलती है। जब प्राचीन विचारों पर शनिच्चर की अढ़ाई साला मन्दी चाल के तीन बड़े चक्रों (२½, ५, ७½ साल) की साढ़सती की फिक्र मानी पड़े, तो इस लाल किताबी मजमून की बुनियाद पर शनिच्चर की मन्दी घटनाएं मसलन सांप डसने की घटनाएं (वारदातें), मकान गिर जाने या बिक जाने, और की नजर (बिनाई) की खराबियाँ, घच्चे (चाचा) पर जान तक की तकलीफ. या मशीनों के नुकसान वगैरा-वगैरा साबूत देंगे कि शनिच्चर मन्दा बैठा गर्जे कि सूरज की अन्तरदशा या शनिच्चर की साढ़सती चल रही है कि क्यासी खयाल की वजाए ठोस चीजों और पक्की घटनाओं की बुनियाद पर जिंदगी के हालात के जवाबों को दुरुस्त माना गया है। हस्तरेखा से टेवा टिपड़ा दुरुस्त करके जिंदगी के हालात मालूम करने के इलाज इस इल्म में हर शख्स के टेवे से उसकी 120 वर्ष की उम्र तक के वर्षफल चन्द मिनटों में बना लेने के लिए ग्रह वाली फहरिस्त (सूचि) मौजूद है।

2. शक्की असर की हालात के वक्त शक का फायदा उठाने के लिए उपाय निहायत आसान और कम कीमत के बताए गये जो अमूमन ठीक वक्त पर असर देते हुए पाए गये है।

3. मजमून बहुत लम्बा चौड़ा होने की वजह से सिर्फ उन्हीं घटनाओं का जिक्र है तो निहायत संगीन, शदीद बल्कि खून से लिखे जाने के काबिल हों मामूली तप (बुखार) या साधारण कष्ट की वजाए तपेदिक, मिरगी, अधरंग हंसानी बाकी है या चल गया (मर गया) का ब्यान किया गया है गर्जे कि दरम्यानी शक्की जवाब को दूर करने की कोशिश की गई है।

4. प्राचीन (पुराने) ज्योतिष में अगर राहु जन्म कुंडली के पहले घर में हो तो केतु उस कुंडली में हमेशा लगन से सातवें होगा। बुध भी सूरज से आगे पीछे या नजदीक साथ-साथ चलता होगा मगर ग्रहों की यह कैदें इस मजमून में नहीं रखी गई बल्कि इस मजमून के मुताबिक वर्षफल बनाने की दी हुई फहरिस्त की बुनियाद पर राहु और केतु एक दूसरे के नजदीक घरों में बल्कि हाथ रेखा से बनी हुई जन्म कुंडली या वर्षफल में तो एक ही घर में इकट्ठे की आ सकते हैं। इसी तरह हो सकता है कि बुध का ग्रह भी सूरज से खा कितने ही घर दूर हो जाव गर्जे कि इस मजमून में हर एक ग्रह अपनी अपनी जगह आजाद होगा। और उसकी अपनी बैठक, ग्रह वाली हालत या तरीका असर पर किसी तरह की कैद न होगी और तमाम ग्रह समान अधिकारों के स्वामी होंगे।

5. खास बात यह है कि टेवे या कुंडली से जिंदगी का सम्बन्धित फलादेश देखने के सिद्धांतों में:

राशि छोड़ नक्षत्र भूला, नहीं कोई पंचांग लिया,
मेख राशि खुद लग्न को गिनकर, बारह पक्के घर मान गया।

ज्योतिष विद्या के अनुसार बनी हुई जन्म कुंडली लगन वाला घर लाल किताब में मेख राशि का पक्का घर हमेशा अंक नः 1 होगा जिसके (क्रमानुसार) बाद बाकी सब घर क्रमशः गिनती में होंगे। यानि पुरानी ज्योतिष विद्या वाले कोई भी उ राशि रखकर लगन मुकर्रर करें उनकी जन्म राशि या लगन वाले खाना नः को लाल किताब के मुताबिक खाना नः 1 और फिर बाकीघरों विलतरतीब ही मिलेगा। (क्रमानुसार)

मसलन कोई जन्म कुंडली तुला राशि के अनुसार निम्नलिखित है:

Free by Astrostudents

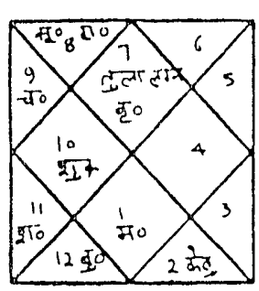

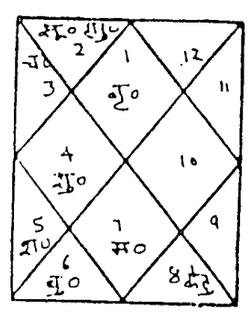

अब तमाम घरों से अब अंक मिटा दें मगर ग्रह वैसे के तैसे ही लिखे रहने दें। इसके बाद उसमें अंक मिटाए हुओं की कुंडली के लगन घर को 1 का अंक दिया हो तो निम्न लिखित होगी सिर्फ अंक नः बदल जायेंगे मगर ग्रह हूबहू उन्हीं घरों में रहेंगे जहां कि वो पहले थे।

अब हालात देखने के लिए बृहस्पत खाना नः 1 सूरज नः 2 वगैरा मुताबिजा करें इसी तरह ही वर्षफल पढ़ लेंगे इसी तरह पर प्र ज्योतिष के मुताबिक राशियों का लगन की तबदीली के कारण जन्म कुंडली में घूमते रहने का चक्कर जाता रहा पंचांग की लम्बी चौड़ी गिनती गई। और आखिर पर फलदेश देखने के वक्त 28 नक्षत्र और 12 राशियां भी भुला दी गई।

6. जन्म कुंडली में इकट्ठे बैठे हुए ग्रह वर्ष फल में भी अलहदा अलहदा न किए गये। जिससे लग्नेश धनेश की पुरानी गिनती का ख्याल स्व समाप्त हुआ।

7. ग्रहों का असर उनकी आशिया वस्तुओं, कारोबार या रिश्तेदार के मुतल्लक कायम होने के पक्का होने का भेद जाहिर हुआ जो जरूर वक्त मददगार साबित हुआ।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

प्रारम्भ (आगाज) 11

हाथ रेखा को समन्दर गिनते
फलक का काम हुआ
इल्म क्याफा ज्योतिष मिलते
लाल किताब का नाम हुआ।

लाल किताब के फरमान:-

लाल किताब फरमावे यूं
अक्ल लेख से लड़ती क्यों [2]
जबकि न मिला तदबीर अपनी
नहीं खुद तहरीर हो
सबसे उतम लेख गैबी
माथे की तकदीर हो

उमगों से भरे हुए शाह जोरा और जमाना के बहादुर पहाड़ चीरने वाले नौजवान ने हाथ पर हाथ रखे हुए आसमान की तरफ देखने बजाए जब अपने सर से पांव तक कोशिश करने के बाद नतीजा हस्ब मन्शा न पाया और अपनी ही आंखों के सामने एक मामूली नाचीज हस्ती जिन्दगी के चन्द लम्हों में दुनियावी सब जररियात का मालिक और जमाने का सरताज होते हुए देखा तो उसके वजूद के अन्दर छिपा हुआ दि तड़पकर पेशानी से पानी के कतरे होकर कहता हुआ पूछने लगा कि इसमें भेद क्या है। जिसके जवाब में फरमान हुआ कि न जरूरी नफ्जे ताक नहीं अंग दरकार हो।

लेख चमक जब फकीरी राजा आ दरबार हो
दो मुश्तरका खाली आकाश में हवाई दुनिया का प्रवेश

[1] अक्ल बुध, [2] लेख बृहस्पत

फरमान न: 1

कुदरत से किस्मत किस तरह आई

1. हुक्म विधाता जन्म मिले तो लेख ज्योतिष बतलाता है
   लाल किताब बच्चा ग्रह चाली, किस्मत साथ ले आता है
2. इस बच्चे की नन्ही मुट्ठी में, पकड़ा देव आकाश का है
   भरा खजाना जिसके अन्दर, निधि सिद्धि की माला है
3. नौ निधि को ग्रह नौमाना सिद्धि बारह राशि है
   नौ में जरब जब बारह देते होती माला पूरी है
   [2]

जब बच्चा पैदा होता है बन्द मुट्ठी लाता है जिसे वह अमूमन बन्द ही रखता है और आसानी से किसी दूसरे को अपने हाथ की हथेली नहीं देखने देता गोया बचपन में वह अपनी कुदरती भेद और छोटी सी मुट्ठी खजाना किसी दूसरे को दिखाना नहीं चाहता बन्द मुट्ठी में क्या है ?

[1] ग्रह चाली बच्चा आसमान और पाताल से घिरे हुए आकाश में दोनों जहां और दोनों अरथा (जन्म, मरण) की हवा को गांठ लगा देने वाली चीज बच्चा ग्रह चाली कहलाई।

[2] ग्रह चाली माला 9x12 = 108 मनकों की माला और मुकम्मल इन्सान के नाम के पहले 108 का हिस्सा ग्रह चाली माना गया है।

सिर्फ खाली जगह जिसका दूसरा नाम आकाश है और उसमें सिर्फ हवा भरपूर है मुट्ठी के हिलते ही उसके अन्दर की हवा में हरकत आई। गोया हरकत से गर्मी-गर्मी से आग, और आग से पानी, पानी से मिट्टी और मिट्टी से दुनिया का सब ब्राहाण्ड पैदा हुआ

या यूं कहो कि जब बच्चे ने मुट्ठी खोली तो उसमें हाथ की हथेली और उंगलियों का हिस्सा जुदा जुदा मालूम होने लगा कहीं लकीरें कहीं निशान पाए गये। उंगलियों के भी कई-कई टुकड़े जुदा-जुदा और फिर इकट्ठे एक ही में मिले नजर आने लगे। हाथ की हथेली खुश्की की एक निहायत ही बड़ा बर्रे-आजम (महाद्वीप) या ब्रहाण्ड माना गया। हथेली पर पहाड़ की तरह ऊपर को उभरी हुई जगह का नाम बुर्ज मुकर्रर हुआ। लकीरों को रेखा का नाम मिला जो पानी के दरिया लहरें मारते हुए इधर-उधर भागते हुए माने गए किसी को उम्र रेखा और किसी को किस्मत रेखा से याद किया गया और आखिर में सब इकट्ठे मिल मिला कर एक समुन्द्र बना जिसकी वजह से इस इल्म का नाम सामुन्द्रिक या समुन्द्र की विद्या ही ठहराया गया।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

फरमान: 2

उसकी कुदरत का हुक्म नामा कहां पाया गया
अक्स गैबी जाहिर पहले था सितारों पर हुआ
नक्श जिसका पीछे दुनिया के दिमागो आ हुआ
दिमागी खानों का असर तब हाथ की रेखा हुआ।
चांद सूरज फल की दुनिया से जहां, दो बन गया।
इल्म ज्योतिष इस तरह पर जब सितारों से हुआ
सीधी टेढ़ी हाथ रेखा से क्याफा चल पड़ा
दिमाग दायां हाथ बायां पर चमक जब दे चुका
हुक्म नामा उसकी कुदरत मुट्ठी बन्द इन्सान था

दरअसल सबके मालिक ने इन्सान के साथ उसके लिए मुकर्रर किए हुए कामों का हुक्मनामा हथेली पर लिखा हुआ उसको अपने ही कब्जे में ऐसे ढंग से भेजा है कि वह कभी गुम न होने पाए और न ही उसमें कोई तब्दीली या धोखादेही की जा सके मगर उसकी शक्ली हालत को दुरुस्त करके उसकी शक का फायदा बेशक उठा लिया जाए।

हथेली के बसीह बर्रे-आजम पर ऊपर को उठे हुए बुर्ज और पहाड़ जिस कदर ऊंचे और लम्बे चौड़े और मजबूत होंगे उसी कदर ही एक दूसरे की अच्छी या बुरी हवा की रोकथाम कर सकेंगे।

दरिया की नदियां या समन्दर के मददगार दरिया जिस कदर गहरे और साफतह जमीन वाले होंगे उसी कदर ही उनमें पानी की ज्यादा घाल और फक्का असर होगा। जिस कदर नदियां और दरिया कम गहरे और तंग होंगे उसी कदर उनमें न सिर्फ पानी कम या उनका असर हल्का होगा बल्कि असर के वक्त की रफ्तार भी मद्धम होगी रेखा में मुखतलिफ निशान दरिया में बरीती जजीरे या रास्ता की रुकावटें होंगी। दरिया रेखा जिस जिस पहाड़ बुर्ज के इलाकासे गुजर कर आएंगे उसी उसी किस्म का असर उनकी साथ लाई मिट्टी में मौजूद होगा। और बुर्ज या पहाड़ की जड़ी बूटियों और मुखतलिफ किस्म की दवाईयों के पौधों से आई हुई तेज मद्धम मीठी या कड़वी हवा के असर का साथ होगा। हूबहू यही अवस्था ग्रहों की मुखतलिफ राशियों के लिए मुकर्रर किए हुए घरों में होने पर इन्सानी जिन्दगी में होगी।

अगर कुंडली हथेली का बर्रे आजम बनी तो ग्रहों की नजर का रास्ता या उनकी बाहमी दृष्टि ब्रह्माण्ड के दरियाओं की गुजर गाह होगी जो उनके असर में ग्रह मंडल की जाती दोस्ती व दुश्मनी से पैदा शुदा लहरों की उकसाहट से हजारत किस्म की तब्दीलियां वाका करने का बहाना होगी और ग्रहों की मुकर्ररा मयादों पर अक्सर जाहिर हुआ करेगी।

उंगलियों के पोरों (हिस्सों) और हथेली के बर्रे आजम हर दो ही के बारह बारह टुकड़े हुए और बुर्जों या पहाड़ों को नौ हिस्सों में तकसीम किया गया। यही नौ निधि (गैबी ताकत) बारह सिद्धि (इन्सानी हिम्मत) इस इल्म की बुनियाद हुई।

ग्रह राशि और रेखा के इलावा मकान जेरे-रिहायिश-ख्वाब माल मवेशी दुनिया के दूसरे साथी दीगर शगून (शुभ निशानियां) और इल्मे क्याफा इस मजमून के जरूरी पहलू गिने गए।

जू हि के गैबी अक्स दिमागी खानों में नक्श होकर हाथ की रेखा के दरियाओं के पानी में जाहिर हुआ दुनियां के पहाड़ो का लम्बा सिलसिला हथेली के बुर्जों में बुलंदी से दिखाई देने लगा और बच्चे के सांस की हवा ने भी रुख बदला जिस पर पहाड़ों से घिरी हुई हथेली का बर्रे आजम और चारों उंगलियों के बसीह मैदानों के बारह कोने जन्म कुंडली में हूबहू वैसे के तैसे पाए गए और अगर खुद रहा तो सिर्फ अंगूठा (अंगुष्ठ नर) ही बेरुख पाया गया। जो इन तमाम का मद्धुव्वर (धुरी) अंगूठे की कीली और दुनियांदारों के पुण्य पाप का पैमाना मुकर्रर हुआ दूसरे लफ्जों में हथेली की लकीरों या बारह खानों और उंगलियों बारह ही गांठों से जो गैबी अक्स जाहिर हुआ वह हूबहू कुंडली के बारह खानों में नौ ग्रहों की मुखतलिफ अवस्था से ही पाया गया।

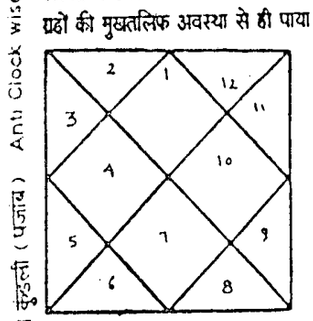

जन्म कुंडली (पंजाब) Anti Clock wise

जन्म कुंडली (बंगाल) Clock wise

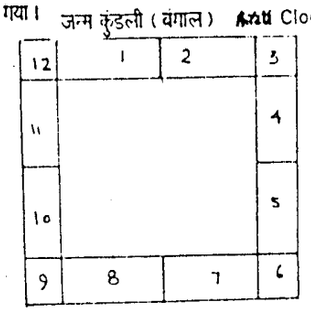

मकान कुंडली,

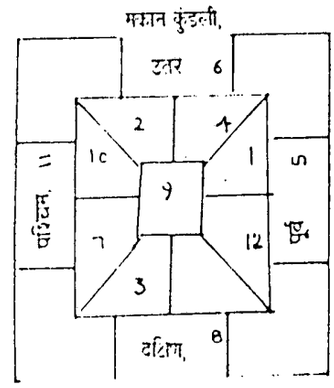

शमाल = उत्तर
मशरिक = पूर्व
जनूब - दक्षिण
मगरिब = पश्चिम

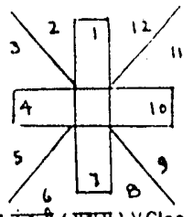

जन्म कुंडली (मद्रास) V Clock wise

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

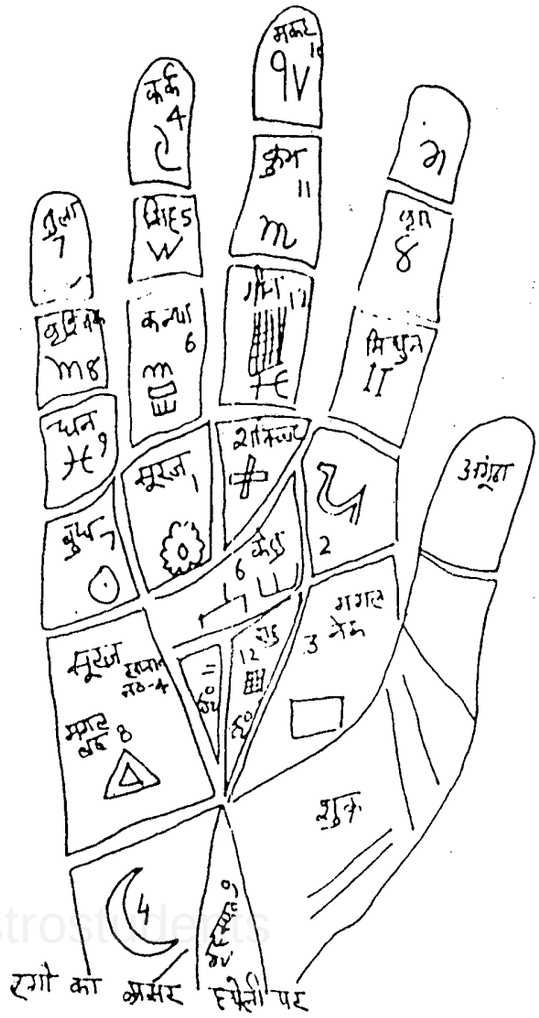

Free by AstroSidhu

फरमान नः तीन

ऊंचे फल का असरा किधर है

हाथ दायां और कुंडली जन्म को तदबीर मर्द का नाम हुआ, कुंडली चन्द्र या हाथ बायें से तकदीर बशर का काम हुआ
उल्ट हाथों से औरत माना ग्रह फल राशि आम हुआ नेक हवा जब चलने लगी तो जहां दोनों का नाम हुआ
गोया हाथ में कुंडली और कुंडली में ऊंगली के हवाई हशारे से ब्रह्माण्ड का मैदान एक ही दम में गूंज उठा

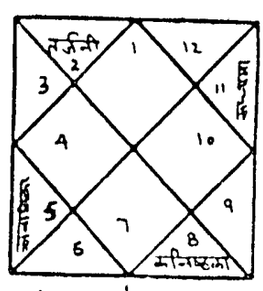

हथेली का हिस्सा होगा
मुट्ठी के अन्दर
तर्जनी ऊंगली.....2
अनामिका.....5
कनिष्ठका.....8
मध्यमा.....11

जन्म कुंडली खाना नः
1-7-4-10
आसमान होगा खाना नः...12
पाताल.....6
तीनों जमाने.....3
कुंडली का केन्द्र.....9

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

फरमान नः 4

आलम को इल्म में शक क्या है

समां करे, नर क्या करे, समां बड़ा बलवान, असर ग्रह सब पर ही होगा परिन्दा, पशु इन्सान

बच्चा गैबी पर्दे से माता के पेट में आया, फिर बन्द हवा से इस दुनिया में पहुंचा तो उसके साथ की दो जहानी हवा उसका सांस हुई। जिसके लेते ही जमाना की दोरंगी चालों के मैदान का लम्बा चौड़ा किताब खुल गया जिस पर हर बात के दो पहलू होने लगे या यूं कहो कि जन्म का वक्त पता लग जाने से जिंदगी के ख्वाब की तावीर, मालूम करने का खाका (जन्म कुंडली) इल्म ज्योतिष के अनुसार होता हुआ माना गया मगर शक हुआ कि इक बाप के दो बेटे इक घर के दोनों भाई इक शहर दो नियामी।

(1) जन्म वक्त को बुनियाद मानकर जिस तरह यह मजमून इंसान के ताल्लुक के काम देता है हूबहू उसी तरह ही इस अल्म का असर परिन्दे पशु मकान या दूसरे दुनियावी वस्तु जरूरी घटनाओं और कामों के संबंध में पाया गया है यानि अगर वक्त की पैदायश के मुताबिक किसी इंसान की जन्म कुंडली उसके हालत से खबर देगी तो उस वक्त पर पैदा शुदा हैवान या बनाया हुआ मकान ग्रह वाली असर से खाली न होगा।

2. एक बाप की एक औरत से दो जोड़े बच्चे या उसकी दो भिन्न-भिन्न औरतों से एक वक्त में दो इकट्ठे पैदा हुए बच्चे – एक वक्त दोनों साथी हम असर एक जमाना एक नसल ख वेगाना सब ही का जन्म वक्त एक ही होने पर हालात की दुरस्ती की बुनियाद क्या होगी। बरअक्स (इसके विपरीत) भूचाल, हादसा, दरियाओं की दरम्यानी जंगे अजीम की गोलाबारी या दीगर बबाई (संक्रमक के रोग) और जहरीले बकात से हजारों लाखों का आखिरी वक्त (मौत) एक ही जैसा और एक ही होनों देखा गया तो फिर सबका सब निश्चय जाता ही मालूम होने लगा इस पर ख्याल गुजरा कि हस्त रेखा और इल्म क्याफा के मुताबिक जब हर एक की रेखा और लकीरें जुदा-जुदा है तो हालात का नक्शा क्यों तसल्ली बख्श न होगा मगर फिर भी वहम पैदा हुआ कि जब 12 साला बच्चे की रेखा को कोई एतबार नहीं और 18 साला उम्र से बड़ी रेखा में कोई तबदीली नहीं मानते (मगर शाखों का बदलना माना गया है) तो यकीन किस बात पर होगा इस तरह दोनों इल्मों से कोई दिल जोई न हो सकी। क्योंकि एक तो जन्म वक्त (लग्न) गल्त होने की वजह से ही वे बुनियाद हो गया और दूसरों सिर्फ एक अकेले ही जिंदगी का नेको-बद (तबीयत की नर्मी गर्मी) बताकर चुप हुआ और किसी दूसरे साथी या ताल्लुकदार का कोई वास्ता न बता सका वो आखिर पर हर दो इल्मों का इकट्ठा किया गया मगर फिर मालूम हुआ कि बुनियादी असूलों की वाकफियत के बगैर कोई मकसद हल न होगा। लिहाजा शक को दूर करने के लिए या उसका फायदा उठाने के लिए इस इल्म में फलादेश और योगबन्धन आदि के अलग-अलग हिस्से निश्चित हुए।

1. ताया चाचाजाद या खालू मामू घरों एक ही वक्त के इकट्ठे पैदा शुदा भाई।
2. खा आलीशन राजा खा निर्धन दुखिया फकीर मगर दोनों एक ही शहर में इकट्ठे रहने वाले निवासियों के यहां एक वक्त में पैदा शुदा बच्चे।
3. एक कश्मीरी दूसरा मद्रासी तीसरा महाराष्ट्री तो चौथा बंगाली पर सब इलाकों के वासियों के ही एक ही वक्त में पैदा शुदा बच्चे।
4. एक मुल्क के गए हुए मगर एक लंका में दूसरा अमरीका में तीसरा इंग्लैंड तो चौथा जापान में अगर वक्त की जोड़ घटाव कर कराने के बाद सब बच्चों का जन्म वक्त एक ही है तो सबका जन्म लग्न भी एक ही होगा मगर जिंदगी के हालात अमूमन कभी एक ही न होंगे।

Grammar – 21

व्याकरण

फरमान नः 5 – 22

तकदीर पहले या तदबीर, बेटी आई पहले दुनिया या पहले माता हो
जोड़े बच्चे पेट माता, पहले जन्मे छोटा हो

राशि - राशि

1. हाथ की उंगलियों की हर एक गांठ या 24 घंटे के दिन रात को 12 हिस्सों में तकसीम करने पर हर एक टुकड़ा (जो हर एक टुकड़ा ठीक पूरे दो घंटे का न होगा) मगर 12 टुकड़ों में से हर एक टुकड़े राशि कहलाता है।
2. राशियां तादाद में 12 है जिनके नाम और नं: हमेशा के लिए एक ही निश्चित है कुंडली में बार बार हर राशि का नाम लिखने की बजाए इसके लिए निश्चित किया हुआ अंक नं: ही लिख दिया जाता है।

प्रचलित (आजकल के जारी) ज्योतिष में राशियां कुंडली के घरों में घूमती रहती है मगर फलादेश देखने के लिए इस विद्या में उनकी जन्म हमेशा के लिए पक्के तौर पर निश्चित कर दी गई है।

राशि का नाम	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
स्थायी अंक	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
क्याफा में निशान	♈	♉	♊	♋	♌	♍	♎	♏	♐	♑	♒	♓

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

मेष वृष जब मिले मिथुन से
तर्जनी ऊंगली गिनते है
कर्क सिंह और कन्या राशि
अनामिका ऊंगली लेते है
तुला वृश्चिक धन तीनों की
छोटी कनिष्ठका होती है
मकर कुंभ और मीन हथदृठी
मध्यमा ऊंगली बनती है

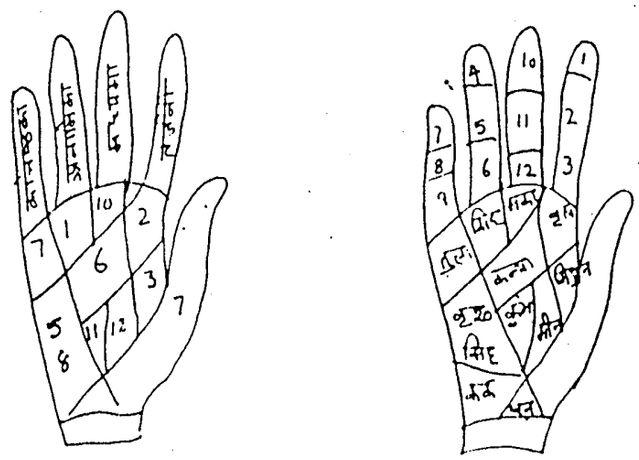

7 राशियों की कुंडली में पक्की जगह,

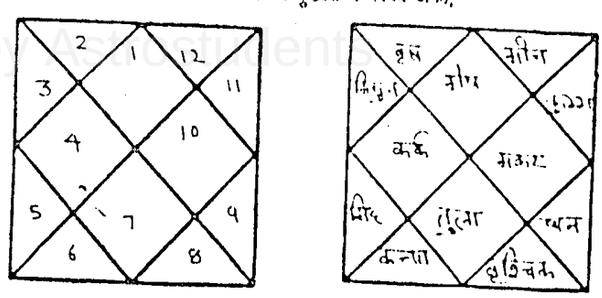

1. तर्जनी ऊंगली बृहस्पत या हकूमत की ऊंगली होती है अनामिका ऊंगली सूरज या व्यक्तिगत (हिम्मत) से कमाई की ऊंगली होती है कनि ऊंगली बुध या हुन्नरी हुनर कमाई की ऊंगली होती है
2. गिनती चाल और जगह मुकर्रर करने के वक्त मध्यमा ऊंगली को सब ऊंगलियों के आखिर पर लेते है क्योंकि मध्यमा ऊंगली उदासी वैराग्य या दुनिया से अलहदा गिनी है जिसका ताल्लुक गृहस्थ के बाद है।

राशियों की कुंडली में पक्की जगह

हर ग्रह की निश्चित रेखा भी कुंडली खाना नं: हो जाती है
तर्जनी और मध्यमा के दरम्याना खाना नं: 11 अगूंठा नं: 2 होगा दिल रेखा खाना नं: 4 होगा सिर रेखा खाना नं: 7 होगा
शनि का हैड क्वार्टर जहां खाना नं: 7 (तुला) खाना नं: 4 (कर्क) खाना नं: 8 (वृश्चिक) खाना नं: 9 (धनु) खाना नं: 12 (मीन) और नं: 11 (कुंभ) सब के सब मिलकर आपस में काटते है वह Crossing point खाना नं: 8 शनिच्चर के Head quarter की जगह होगा
इस विद्या में जहां कभी खाना नं: का जिक्र होगा तो मुराद होगी कि कुंडली का खाना नं: है राशि नं: से मुराद न होगी खाना को लगन भी कहते है।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

फरमान नः 6

किस्मत की गांठों ही से ग्रह मंडल बन गया

धर्म दरिया कोसों ऊंची, ग्रह ही सखी लख दाता हो
उल्टे वक्त खुद गांठ आ लगती लेख लिखा था विधाता जो गिरह (गांठ)

दुनिया के प्रारम्भ और ब्रहाण्ड के खाली आकाश में (जो बुध का आकार है) सबसे पहले अन्धेरा (शनि का साम्राज्य) मानकर इसमें रोशनी (सूरज की किरणों की चमक) का प्रवेश ख्याल किया गया। इस रोशनी (सूरज) और अन्धेरे शनि दोनों के साथ साथ हवा जो दोनों तो जहानों के मालिक बृहस्पत की राजधानी है चल रही है। यानि हवा अंधेरे में भी होती है और रोशनी में भी हुआ करती है मसलन शीशे का बक्स हो तो उसके अन्दर खाली जगह में भी हवा होगी और उस बक्स के बाहर भी हवा महसूस होगी। गोया बुध का शीशा अन्धेरे और रोशनी दोनों को ही अन्दर से बाहर और बाहर से अन्दर जाहिर होने की इजाजत देगा। मगर वह (बुध या शीशा) हवा को बाहर से अन्दर या अन्दर से बाहर जाने न देगा। यही चक्र में डाले रखने की दुश्मनी बृहस्पति को बुध से होगी या बुध के आकाश की खाली जगह में किस्मत को स्पष्ट करने वाला ग्रह ग्रह चाली बच्चा बुध की मदद से सूरज और शनि को जुदा जुदा रहने या इकट्ठे ही दम मारने की ताकत बख्श देगा। गोया बुध का शीशा ही बृहस्पति के दोनों जहानों में गांठ लगा देगा और यह गांठ ही ग्रह गिरह है। जिससे आकाश सब ही के लिए इकट्ठा गांठा हुआ मैदान है। या यूं कहा कि अक्ल (बुध) सब तरफ गांठे लगा रही है संक्षेपतः पृथक-पृथक वस्तुओं के इकट्ठा बांध देने वाली चीज की ताकत या बच्चा की किस्मत की उलझन पैदा करने वाली चीज गिरह कहलाती है। संक्षिप्तः उंगलियों और हथेली के परस्पर मिलाने वाली गांठ हथेली की अपनी हर एक गांठ या बच्चे की अपने माता के पेट के सफर की 9 मंजिलों की हर एक गांठ को ग्रह के नाम से याद करते हैं। गोया कुदरत की ताकत का असल नाम गांठ या ग्रह है जिससे कि कारण से सामुद्रिक विद्या में भी हर बुर्ज की बुनियाद उंगलियों जड़ और हथेली की गांठ पर ही मानी गई है।

ग्रह तादाद में 9 है और वह कुंडली के 12 खानों में घूम जाने की ताकत के मालिक माने गए हैं इंसान की तरह उनमें भी परस्पर मित्र दुश्मनी ऊंच या नीच हालत और उतम या मन्दा असर देने की शक्ति मानी गई है- हर एक ग्रह अपना भला या बुध असर खास-खास अवधियों पर दिया करता है।

No A Mars Positive मंगल नेक Mars Negative मंगल बद

B ये आवश्यक नहीं कि हर एक ग्रह अपने हाशिया की लकीरों से बने हाथ पर रेशों से भी वही मुराद होगी। उदाहरण चारों तरफ की लकीरों से मिल कर मंगल बना अगर यही शक्ल बारीक-बारीक हाथ के बाकी रेशों से जुदा हो जावे तो भी मंगल नेक होगा।

अंक	नाम ग्रह	फारसी में	अंग्रेजी में	ग्रहों का रंग	बनावटी ग्रह	निशान ग्रह
	बृहस्पत	मुश्तरी	Jupiter	पीला	सूरज शुक्र परस्पर खाली हवाई	
	सूरज	शमस	Sun	सुर्ख तांबा खाकी	बुध शुक्र परस्पर	
	चन्द्र	कमर	Moon Luna	सफेद दूध	सूरज बृहस्पत मुश्तरका	
	शुक्र	जोहरा	Venus	सफेद दही	राहू केतु परस्पर	
	मंगल नेक मंगल बद	मरीख	Mars	खूनी लाल	सूरज बुध परस्पर = मंगल नेक सूरज शनि परस्पर = मंगल बद	
	बुध	आतरु	Marcury	हरा	बृहस्पत राहू = परस्पर	
	शनिच्चर	जोहल	Saturn	काला	शुक्र बृहस्पत परस्पर = केतु स्वभाव बुध मंगल = राहू स्वभाव	
	राहू	रास	Rahu	नीला	मंगल शनि परस्पर ऊंच अवस्था सूरज शनि परस्पर नीच अवस्था	
	केतु	जनुब	Ketu	चितकबरा काला सफेद	शुक्र शनि परस्पर ऊंच हालत चन्द्र शनि नीच हालात	

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

i ग्रहों के विस्तार पूर्वक दिए हुए बयानों में देखने से विदित होगा कि ब्रह्माण्ड की भिन्न-भिन्न वस्तुओं को विशेष विशेष भागों में निश्चि करके हर एक भाग का नाम हमेशा के लिए एक ही निश्चित कर दिया है और उन तमाम चीजों को लिखने पढ़ने में बार-बार दोहराने की ब उनके लिए निश्चित किया हुआ एक नाम का जिक्र कर देते है उदाहरणतः स्त्री गाय लक्ष्मी आदर्श के लिए केवल एक शब्द शुक्र निश्चित है तो ज कहीं भी शुक्र का जिक्र होगा तो स्त्री गाय लक्ष्मी, मिट्टी आदि-आदि से अभिप्राय होगा।

ii राशियों की तरह ग्रहों के लिए कोई पक्का अंक निश्चित नहीं है मगर उनकी भिन्न लिखित विशेष प्रकार अवश्य निश्चित है

गुरु रवि और मंगल तीनों — नर ग्रह भी कहलाते है
शनि राहु और केतु तीनों — पापी ग्रह कहे जाते है
शुक्र लक्ष्मी चन्द्र माता — दोनों स्त्री होते है
बुध मुखन्नस चक्र सभी का — जिससे सभी में घूमते है
नेकी बदी दो मंगल भाई — शहद जहर दो मिलते है
बदलालव गर मारे दुनिया — नेक दान को गिनते है
राहु और केतु सिर्फ दोनों को — पाप के नाम से याद करते

है जब शनिच्चर को राहु या केतु किसी तरह से भी आ मिलते है तो शनिच्चर पापी होगा।
और वैसे भी राहु केतु शनिच्चर तीनों का इकट्ठा नाम पापी है

कुंडली में ग्रहों के पक्के घर:

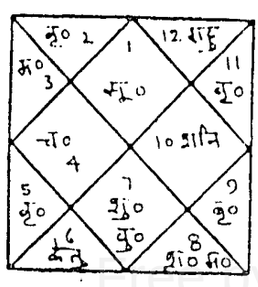

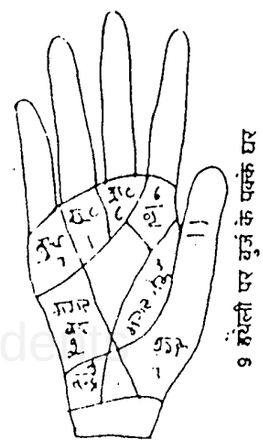

9 हथेली पर बुर्ज के पक्के घर

Free by Astrostudy

हथेली पर ग्रहों के पक्के घर बुर्ज

हथेली पर ऊपर को उठी हुई जगह
का नाम बुर्ज • कहलाता है
और हर एक बुर्ज की जगह
हूबहू वही है जो कि इस चित्र
में हर ग्रह की दिखाई गई है
इस तरह बुर्ज संख्या में
7 तो भिन्न भिन्न है बाकी दो ग्रहों की
पक्की जगह या बुर्ज दूसरों ग्रहों के साथ ही मुकर्रर है

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

राहू और केतु को हथेली पर कोई पक्की जगह अलहदा तौर पर नहीं दी गई। लहरों के मालिक है एक ने इन्सान को सिर से पकड़ा और दूसरे ने पांव से तो खुद बखुद उनको जगह मिल गई। और वह बुध (के साथ केतु जो नेकी का मालिक है खाना नः 6 पाताल में) और बृहस्पत के साथ राहु जो बदी का हाकिम है खाना नः 12 आसमान में के साथ तमाम आकाश ब्रह्माण्ड जो बृहस्पत बुध दोनों मिले जुले का परिणाम है में हो बैठे और दुनिया और इस इल्म में पाप के नाम से मशहूर हुए।

पक्का ग्रह	दिन में	सप्ताह में
बृहस्पत	पहला भाग	वीरवार, गुरुवार
सूरज	दूसरा भाग	रविवार इतवार
चन्द्र	चांदनी रात	सोमवार
शुक्र	काली रात	शुक्रवार
मंगल नेक	पक्की दुपहर	मंगलवार
मंगल बद		
बुध नेक	चार बजे शाम	बुधवार
बुध बद		
शनिच्चर	काली तमाम सारी रात अन्धेरा दिन	शनिवार
राहू	राहू पक्की शाम	वीरवार की शाम
केतु नेक	सुबह सादक	इतवार की सुबह
केतु बद		

(1) अगर एक दिन औसतन 12 घण्टे पहले का अरसा हो तो केतु दिन चढ़ने से दो घण्टे पहले का
तो बृहस्पत दिन निकलने के बाद आठ बजे तक का अरसा
सूरज आठ बजे से दस बजे तक का अरसा
चन्द्र दस से ग्यारह बजे तक का अरसा
शुक्र दस बजे से तीन बजे तक का अरसा
मंगल दिन के ग्यारह बजे से एक बजे तक
बुध चार बजे से छः बजे तक
शनिच्चर दिन छुपने के बाद जब एक भी सितारा निकल पड़े
राहू दिन छुप गया मगर सितारे अभी नहीं निकले

ग्रहों की आपसी मित्रता और शत्रुता

अन्तांक	नाम ग्रह	उसके बराबर का ग्रह	उसका दोस्त ग्रह	दुश्मनी
1.	बृहस्पत	राहू केतु शनि	सूर्य मंगल चन्द्र	शुक्र बुध
2.	सूरज	बुध जो सूरज के साथ चुप होगा	बृहस्पत मंगल चन्द्र	शुक्र शनि राहू राहू से ग्रहण केतु से मध्यम
3.	चन्द्र	शुक्र शनि मंगल बृहस्पत	सूरज बुध	केतु से ग्रहण राहू से मध्यम
4.	शुक्र	मंगल बृहस्पत	शनि बुध केतु	सूरज चन्द्र राहू
5.	मंगल	शुक्र शनि राहू मंगल के साथ चुप होगा	सूरज चन्द्र बृहस्पत	बुध केतु
6.	बुध	शनि मंगल केतु बृहस्पत	सूरज शुक्र राहू	चन्द्र
7.	शनि	केतु बृहस्पत	बुध शुक्र राहू	सूरज चन्द्र मंगल
8.	राहू	बृहस्पत चन्द्र इसके साथ मध्यम होगा	बुध शनि केतु	सूरज शुक्र मंगल
9	केतु	बृहस्पत शनि बुध सूरज इसके साथ मध्यम होगा	शुक्र राहू	चन्द्र मंगल

चन्द्र शुक्र बराबर है मगर चन्द्र दुश्मनी करता है शनिच्चर से, चन्द्र और बुध दोस्त है मगर चन्द्र दुश्मनी करता है बुध से, राहु के साथ साथ बृहस्पत चुप होगा मगर कम न होगा मगर खाना नः 2 में राहु या बृहस्पत हों तो राहु बृहस्पत के अधीन होगा, बुध गो बृहस्पत का दुश्मन है चन्द्र गो बुध का दुश्मन है

मगर खाना नः 2, 4 में बैठा हुआ बुध या चन्द्र खा बुध बृहस्पत या चन्द्र बुध मुहब्बत, दुश्मनी की बजाए पूरी मदद करेगा आर्थिक सहायता के लिए

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

जिस्म व ग्रह का सम्बन्ध

दुश्मन पार्टी

शनिव्यर का दुश्मन सूरज का शुक्र का बृहस्पत का बुध का चन्द्र का केतु का मंगल बद का दुश्मन है राहु और

मित्र मण्डली

सूरज का दोस्त चन्द्र का बृहस्पत का मंगल नेक का राहु का बुध का शनि का शुक्र का दोस्त है केतु इसलिए गोया अर्थात् ग्रहों में उपरोक्त शत्रु मण्डली के ग्रह क्रमानुसार एक दूसरे के शत्रु है जिनका पथ प्रदर्शक राहु केतु परस्पर शत्रु मंडली का है यानि रहा तो सिर का पथ प्रर्दशक और केतु पांव चक्कर का स्वामी है

मानव शरीर में

जिगर = (मंगल) दिल (चन्द्र) धड़ (केतु) के परामर्शदाता है-

दिमाग व जिह्वा (बुध) देखना भालना (शनि) सिर (राहु) परामर्श दाता है।

सिर (राहु) धड़ केतु दोनों को मिलाने वाली गर्दन के सांस का मालिक बृहस्पत है। लिहाजा बृहस्पत (एक अकेले मानवीय शरीर की दशा में कुल मानव समस्त संसार की दशा में) यानि लोक और परलोक (गैबी दुनिया समस्त ग्रहों की पारस्पारिक शक्ति) का मालिक है केवल इसी गुण पर यह ग्रह किसी से शत्रुता नहीं करता।

ग्रहों की अवधियां

क्रमांक	नाम ग्रह	कितने दिन	आम साल	उम्र के साल	महादशा	आमदोरा के साल	असर का वक्त	असर की रफ्तार
1.	बृहस्पत	32	16	75	16	6	मध्य	शेर बब्र
2.	सूरज	22	22	100	6	2	शुरू	रथ
3.	चन्द्र	24	24	85	10	1	आखिर पर	घोड़ा
4.	शुक्र	50	25	85	20	3	मध्य में	बैल
5.	मंगल नेक	24	13	28	3	2	शुरू	चीता
	मंगल बद	32	15	90	4	4	शुरू	हिरण
6.	बुध	68	24	80	17	2	हमेशा बराबर	मेंढा
7.	शनि	72	36	90	19	6		मछली
8.	राहू	40	42	90	12	6	आखिर पर	हाथी
9.	केतू	43	48	80	7	3		कुत्ता ,सूअर
		264 / 367			120	35		

1. हर ग्रह अपनी अवधि के आधे या चौथाई भाग अवधि में भी अपनी प्रभाव प्रकट कर दिया करता है।
2. राहु की 42 तो केतु की 48 मगर दोनों की मिली जुली अवधि 45 होगी।
3. ग्रहण के समय (सूरज राहू मिले जुले)= सूरज ग्रहण

चन्द्र केतु राहु परस्पर = चन्द्र ग्रहण

4. शनि के 10, 19, 27 वें साल प्रायः नेक असर देगा और मैदानी इलाका में मृग को हिरण,पहाड़ी इलाका में चीतल को मृग योनले है मगर ग्रह घाली अवस्था में हिरण या मामूली या बारह सिंहा को मंगल बद कुत्ते और चीता (दरिन्दा इन्सान को फाड़ देने वाला)

और

18 पित्रा 27 (माल मकान पशु) पर मन्दा असर देगा 36 साल से 39 साल उम्र में साधारण असर देगा

5. जैसे कि टेवे के अनुसार उस वक्त हो, किस्मत उदय के लिए बुध 23 मंगल 30 साला उम्र में वाकी हर ग्रह अपनी-अपनी अवधि पर असर

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

देंगे।

एक साल की अवधि को तीन पर विभक्त करके हर टुकड़ा चार मास का होगा। उसके दरम्यानी राह का असर मिल रहा होगा उदाहरणतया वृहस्पत वर्षफल के अनसर अगर खाना नः 5 में आया हो तो उस साल के पहले चार महीनों में खाना नः 5 पर केतु का असर जैसा कि वह (केतु) उस वक्त भी जब वर्षफल हो दूसरे चार माह में खुद वृहस्पति का अपना असर जैसा कि वह वर्ष हो और आखिरी चार माह में सूरज का असर जैसा कि (सूरज) वर्ष फल के अनुसार मिलता होगा इसी तरह ही हर एक ग्रह में उसके सामने दिए हुए दरम्यानी ग्रहों का असर मिला होगा।

मध्याविधि ग्रह (दरम्यानी)

पक्का घर	शुरू	मध्य	अन्त में
वृहस्पत	केतु	वृहस्पत	सूरज
सूरज	सूरज	चन्द्र	मंगल
चन्द्र	वृहस्पत	सूरज	चन्द्र
शुक्र	मंगल	शुक्र	बुध
मंगल	मंगल	शनि	शुक्र
बुध	चन्द्र	मंगल	वृहस्पत
शनि	राहु	बुध	शनि
राहु	मंगल	केतु	राहु
केतु	शनि	राहु	केतु

ग्रह की उम्र का असर:

सब कोई ग्रह हर तरह से कायम, यानि अपने वजूद में खुद अपनी ही सम्पूर्ण शक्ति का चाहे उंच हाल चाहे नीच हालत चाहे घर का मालिक हो और किसी दूसरे का उस पर या उसमें कोई असर न मिल रहा हो तो वह अपनी कुल उम्र तक असर देता रहेगा या उसकी उम्र होगी वृहस्पत 16 सूरज 22 साल चन्द्र 24 साल वगैरा

2. कुल ग्रहों की 120 साला जोड़ से अपना अपना हिस्सा

3. ग्रह के असर का आम अरसा अपनी हालत से बाहर जब कोई ग्रह ऊपर की शर्त (ग्रह की उम्र का असर) दोस्तों से या दुश्मनों के बर्ताव में हो जावे तो उसके लिए वृहस्पत 6 साल सूरज 2 साल और चन्द्र 1 साल वगैरा लेंगे।

4. अपनी अवधि के शुरू दरम्यान या आखिर पर हर राहु असर करता है इसलिए हर ग्रह के साथ दरम्यानी ग्रह का असर (जैसे कि दरम्यानी ग्रहों की सूचि में ही दिया है) शामिल होगा

Free Vedastrostudents

	किस ग्रह के साथ हो तो	उम्र होगी
वृहस्पत	किसी भी ग्रह के साथ हो	16
सूरज	किसी भी ग्रह के साथ	22
	सिवाय राहु के साथ	0
	सिवाय केतु के साथ	11
चन्द्र	किसी भी ग्रह के साथ	24
	सिवाय वृहस्पत शुक्र बुध राहु	12
	मगर शनिच्चर के साथ	8
शुक्र	किसी भी ग्रह के साथ	25
	सिवाय वृहस्पत के साथ	60 व 1 है दौलत
	सिवाय सूरज के साथ	34
	सिवाय मंगल नेक के साथ	8
मंगल नेक	किसी भी ग्रह के साथ	13
मंगल बद	किसी भी ग्रह के साथ	15

	किस ग्रह के साथ हो तो	उम्र होगी कितने साल
बुध	किसी भी ग्रह के साथ	34
	सिवाय सूरज या मंगल	17
शनि	किसी भी ग्रह के साथ	36
	सिवाय वृहस्पत के साथ	18 बाप की उम्र
	सिवाय वृहस्पत के साथ	27 धन दौलत
	सिवाय सूरज के साथ	28
	सिवाय मंगल या शुक्र के साथ	12
	सिवाय बुध के साथ	48
राहु	किसी भी ग्रह के साथ	42
	सिवाय मंगल नेक के साथ	0
	सिवाय केतु के साथ	45
केतु	किसी भी ग्रह के साथ	48
	सिवाय वृहस्पत के साथ	40
	सिवाय शनिच्चर सूरज या मंगल नेक	24

रियामती चालीस दिन

मन्दे ग्रहों का असर उनके निश्चित समय से पहले आ सकता है और न ही भले ग्रहों की सहायता दिए हुए वक्त के बाद तक रह सकती है। अगर हो सकता है तो केवल यह कि एक ग्रह का असर खत्म और दूसरे के शुरू के दरम्यान 40 दिन बाद तक उसका असर बुरा हो सकता है और शुरू होने वाले प्रायः नेक और मददगार ग्रह का अपनी अवधि से 40 दिन पहले ही असर होना माना है। इकट्ठे असर के केवल 40 दिन ही होंगे। मगर दोनों के ग्रहों के भिन्न-भिन्न चालीस चालीस दिन न होंगे। यह रियामती दिन कहलाते हैं। इस असूल पर बच्चे के जन्म से लेकर 40 दिन का छिल्ला और मर जाने के बाद 40 दिन का मातम या चालीसा मनाया जाता है।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

2. चूंकि गिनती के लम्बे हिसाब को इस विद्या में उड़ाने के लिए 28 नक्षत्र और 12 राशि को बाद में छोड़ ही दिया जाता है इसलिए दोनों की जमा जोड़ (28+12) 40 दिन कम से कम या ज्यादा से ज्यादा 43 दिन तक नियमानुसार उपाय का असर पूरा होगा जिसकी निशानी वक्त से पहले ही नेक ग्रह का असर हो जाने के वक्त दोस्त ग्रह की चीजों की बुदस्ती निशानियां और बुरे ग्रह की अवधि 40 दिन बाद तक रहने वाली हालत में पापी ग्रहों की निशानियां हुआ करती है मिसाल के तौर पर किसी का वर्ष 31 खत्म हो रहा है अगला साल एक अप्रैल से शुरू होगा। यह साल जो गुजर रहा है निहायत मन्दा था अगले साल में ग्रह साल की बुनियाद पर उसका जमाना आने की उम्मीद हो रही है। इन्सान किस ख्याल में है और मालिक का फैसला क्या नहीं क्या होगा। गर्जे कि देखने से मालूम हुआ कि उसका चन्द्र नम्बर दो में आ जाएगा या बृहस्पत नं: 4 में हो बैठेगा जो आमतौर नेक असर ही दिया करते है इसी तरह की राहु नं: 8 या नं: 11 और केतु नं: 8 या नं: 2 में आ कर मन्दा असर दिया करते है अब असर मौजूदा साल में मन्दे ग्रह चल रहे थे तो चलता हुआ मन्दा साल असर 31 मार्च के बाद तक ही चलता है तो पापी ग्रहों (राहु केतु शनि) की निशानियां मसलन हादसा या नाहक बदनामियां (बजरिए राहु) रास्ता, या मुसाफरी में नुकसान केतु के सम्बन्धित वस्तुओं की मुसीबतियां (केतु द्वारा) मशीनरी मकान (शनि) के मन्दे असर होने लग जायेंगे और वह मार्च के महीने में ही मन्दी निशानियां देंगे तो समझ लेंगे कि आने वाला साल 31 मार्च 40 दिन बाद तक वही मन्दा असर देगा जो कि पहले चल रहा था इसके विपरीत चन्द्र अच्छा बृहस्पत भला हो जाने का सबूत उनके सम्बन्धित मित्र और सहायक ग्रहों की वस्तुओं से स्पष्ट होने लग जाएगा। यानि चन्द्र के मित्र ग्रह उदाहरणतया सूरज बृहस्पत मंगल की सम्बन्धित वस्तुएं (हर ग्रह की जुदा जुदा चीजें) अलहदा सूचि में लिखी है) जरिए जाहिर होने लगें तो समझ लेंगे कि आने वाला साल का अच्छा असर 40 दिन पहले ही होने लग जाएगा। वह कब ? 31 मार्च के बाद दूसरा साल शुरू होना है उस तारीख से पहले 40 दिन यानि पूरा महीना तो मार्च का और 9 दिन और भी पहले फरवरी में गोया 20 फरवरी से - शुरू करके चन्द्र या बृहस्पत के ग्रहों के दोस्त ग्रहों की सम्बन्धित वस्तुएं अपना नेक असर देने लग जावे तो समझ लेंगे कि अगला साल अपना अच्छा असर जरूर देगा और चालीस दिन पहले ही यह और उपाय हो जाएगा कई दफा उपाय करने के दौरान 40 दिन की आधी या चौथाई अवधि में आधा या चौथाई असर मालूम होने लग जाया करता है जो आवश्यक नहीं कि आधा या चौथाई हिस्सा ही असर होवे। पूरा-पूरा असर भी हो जाना माना है।

समस्त ग्रह शक्ति अनुसार:-

सूरज चन्द्र शुक्र बृहस्पत मंगल बुध शनि राहु केतु क्रमशः परस्पर मुकाबला की ताकत में एक दूसरे से कम है।

टकराव या बरताव और शक्ति का पैमाना:-

जब दौरा या तख्त का स्वामी ग्रह न कोई और दूसरा ग्रह आपस में टकराव पर हो जावें (टकराव दुश्मनी की हालत में होता है मिलाप या बरताव दोस्ती की हालात के) तो सूरज 9/9 चन्द्र 8/9 शुक्र 7/9 बृहस्पत 6/9 मंगल 5/9 बुध 4/9 शनि 3/4 राहु 2/9 केतु 1/9 ताकत का होगा। दौरा के वक्त ग्रहों के आपसी टकराव से उनके पारस्पारिक असर में कमी बेशी होने के इलावा किसी ग्रह के उपाय के लिए दूसरे ग्रह का उपाय करते वक्त भी यह ताकत का पैमाना मददगार होगा।

ग्रह की दूसरी अवस्था

यानि इस्तालात वगैरा ग्रह फल

ग्रह फल व राशि फल

जब कोई ग्रह अपनी निश्चित राशि (यानि वो राशि जिसके घर का मालिक वह माना जाता है) या ऊंच नीच फल के लिए बनाई हुई राशि या अपने पक्के घर की बजाए किसी और गैर राशि में जा बैठे या किसी दूसरे ग्रह का साथ साथी ग्रह जड़ अदली बदली करने वाला वगैरा) बन जावे तो वह ग्रह ऐसी हालत में राशिफल या शक्की हालत का ग्रह होगा जिसके बुरे असर से बचने के लिए शक का फायदा उठाया जा सकता है। इसके विपरीत ऊपर कही हुई हालत के उल्ट हाल पर जबकि वह न ऊंच नीच न घर का और न ही पक्के घर का साबित हो तो वह ग्रह "ग्रहफल" या पक्की हालत ग्रह होगा जिसका असर हमेशा के लिए निश्चित हो चुका है। और उसके बुरे असर को तबदील करने की कोशिश करना बेमानी बल्कि इन्सानी ताकत से बाहर होगा। सिर्फ खास खास परमात्मा तक पहुंच वाली और कुछ एक विशेष हस्तियां ही रेख में मेख (रेखा में लेखा) सूरज मेख राशि खाना नः 1 में रख सकती है। मगर वह भी आखिर तबादला ही होगा यानि एक जानदार या दुनियावी चीज या ताकत को उसकी हस्ती से मिलकर इसके बदले में दूसरा जानवर दुनियावी चीज या ताकत पैदा कर देगी (बाबर हमांयू के किस्से) मगर दूसरा अंक, फिर भी पैदा न होगा सिवाय उस वक्त के जबकि ऐसी हस्तियां खुद अपनी ताकत या अपना ही आप तबाह कर लेती है और बदले में किसी दूसरे तक नौबत नहीं आने देती यह हालत भी उनकी खुदाई शरीक होने की होगी कोई न कोई तबादला दिया ही गया ग्रह फल फिर भी न बदला ग्रह फल को अगर राजा कहे तो राशिफल उसका साथी वजीर होगा।

ग्रहफल की मन्दी हालत के वक्त कौन सी चीज बतौर राशिफल मददगार हो सकती है (ग्रह के उपाय के हाल में देखें)

35 साला चक्कर

35 साल के बाद सब ग्रह अपना चक्कर पूरा कर जाते है और जो ग्रह पहले चक्कर में बुरा असर करते है वह अपने दूसरे चक्कर यानि 35 साल के बाद दूसरी चाल में बुरा असर न देंगे। यह शर्त नहीं कि भला असर जरूर दें। ग्रहों की 35 साला अवधि 35 साला चक्कर कहलाती है। ग्रहों का 35 साला चक्कर और इन्सान की उम्र का 35 साला चक्कर दो जुदा-जुदा बाते है। मान लिया एक शख्स के जन्म दिन से ही बृहस्पत का दौरा शुरू हुआ बाकी ग्रह एक के बाद दूसरे बृहस्पत 6 साल, सूरज 2 साल, चन्द्र 1 साल, शुक्र 3 साल, मंगल 6 साल, बुध 2

बृ॰ = 6	सू॰ = 2	च॰ = 1	शु॰ = 3	म॰ = 6	बु॰ = 2	श॰ = 6	रा॰ = 6	के॰ = 3	जो॰ = 35

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

शनि 6 साल, राहु 6 साल, और केतु 3 साल, कुल 35 साल का दौरा। तमाम ग्रहों ने उसकी 35 साला उम्र तक ही पूरा कर दिया। लेकिन हो सकता है उसका पहला ग्रह बृहस्पत के बजाए शनि शुरू होवे और जन्म दिन की बजाए 7 वें साल से शुरू हो। अब तमाम ग्रह तो 35 साल में ही दौरा पूरा कर लेंगे जब आखिरी ग्रह का आखिरी दिन होगा उस वक्त इन्सान की उम्र 35 साला ग्रहों का दौर जमा 6 साल, जब अभी शनिच्चर या उम्र का पहला ग्रह अभी शुरू भी न हुआ था यानि कुल उम्र 41 साल हो चुकी होगी। जो 35 साला के हिसाब से इन्सान की उम्र दूसरा 35 साला दौरा होगा अब जिस दिन से ग्रहों का दूसरा दौरा शुरू हुआ यानि जिस दिन जन्म दिन से शुरू होने वाला ग्रह दूसरी दफा शुरू हुआ उसी दिन से जिन ग्रहों ने पहले बुरा असर दिया था वह अब दूसरी चाल में बुरा असर न देंगे। यह जरूरी नहीं कि वह बुरा फल देने वाला ग्रह अच्छा फल ही देवे मगर वह बुरा फल न देगा और अमूमन अच्छा फल ही हुआ करता है।

2. ऐसे 35 साला चक्कर एक प्राणी की तमाम 120 साला औसत उम्र में ज्यादा से ज्यादा 3 दफा आ सकते हैं।

3. अगर दाएं तरफ हाथ की रेखाओं दिमागी खानों या कुंडली के पहले घरों के ग्रहों का असर उम्र के पहले हिस्सा शुरू की तरफ से चलकर में हो गया तो बाएं तरफ का असर बाद में होगा

4. 35 साला चक्कर के सबब बाप बेटे की उम्र का बाहमी ताल्लुक 70 साल में माना जाता है।

5. इस 35 साला चक्कर का पूरा-पूरा इस्तेमाल वर्षफल के हाल में दर्ज है।

6. 35 साला चक्कर में हर ग्रह की अवधियों में दरम्यानी ग्रहों की मियाद-

दौरा होवे	बृहस्पत का 6 साल	सूरज 2 साल	चन्द्र 1	शुक्र 3	मंगल 6	बुध 2	शनि 6	राहु 6	केतु 3
शुरू	केतु 2 साल	मंगल 8 माह	बृहस्पत 4 माह	मंगल 1 साल	मंगल 2 साल	चन्द्र 8 माह	राहु 2 साल	मंगल 2 साल	शनि 1 साल
दरम्यानी	बृहस्पत 2 साल	सूरज 8 माह	सूरज 4 माह	शुक्र 1 साल	शनि 2 साल	मंगल 8 माह	बुध 2 साल	केतु 2 साल	राहु 1 साल
आखिरी	सूरज 2 साल	चन्द्र 8 माह	चन्द्र 4 माह	बुध 1 साल	शुक्र 2 साल	बृहस्पत 8 माह	शनि 2 साल	राहु 2 साल	केतु 1 साल

जन्म दिन का ग्रह और जन्म वक्त का ग्रह

Free by AstroGuide.in

1. जिस दिन जन्म हो उस दिन का सम्बन्धित ग्रह जन्म दिन का ग्रह होगा

जिस वक्त पैदायश हो उस वक्त का सम्बन्धित ग्रह जन्म वक्त का ग्रह होगा।

सप्ताह के दिनों की तरह ग्रहों के नाम इतवार (सूरज) सोमवार (चन्द्र) मंगल बुध वीरवार (बृहस्पत शुक्र और शनिच्चर) सात ही है हर एक शाम के वक्त को आठवां राहु और हर सुबह के तड़के को 9वां केतु होगा अंग्रेजी हिसाबमें रात के 12 बजे के बाद दूसरा दिन शुरू होता है मगर सामूहिक विद्या में सूरज निकलने से नया दिन शुरू होता है यानि रात के गुजरे हुए दिन का हिस्सा लेकर नए सूरज से दूसरा दिन गिनेंगे।

एक दिन में ग्रह का वक्त

सूरज निकलने के बाद दिन का पहला हिस्सा बृहस्पत का वक्त कहलाता है दिन के पहले हिस्से के बाद मगर पक्की दोपहर के से पहले सूर्य का वक्त होगा। तमाम चाँदनी रात को चन्द्र का वक्त कहेंगे। अन्धेरा पक्ष तथा चाँदनी पक्ष की दरम्यानी या अमावस्य की रात शुक्र का समाँ होगा। पूरी दोपहर का वक्त दिन का एन दरम्यान मंगल का समय लेंगे। दोपहर के बाद मगर पूरी शाम से पहले का वक्त बुध का होगा काली रात या घनघोर बादलों का दिन शनि का होगा। पूरी पक्की शाम मगर रात से पहले का वक्त राहु का वक्त लेंगे। सुबह सादक (प्रभातः) मगर सूर्य निकलने से पहले का वक्त केतु का होगा

जन्म दिन और जन्म वक्त का ताल्लुक

पैदा होने के दिन व वक्त के हिसाब से

(अ) जन्म दिन के ग्रह को गिनते है किस्मत को ग्रह को जगाने वाले ग्रह का पक्का घर या राशि फल यानि जिस का उपाय हो सके।

(आ) जन्म वक्त के ग्रह को गिनते है किस्मत का ग्रह और ग्रह फल का यानि जिस का दिया हुआ फल (अच्छा या बुरा) अटल हो और कोई उपाय न हो सके।

उदाहरणः-

पैदाईश हो सोमवार, ववक्त पक्की शाम की तो दिन का मुतल्लका ग्रह होगा चन्द्र और वक्त का मुतल्लका ग्रह लेंगे राहु। अब जन्म वक्त के ग्रह को जन्म दिन के मुतल्लका ग्रह के पक्के घर का गिनेंगे यानि अब राहु (जो जन्म वक्त का ग्रह है) चन्द्र (जो जन्म दिन का ग्रह है) के पक्के घर (फेरिस्त के अनुसार) खाना नः 4 में होगा क्योंकि जन्म दिन का मुतल्लका ग्रह राशि फल या काबिल उपाय होना माना है इसलिए नः 4 का राहु

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

खाना नः 4 की मुल्लका [illegible] रिश्तेदार या कारोबार मुल्लका नः 4 पर कभी बुरा असर न देगा अगर कभी बुरा असर दे तो ग्रह के नाम से नेक असर हो जायेगा।

खाना नं	ग्रह	दिन
9	बृहस्पत	वीरवार
1	सूर्य	रविवार
4	चन्द्र	सोमवार
7	शुक्र	शुक्रवार
3	मंगल	मंगलवार
7	बुध	बुधवार
10	शनि	शनिवार
12	राहु	वीरवार की शाम पक्की
6	केतु	एतवार की सुबह (प्रभात का समय)

पापी ग्रह

हमेशा राहु केतु शनि तीनों ही मुराद हो

पाप

सिर्फ राहु और केतु दोनों इकट्ठे पाप के नाम से याद किए जाते है।

[1] खाना नः 2 धर्म स्थान खाना नः 5 आइन्दा औलाद खाना नः 8 मार्ग स्थान खाना नः 11 धर्मदरबार निश्चित होने की वजह से जुदा रहेंगे। मंगल के दो हिस्से: नेक व बद सूरज बुध मुश्तरका नेक मंगल-केतु स्वभाव सूरज शनिव्वर (बद भाग:) राहु स्वभाव होगा।

बुध सूरज शनिव्वर (रात दिन इकट्ठे है) खाली बुध होते है। अगर बुरी खासियत या ऐसे घेरा में हो जहां सूरज या शनि दोनों में से कोई भी मन्दा हो तो न सिर्फ सूरज 22 साला उम्र और शनि 36 साला उम्र तक नीच होगा। बल्कि मंगल भी मंगल बद और राहु मन्दा होगा। ख्याल राहु और मंगल किसी भी घर मे और कैसे ही ऊंचे, उम्दा और नेक हालत, में बैठे हो।

अन्धे ग्रह:

अगर खाना नः 10 बाहम दुश्मन या नीच हैसियत वगैरा रद्दी ग्रहों दो खराब हो रहा हो तो वह टेवा। अन्धे ग्रहों का होगा और तमाम ही ग्रह मय शनि खुद खा ऊंच घरों के हों अन्धे की तरह अपना फल देंगे। विस्तार से देखिए शनि खाना नः 10 में

नहोराता के ग्रह:ऐसे ग्रह जो ऐसे इन्सान की तरह हो जो दिन को देख सके मगर रात का अन्धा हो मसलन चौथे सूरज और सातवें शनिव्वर हो तो ऐसा टेवा नहोराता वाला या आधा अन्धा होता है।

धर्मी ग्रह:

पापी ग्रह शनि, राहु, केतु तीनों ही है राहु और केतु खाना नः 4 में पाप छोड़ने का चन्द्र के सामने हलफ उठाते है शनि खाना नः 11 में बृहस्पत ग्रह को हाजिर नजर समझ कर राहु केतु के पैदा किए गए पापों का फैसला करता है। यानि राहु केतु अगर खाना नः 4 या चन्द्र के साथ किसी भी घर में हो और (2) शनि खाना नः 11 या बृहस्पत के साथ किसी भी घर में हो तो ऐसे टेवे में पाप या पापी दोनों का ही बुरा असर न होगा। और सब ग्रह धर्मी होंगे। यह शर्त नहीं कि पापी ग्रह ऐसी हालत में बैठे हुए उत्तम फल जरूर ही देंगे। प्रतिज्ञा केवल इतनी है कि पाप नहीं करेंगे।

साथी ग्रह

जब कोई ग्रह आपस में अपनी अपनी निश्चित राशि ऊंच नीच घर की राशि या अपने पक्के घरों में अदल-बदल कर बैठ जावे या अपनी जड़ो के लिहाज से इकट्ठे हो जावे तो साथी ग्रह कहलाते हों मसलन सूरज का पक्का घर खाना नः 5 है और शनि का पक्का घर खाना नः 10 है अब शनि हो खाना नः 5 में और सूरज हो खाना नः 10 में तो दोनों बाहम साथी ग्रह होंगे।

2. कुंडली के हर खाना की मुश्तरका लकीर या दीवार, हमसाया, ग्रहों सिर्फ (दोस्तों) को मिलाया करती है मगर दुश्मनों को अलग-अलग रखती है यानि कुंडली के बैठे हुए दो ग्रह जो बाहम दोस्त हो और कुंडली के वह घर जिन में वह बैठे है सिर्फ एक लकीर से जुदा-जुदा हो रहे हों तो इकट्ठे या साथी ग्रह कहलाते है जो एक दूसरे का बुरा न करेंगे। मगर दो दुश्मन गिने हुए ग्रहों की हालत में दो खानों की दरम्यानी लकीर (खत) उन ग्रहों को जुदा-जुदा ही रखेगी।

क्याफा- एक रेखा के साथ-साथ ही दूसरी रेखा उदाहरण या एक ही किस्म की रेखा होगी बशर्ते की दोनों ही एक बुर्ज पर वाक्फा दो ऐसी शाखों से मुराद होगी की कोई अपना भाई बहिन साथ चल रहा होगा या वहदूसरी शाख अपने ही खून का ताल्लुक दार बनाएगी।

(बिलमुकाबल)

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

आमने सामने के ग्रह-

जो ग्रह आपस में तो दोस्त हो मगर ऐसी हालत में बैठे हो कि खुद तो वह दोस्त ग्रह ही रहे मगर उनमें से हर एक या किसी एक की जड़ पर आगे दुश्मन ग्रह हो जाए चाहे वह खुद दोस्त ही है लफ्ज (शब्द) बिलमुकाबिल से याद होंगे क्योंकि अब उन में किसी न किसी तरह से दुश्मनी स्वभाव हो गया है।

दुश्मनों से मारे हुए मन्दा असर होने के वक्त ग्रहों की कुरबानी के बकरे

(यानि असली ग्रह की अपनी जगह की बजाए किसी दूसरे ग्रह की हालत खराब हो जाए या वह अपनी जगह दूसरे ग्रह को मरवा जावे)

शनिः-

दुश्मन ग्रहों से बचाव के लिए शनि अपनी जान बचाने के लिए अपने पास राहू-केतु ऐसे ग्रह एजेंट बनाए हुये है की वह शनि की जगह किसी दूसरे की कुरबानी दिला देते है। राहू-केतु इकट्ठे बनावटी शुक्र माना है इस लिए जब शनि को जब सूर्य का टकराव तंग करे तो वह खुद अपनी जगह शुक्र औरत को मरवा देता है या सूर्य शनि के झगड़े में औरत मारी जावेगी या ऐसे कुंडली वाले की औरत पर इन दोनों ग्रहों की दुश्मनी का असर जा पहुंचेगा। न सूर्य खुद बरबाद होगा न हि शनि क्योंकि वह आपस में बाप बेटा है।
उदाहरण सूर्य खाना नः 6 शनि खाना नः 12 हो तो औरत पर औरत मरती जावे

बुधः-

बुध ने भी अपने बचाव के लिए शुक्र के साथ दोस्ती रखी है वह भी अपने दोस्त शुक्र को ही अपनी बलाएं डाला करता है मंगल मंगल बद (भाई) अपनी बला केतु लड़का पर डालता है शेर कुत्ते को मरवा देगा मसलन सूरज खाना नः 6 मंगल नः 10 लड़के पर लड़का (केतु) मरता जावे। भाई भतीजे को मरवाए।

शुक्रः-

शुक्र (औरत) शैतान स्वभाव खुद अपनी बला चन्द्र यानि कुंडली वाले की माता पर जा धकेलेगी मसलन चन्द्र शुक्र आमने सामने तो माता अंधी हो जावे

Free by AstroStudents

बृहस्पतिः-

बृहस्पत ने अपना साथी केतु को ही कुर्बानी के लिए रखा है। मसलन बृहस्पत खाना नः 5 और केतु किसी और घर में अब अगर बृहस्पत की महादशा आ जावे तो केतु के खाना नः 6 का फल रद्दी होगा। औलाद का नही जो खाना नः 5 की चीज है। मामू को केतु की महादशा 7 साल तकलीफ होगी।

सूरजः

अपनी मुसीबत के वक्त केतु पर नजला (अपना मन्दा असर) डाल देगा

चन्द्रः

अपने दोस्त ग्रहों (बृहस्पत सूरज मंगल) पर अपनी बला टाल देगा।

राहू केतुः

खुद ही अपना आप निभाएंगे और अपनी सम्बन्धित वस्तुएं कारोबार या रिश्तेदार मुतल्लका राहु या केतु पर मुसीबत का भूचाल पैदा करेंगे।

धर्म स्थान

धर्म पालन, पूजा पाठ या इष्ट सिद्धि के लिए पवित्र जगह से मुराद होगी मुसलमान के लिए मस्जिद, सिख के लिए गुरुद्वारा, ईसाइयों के लिए गिरिजा घर और हिन्दुओं के लिए धर्म मन्दिर गर्ज कि जिस धर्म और जगह में किसी प्राणी का विश्वास हो वही जगह उसके लिए धर्मस्थान होगा खा वहां रहने वाला कोई भी क्यों न हो। जिस किसी का कोई धर्मस्थान न हो या जिसे किसी किसी दुनियावी जगह पर विश्वास न हो उसके लिए चलता हुआ दरिया नदी या शनिच्चर का चौरास्ता + धर्मस्थान का काम देगा।

नोटः सूरज मंगल और बृहस्पत इन्साफ के मालिक होते हुए दूसरों की तो मदद करेंगे और एक का दूसरे पर नाजायज ज्यादती करते नहीं देख सकते मगर जब खुद ही मुसीबत में हो तो गरीब केतु का मरवाते है।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

स्थित (कायम) ग्रह

जो ग्रह हर तरह से दुरुस्त और अपना असर वगैर किसी दुश्मन ग्रह के असर की मिलावट के साफ साफ और कायम रख रहा हो यानि राशि की माल्कीयत स्वामित्व ऊंच नीच या पक्के घर या दृष्टि वगैरा किसी तरह से भी उसमें दुश्मन का असर न मिल रहा हो और नहीं वह किसी दुश्मन ग्रह का साथी ग्रह बन रहा हो तो वह कायम ग्रह कहलाएगा।

घर का ग्रह

ग्रह की अपनी निश्चित राशि सूची के अनुसार दोस्ती, दुश्मनी बराबर का उस ग्रह का घर कहलाएगा मसलन खाना नं: 3 वा 6 बुध के लिए

घर का ग्रह

ग्रह का पक्का घर सूची के अनुसार दोस्ती दुश्मनी बराबर/ऊंचनीच घर का, उस ग्रह का घर कहलाएगा। मसलन खाना नं: 7 बुध के लिए।

दोस्त ग्रह दुश्मन ग्रह

सूची के अनुसार दोस्ती दुश्मनी बराबर का - किसी ग्रह के सामने खाना न दोस्त दुश्मन में लिखे हुए ग्रह उस ग्रह के दोस्त ग्रह कहलाएंगे। किसी दूसरे की मार्फत दोस्त न लेंगे। दोस्ती दुश्मनी इस हिसाब में लेंगे जो सम्बन्धित सूचि में अंकित है।
ऊंच नीच ग्रह नीच ग्रह बराबर के ग्रह हर ग्रह की ऊंचनीच घर का पक्के घर दोस्त दुश्मन बराबर का वगैरा भी सूचि जद्दी जगह दर्ज है।
ऊंच ग्रह से मुराद होगी पूरी सौ फीसदी मुकम्मल असर की ताकत का मालिक
नीच ग्रह से मुराद होगी पूरी सौ फीसदी मनफी या नामुकम्मल असर की ताकत
बराबर का ग्रह से मुराद होगी मसावी एक जैसा असर

बालिग नाबालिग ग्रह

क्याफा: बच्चे की रेखा का 12 साला उम्र तक कोई एतबार नहीं 18 साल से रेखा में भी कोई तबदीली नहीं मानते नाबालिग बच्चा (12 साल उम्र तक) की रेखा का जो एतबार नहीं मगर मुमकिन है कि ऐसी उम्र तक वह पक्के अगर की रेखा होवे या तब्दील हो जाने वाली हो। बच्चा की बन्द मुट्ठी या कुंडली के खाना नं: 1, 7, 4, 10 खाली हो या उन खानों में सिर्फ पापी ग्रह या बुध अकेला (पापी ग्रह और बुध दोनों में से सिर्फ एक) हो तो वह नाबालिग ग्रहों की होगी। ऐसे प्राणी की किस्मत का हाल 12 साला उम्रतक शक्की होगा। ऐसी हालत में नाबालिग ग्रहों वाले बच्चे की किस्मत का मालिक ग्रह निम्नलिखित होगा। उम्र के हिसाब से असर का खाना नं: देखने जावें। अगर कुंडली में कोई खाना नं: खाली ही आजावे तो इस खाली खाना नं: के मालिक का ग्रह (घर का मालिक) जिस खाने में हो वह खाना लेवें। बालिग ग्रहों की हालत में आम दिए हुए असूल कारआमद होंगे।

नाबालिग ग्रहों के होने वाले बच्चों की उम्र के साल	किस्मत के ताल्लुक के किस खाना के ग्रहों का असर मददगार होगा।	घर का मालिक ग्रह
1	7	शुक्र
2	4	चन्द्र
3	9	बृहस्पत
4	10	शनि
5	11	शनि
6	3	बुध
7	2	शुक्र
8	5	सूर्य
9	6	बुध केतु
10	12	बृहस्पत
11	1	मंगल
12	8	मंगल

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

फरमान: 7

बुत से रूह ने अपना घर क्यों पूछ लिया ?

राशि मालिक है लेख की होती — या कि होता ग्रह मण्डल हो
मिल के कटेगी उमर[1] दोनों की — कुंडली जन्म खा चन्द्र हो
घर पहले की उमर सौ साला — 3,नब्बे दस बारह है
पच्चासी उमर चौथे की लेते — अस्सी होती घर छै की है
पौना सदी या साल पिच्चतहर — गुरु मन्दिर घर दो की है
घर और ग्रह की उमर जुदा पर — गुजरती दो की इकट्ठी है
गुरु जगत की उमर पिच्चतहर — बुध केतु अस्सी होती है
शुक्र चन्द्र की उमर पच्चासी — शनि मंगल राहू 90 है
स्त्री ग्रह जब मिले नरों में — उमर 96 होती है
समय मिले जब बुध पापी का — वही पच्चासी होती है
रवि मालिक है पूरी सद्दी का — उमर लम्बी होती है
ग्रहण[2] लो जब रवि चन्द्र को — साल तीन कम होती है

[1] इस जगह लिखी उमर में ग्रह राशि की अपनी-अपनी है मगर इन उमरों से इन्सानी उमर की कोई हदबन्दी नहीं होती फर्ज किया खाना नं: 1 जिस की उमर है 100 साल वहां खाना नं: 1 बैठा हो बृहस्पत जिसकी उम्र 75 साल गिनी है तो मतलब यह होगा कि ऐसे टेवे वाले का बृहस्पत ज्यादा से ज्यादा अपनी बृहस्पत की उम्र तक यानि 75 साल तक अपना बुरा या भला असर जैसा कि टेवे के मुताबिक हो दे सकता है इसी तरह ही खाना नं: 6 में जिसकी उम्र 80 साल है अगर सूरज बैठा हो जिसकी उम्र 100 साल मानते हैं मुराद यह होगी कि ऐसे टेवे वाले को सूरज नं: 6 का ग्रह ज्यादा से ज्यादा 80 साल तक अपना असर जैसा भी टेवे के मुताबिक से दे सकता है।

[2] जिस वक्त जन्म कुंडली में चन्द्र के साथ केतु हो चन्द्र ग्रहण और जब सूरज के साथ राहू हो तो सूरज ग्रहण बनेंगे।

ग्रह व राशि का परस्पर (बाहमी) सम्बन्ध

Free by AstroStudents

मेष वृश्चिक मालिक मंगल — तुला वृष शुक्र की है
कन्या मिथुन का बुध है मालिक — कुंभ मकर दो शनि की है
गुरु मालिक है धन मीन का — कर्क चन्द्र की होती है
सिंह अकेला गरजे दुनिया — राशि जो सूरज की है
केतु बैठे गर कन्या राशि — राहू निवासी भी न का है
पाप चढ़ा आसमान के ऊपर — जड़ जिसकी पाताल में है

शि नः	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
न राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
लिक ग्रह	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूरज केतु	बुध	शुक्र	मंगल	बृहस्पत	शनि	शनि	राहू बृहस्पत
य ग्रह	सूरज	चन्द्र	राहू	बृहस्पत	- राहू	बुध	शनि	-	केतु	मंगल	-	शुक्र केतु
य ग्रह	शनि	-	केतु	मंगल	-	शुक्र केतु	सूरज	चन्द्र	राहू	बृहस्पत	-	बुध राहू
का घर	सूरज	बृहस्पति	मंगल	चन्द्र	बृहस्पत बुध	केतु शनि	शुक्र	मंगल	बृहस्पत	शनि	बृहस्पत	राहू
स्मत	मंगल	चन्द्र	बुध	चन्द्र	सूरज	राहू	शुक्र	चन्द्र	बृहस्पत	शनि	बृहस्पत	केतु
फल का	मंगल	राहू केतु	शनि	चन्द्र	शुक्र सूरज	बुध केतु	शुक्र	मंगल	बृहस्पत	शनि	शुक्र शनि	राहू
फल का	राहू	-	शनि दौलत के लिए	मंगल शुक्र केतु	-	नरग्रह शनि	सूरज शुक्र राहू	-	शनि बुध	केतु	-	बुध

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

ऊंच ग्रह से मुराद पूरी ताकत आखिरी और उतम दर्जे की हदवन्दी नेक अर्थों में
नीच ग्रह से मुराद सबसे नीच या मन्दी हालत आखिरी कम दर्जे की हदवन्दी मन्दे अर्थों में
घर का मालिक ग्रह से मुराद औसत दर्जा नेक अर्थों में

हर राशि के सातवें नम्बर पर वही ग्रह ऊंच होगा जो पहले उसी नम्बर नीच था मसलन खाना नं: 1 में अगर सूरज ऊंच है तो वह नं: 7 में नीच होगा

खाना नं: 8 में चन्द्र नीच है वह नं: 2 में उच्च होगा। नं: 1 में शनि नीच है वह नं: 7 में उच्च होगा नं: सात ग्रह और बारह राशि या 12x7= 84 की योनि का जी जाल या रात दिन में 84 लाख सांस का मसाला अजीब पैदा हो चुका है हर सातवें के बाद फिर वही ग्रह असर करते है या हर आठवें साल वही हालत हो जाती है

इसी असूल पर ग्रह व राशि का असर मुश्तरका लेते है। खाना नं: 2 का नीच नहीं होता। और यह खाना राहू केतु (सिर्फ दोनों) की मुश्तरका बैठक है। जिसके लिए राशिफल का ग्रह नहीं है। यानि इस खाना के ग्रह अपना अपना या अपने अपने कर्मों (पुण्य पाप का बजाते खुद अपनीजान से मुतल्लका) के करने कराने के खुद अख्तयारी है। खाना नं: 5 का ऊंच नीच दोनों ही हिस्से नहीं होते। इस घर में बैठने वाला ग्रह अपनी खुद जाती कमाई की किस्मत का ग्रह होता है। खाना नं: 11 का ऊंच नीच दोनों ही हिस्से नहीं होने यह आम दुनिया मुतल्लका, से किस्मत का लेन देन है खाना नं: 8 का ऊंच नीच नही होता कोई मौत को मार नहीं सकता सिवाय चन्द्र के जो दिल की शन्ति व गैबी (रहस्यात्मक) मदद है (दुनिया को माता गिना तो इन्सान का बच्चा माता के पेट में बच्चे की तरह रहने वाला) गौर से देखे तो मालूम होगा कि राहू खाना नं: 12 में घर का मालिक ग्रह भी लिखा है। और खाना नं: 12 में यह नीच भी लिखा है। इस तरह केतु खाना नं: 6 में घर का मालिक ग्रह ही लिखा है और उसको नीच फल की राशि भी खाना नं: 6 ही लिखी है मतलब यह है कि :–

राहू:

जब बृहस्पत के घर खाना नं: सिर्फ 12 में हो तो नीच होगा। हालांकि बृहस्पत और राहू बाहम दुश्मन नहीं बराबर के है। राहू के वक्त (जब राहू बृहस्पत इकट्ठे हों) बृहस्पत चुप ही हो जाता है। राहू को आसमान (खाना नं: 12) नीला रंग माना है। बृहस्पत की हवा को जब आसमान का साथ मिले या ज्यूं-ज्यूं हवा आसमान की तरफ ऊंची होती जावेगी हल्की होती जावेगी और दुनियादारों के सांस लेने के ताल्लुक में निकम्मी होती जावेगी लेकिन जब वही बृहस्पत की हवा नीचे की तरफ होती(आएगी तो केतु का साथ होना जाएगा (खाना नं: 6) तो हर एक की मददगार होगी इसी असूल पर राहू के साथ बृहस्पत हो तो न सिर्फ बृहस्पत का असर खुश्बाप बन्द हालत का होगा बल्कि राहू का अपना असर बुरा होगा या दम (सांस बृहस्पत की ताकत) घुटने पर या दम घुट जाने पर नतीजा मन्दा होगा इसके खिलाफ अगर राहू को बुध के खाली आकाश में खुला ही मैदान मिलता जावे मगर वह खाना नं: 12 के माने हुए आसमान की बजाए बुध के खाली आकाश के हीहोतो राहू का फल जरूर ही अच्छा बल्कि उम्दा असर देगा या राहू को बुध का घर खाना नं: 6 या बुध का साथ मिले तो नेक असर देगा। राहू है भी बुध का दोस्त इसलिए दोनों के बाहम साथ से दोनों का फल उम्दा होगा। या दोनों ही खाना नं: 6 में ऊंच फल के और दोनों में सेहर-एक या दोनों ही खाना नं: 12 में मन्दे फल के होंगे। राहू को फर्जी तौर पर अगर आसमान माने तो यह फर्जी दीवार बृहस्पत को साफ कह देगी कि ऐ बृहस्पत तू मेरे ऊपर गैबी जगह (दूसरी दुनिया) या मेरे नीचे इस इन्सानी दुनिया में से एक तरफ ही रखे। गोया राहू ने बृहस्पत को दो जहां में से सिर्फ एक ही तरफ कर दिया या राहू के साथ पर दो जहानों में से सिर्फ एक ही तरफ के जहां तक मालिक रह जाता है या दोनों में एक तरफ के लिए वह बृहस्पत चुप ही गिना जाता है इसी तरह ही

Free by Astrostudents

केतु:

जब बुध के साथ हो या बुध के घर खाना नं: 6 में हो तो नीच होगा लेकिन जब केतु का बृहस्पत का साथ मिल जावे तो केतु ऊंच फल का होगा। केतु बृहस्पत बराबर का फल देंगे। राहू केतु चूंकि अपने से सातवें देखने के अगूल के ग्रह है इसलिए राहू अगर 3, 6 बुध के घर में ऊंच हुआ तो केतु वहां (खाना नं: 3, 6 में) नीच होगा यही हाल केतु यानि अगर केतु खाना नं: 9, 12 (बृहस्पत के घर) में ऊंच होगा तो राहू इन घरों में नीच होगा। गर्ज कि राहू केतु का अपने दायरा में चलाने वाला बुध है।

जब बुध होवे राहू के घर खाना नं: 12 में तो नीच होगा क्योंकि खाना नं: 12 उसके दुश्मन ग्रह बृहस्पत का है और जब बुध हो केतु के घर खाना नं: 6 में ऊंच होगा। क्योंकि यह राशि नं: 6 बुध की अपनी ही राशि है और बुध व केतु दोनों ही आपस में बराबर के ग्रह है और दोनों ही शुक्र के दोस्त होते है बुध पर कोई असर न होगा। मगर केतु शुक्र दोनों ही खाना नं: 6 में नीच होंगे बृहस्पत के साथ बृहस्पत के घरों में राहू हाथी का तेंदुआ होगा। या बृहस्पत के साथ बृहस्पत के घरों में राहू बुरा फल होगा और नीच होगा बुध के साथ या घरों में केतु कुत्ते का सिर पागल या दीवाना नीच फल का होगा क्योंकि राहू केतु मुश्तरका के लिए खाना नं: 6 और 12 भी बुध बृहस्पत के है। जहां कि उन्हें जगह मिली यानि

(I) खाना नं: 6 (बहैसियत मालिक ग्रह) में बुध केतु मुश्तरका माने गये है। जब नं: 6 खाली हो और बुध नं: 3 में बैठा हो तो खाली खाना नं: 6 का मालिक ग्रह केतु लेगे लेकिन जब बुध खाना नं: 3में न हो तो खाली खाना नं: 6 के लिए बुध और केतु में से वह बहैसियत मालिक ग्रह लेगें। जोकि टेवे में दोनों से उम्दा हो।

(II) खाना नं: 12 (बहैसियत मालिक ग्रह) में बृहस्पत राहू मुश्तरका माने गये है जब नं: 12 खाली हो और बृहस्पत नं: 9 में बैठा तो खाली खाना नं: 12 का मालिक ग्रह राहू लेगें। लेकिन जब बृहस्पत नं: 9 में न हो तो खाली नं: 12 के लिए बृहस्पत राहू मुश्तरका (दोनों का मसनूई ग्रह बुध खाली आकाश) लेगें।

(III) केतु खाना नं: 6 में और खाना नं: 12 में दोनों ही नीच भी है और घर के मालिक भी उनकी अच्छी हालत के लिए जब राहू को बुध की

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

मदद और केतु को बृहस्पत की मदद मिले यानि राहू खाना नः 3, 6 (बुध के घर में) और केतु हो खाना नः 9, 12 में (जो बृहस्पत के घर है) तो दोनों ही ऊंच हालत वरना नीच हालत के होंगे यानि राहू नः 9, 12 में नीच होगा संक्षिप्तः–

1. जैसा बुध टेवे में हो वैसा ही राहू नः 12 का असर होगा
2. जैस बृहस्पत टेवे में हो वैसा ही केतु नः 6 का असर होगा

ग्रह बुर्ज व राशियों की गलतफहमी :-

राशि से मुराद मकान की तह जमीन और उसके मालिक ग्रह से अभिप्राय उस पर बने मकान की इमारत होगी। क्याफाः बुर्जों को पक्के तौर पर जगह या जगह मुकर्ररक कर दिया गया है इसी तरह से ही राशियों के लिए हमेशा के लिए वास्ते जगह निश्चित कर दी गई है ग्रहों के रहने की जगह को बुर्ज या ग्रह का घर कहेंगे और राशि के लिए निश्चित की हुई उंगली की पोरी को राशि का घर कहेंगे। हर बुर्ज या ग्रह का निशान मुकर्रर है इस तरह से हर राशि का निशान भी निश्चित है ग्रह के निशान से ग्रह का जिस्म ताकत या असर लेंगे मगर उसके लिए जो जगह हथेली पर हमेशा के लिए निश्चित है वह स्थान उस ग्रह का घर होगा। या ग्रह खुद किसी दूसरे ग्रह के घर जा बैठा हो इसी तरह से ही राशियों का हाल है यानि राशि की जो जगह उंगली की पोरी पर मुकर्रर है वह राशि का घर है और जो निशान राशि का है वह राशि का दिया हुआ मिसाल के तौर पर अगर सूरज का सितारा है चन्द्र के बुर्ज पर स्थित हो तो चन्द्र के घर में सूरज आया हुआ गिना जाएगा। या अगर यही सूरज का सितारा शुक्र के बुर्ज पर हो तो सूरज का शुक्र के घर मेहमान कहेंगे अब सूरज और शुक्र का या सूरज और चन्द्र का आपस से ताल्लुक है वही असर होगा इस तरह से हर राशि के निशान का असर लेंगे यह जरूरी नहीं है कि हर एक राशि का निशान उंगली की उसी पोरी पर स्थित है जहां कि उस राशि का मुकाम मुकर्रर है लेकिन अगर निशान अपनी मुकर्रर जगह पर ही होवे तो वह आदमी उस राशि का होगा अगर कोई भी निशान राशि का न पाया जावे तो हैरानी की बात नहीं ग्रहों या बुर्जों से पता चल जाएगा।

फरमान नः 8

बारह पक्के घर

प्राचीन ज्योतिष के अनुसार जन्म कुंडली बन चुकी उसमें दिए हुए तमाम के तमाम अंक मिटा दिए मगर ग्रह जहां-जहां उसमें लिखे थे वहां वहां ही लिख हुए रहने दिए और फिर लगन के घर को अंक नः 1 दिया गया और 12 ही घरों में तरतीब वार 1 से लेकर 12 तक अंक लिख दिए अब वह घर लगन को 1 गिन कर फलादेश देखने के लिए हमेशा के लिए ही मुकर्रर नः के होंगे। और हम गिना में 12 पक्के घर फरमाए।

लगन का घर या कुंडली का पहला घर खाना नः 1

(शाह सलामत का तख्ते बादशाही या हजूर की कदमों मुबारक)

Free by Astrostudents

घर पहला है तख्त हजारी ग्रह फल राजा कुंडली का
ज्योतिष में इसे लग्न भी कहते झगड़ा जहां रहमाया का
ऊंच बैठे ग्रह उत्तम कितने दसती लिखा खा विधाता हो
खाली पड़ा घर सात जब टेवे शक्की असर कुल ग्रह का हो
लग्न बैठा ग्रह तख्त नशीनी राज शाही जब करता हो
आंख गिना घर आठ है उसकी ग्यारह से हर दम लड़ता हो
अकेला तख्त पर बहुत हो सातवे राजा वजीरी होती है
उल्ट मार जब टेवे बैठे जड़ सातवी की कटती है (1)
ऊंच नीच जा गिने घरों का वह नहीं 1,7 लड़ते है (2)
बाकी ग्रह सब झगड़ा करते उस से चन्द्र मन्ते है (3)

खाना नः 1 में सूरज ऊंच होगा शनि नीच होगा और मंगल घर का ग्रह होगा और खाना नः 7 में शनि ऊंच होगा सूरज नीच होगा और शुक्र घर का ग्रह होगा

मसलन खाना नः 1 में बृहस्पत चन्द्र बुध राहू (चार ग्रह) और खाना नः 7 में अकेला केतु हो तो 34 साला उम्र (बुध की अवधि) तक नर औलाद केतु नदारद या पैदा होकर मरती जावे और 48 साला उम्र केतु की अवधि तक एक ही लड़का कायम हो अगर 48 साला उम्र से दूसरा लड़का कायम हो जावे तो बुध लड़की बेघर बेइज्जती हया दीगर मन्दे नतीजों में बरबाद होगी टेवे वाला अगर चार और जानों (कुत्ता घोड़ा गाय तोता कोई भी चार जानवर) टेवे तो घर औलाद कायम होगी और औलाद पैदा होने के दिन से चन्द्र राहू बृहस्पत बुध मुश्तरका राज योग होंगे। वरना चन्द्र राहू बुध बृहस्पत के उम्दा असर की बजाए खाक की होंगे या हर तरह लानत नसीब होगी और जिस वक्त टेवे में असल मंगल के इलावा मसनूई मंगल नेक (सूरज बुध) या मसनूई मंगल बद (सूरज शनि) दोनों ही मौजूद हो तो नः 1 देखेगा नः 11 को.

(1) जब नः 11 खाली हो तो नः 1 का ग्रह अपना असर करने के ताल्लुक में मंदे या बुध की चाल पर होगा कि वह उस चाल टेवे में हो चलेगा इसी तरह ही जब नः 8 खाली हो तो नः 10 वाले ग्रह की आंखों को रोकने के लिए कोई रुकावट न होगी। और वह खुद ही अपनी आंखों से

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

देखभाल करता होगा।

जब खाना नः 1 में ज्यादा ग्रह हो तो खाना नः 1 का आधा शुक्र होगा जैसा कि इस वक्त वह टेवे (खाना नः 1 ही) में हो

2. तख्त पर बैठे हुए ग्रह चाली हुक्मरान राजा के अहद में उस के लिए खाना नः 1 (Lense) lense no. 8 (Focussing glass focussing glass और नः 11 (Regulator) होगा

हर एक ग्रह की अपनी हकूमत यानि खाना नः 1 में आने के वक्त दूसरे ग्रहों की उसके मुकाबला में ताकत का पैमाना खाना नः 1 को कुंडली का तख्त कहते है इसलिए नः 1 में बैठा हुआ ग्रह तख्त का मालिक या हुक्मरान राजा कहलाता है।

बृहस्पत के वक्त वही ग्रह किसी से दुश्मनी नहीं करता चन्द्र 1/2 शुक्र गुना शनि 3/4 केतु 5/6 होगा बृहस्पत खुद सूरज राहू के वक्त चुप होगा मगर बुरे ग्रहों के साथ अपना आधा समय यानि 8 साल हमेश नेक होगा दुश्मन का असर 8 साल के बाद हो सकेगा।

सूरज के वक्त यह ग्रह खुद कभी नीच न होगा शुक्र साथ हो तो शुक्र नीच होगा मगर दोनों के मिलाप से बुध पैदा होगा यानि फूल होंगे मगर फल न होगा केतु 1/2 बुध 1/2 शनिच्चर खुद अपने लिए बराए दौलत 2/3 और वालिद पिता के लिए 1/2 और जायदाद के लिए 1/3

चन्द्र के वक्त कोई दुश्मनी नहीं करता यह ग्रह खुद अपना नेक असर किसी के साथ होने पर घटा लेता है राहू 1/2 होगा

शुक्र के वक्त यह किसी को नीच नहीं करता दूसरे खा इसको नीच करते है। चन्द्र 1/2 शनि 1/3 शानि के वक्त चन्द्र 1/3 केतु 1/2 होगा मंगल नेक के वक्त शुक्र शनि मंगल बद तीनों ही 1/3 हर एक केतु व बुध दोनों 1/2 हर एक राहू के वक्तः सूरज शून्य चन्द्र 1/2 होगा केतु के वक्तः चन्द्र शून्य सूरज 1/2 होगा।

कुंडली का पक्का घर खाना नः 2 धर्मस्थान उम्र, बुढ़ापा।

घर चल कर जो आवे दूजे ग्रह किस्मत बन जाता है [1]
खाली पड़ा घर 10 जब टेवे सोया हुआ कहलाता है
बुनियाद समन्दर ग्रह नौ लेते पहाड़ ऊंचा घर दो का हो
चाल असर ग्रह दूजे बैठे जेर असर गुरु साया हो
हवा बारिश जो 9 से चलती टक्कर दूजे पर खाती हो [3]
आठ पड़ा घर जब तक खाली असर भला ही देती हो
शुरु उम्र में असर दूजे का घर 6वें पर पड़ता हो
जाती असर हो नेक जा अपना वक्त बुढ़ापे बढ़ता हो
बुनियाद मन्दिर घर चौथा गिनते आठ छठे से मिलता जो [2]
खाली होते गर दो मन्दिर टेवे असर रहानी उम्दा हो

[1] खाना नः 2 हमेशा वही ग्रहों या खाना नः 9 जो बतौर एक समन्दर गिना जाएगा कि बुनियाद होगा मगर खुद नः 2 की बुनियाद खाना नः 4 होगा

[2] जैसा भी बृहस्पत टेवे में हो वैसी ही हवा के झोंके साथ होंगे

[3] खाना नः 8 देखता है नः 2 को और खाना नः 2 देखता है खाना नः 6 को इस तरह पर खाना नः 2 में खाना नः 8 और नः 6 का बाहमी ताल्लुक हो जाता है खाना नः 8 खाली हो तो नः 2 उम्दा होगा। मगर जब खाना नः 2 खाली हो तो सब कुछ ही उम्दा होगा। बृहस्पत नः 2 और खाना नः 8 के खाली के वक्त पर बृहस्पत मन्दा ही होगा या बृहस्पत की हवा मन्दी आंधी लेगी जो हर तरह का नुकसान करेगी अगर नः 9 बरसाती मौनसून हवा के उठने का समन्दर हो तो खाना नः 2 उस बारिश से लदी हुई हवा से टकरा कर बरसा लेने वाला कोहसार (पहाड़ों का लम्बा सिलसिला) होगा

गुरु जहां दो मन्दिर कच्चा पावं बैठक खुद साथी हो
मरक घर से गरु भी हरता आठ दृष्टि खाली जो
ग्रह मुश्तरका बुरा नहीं करते - चन्द मुठी के खानों में
फल दो ग्यारह अपनो अपने धर्म मन्दिर गुरुद्वारा में
शान समन्दर घर नौवे का या फल उम्र हो पहली का
सफेद झण्डा झूल उम्र बुढ़ाप घर दो का
पाप की बैठक घर दो गुरु के गृहस्थी शुक्र भी बनता जो
लेख जगत का मरातक गिनते मौत जन्म जहान मिलता दो

इस घर में मंगल बद के मरनूई (बनावटी) ग्रह और पापी ग्रह खुद टेवे वाले पर मन्दा असर न देंगे बल्कि इस घर में बैठा हुआ राहू भी बृहस्पत के मातहत होगा।

सब ग्रह अपना तमाम फल जो उनमें से हर एक के लिए खाना नः 9 में लिखा हुआ है टेवे वाले की उम्र के आखिरी हिस्सा में देंगे। मरालन खाना नः 9 में शनिच्चर का फल 60 साल लिखा है जो टेवे वाले की उम्र के शुरु होने की तरफ से गिनकर 60 साल बुढ़ापे की तरफ होगा। लेकिन जब शनिच्चर खाना नः 2 में हो तो शनि का वही असर मौत के दिन की तरफ से पीछे जन्म दिन की तरफ को गिनकर 60 साल होगा। इस तरह ही सब ग्रह असर देंगे।

2. इस घर के ग्रह आखिरी उम्र बुढ़ापा में हमेशा नेक फल देंगे या वह किसी दूसरे अंगूठों की गिनती या चाल वगैरा से कितने ही मन्दे क्यों न

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

2. जैसा भी बृहस्पत टेवे में हो वैसी ही हवा के झोंके साथ होंगे

3. खाना नः 8 देखता है नः 2 को और खाना नः 2 देखता है खाना नः 6 को इस तरह पर खाना नः 2 में खाना नः 8 और नः 6 का बाहमी ताल्लुक हो जाता है खाना नः 8 खाली हो तो नः 2 उम्दा होगा। मगर जब खाना नः 2 खाली हो तो सब कुछ ही उम्दा होगा। बृहस्पत नः 2 और खाना नः 8 के खाली के वक्त पर बृहस्पत मन्दा ही होगा या बृहस्पत की हवा मन्दी आंधी लेगी जो हर तरह का नुकसान करेगी अगर नः 9 बरसाती मौनसून हवा के उठने का समन्दर हो तो खाना नः 2 उस बारिश से लदी हुई हवा से टकरा कर बरसा लेने वाला कोहसार (पहाड़ों का लम्बा सिलसिला) होगा

गुरु जहां दो मन्दिर कच्चा पाप बैठक खुद साथी हो
मारक घर से गुरु भी डरता आठ दृष्टि खाली जो
ग्रह मुश्तरका बुरा नहीं करते - बन्द मुठी के खानों में
फल दो ग्यारह अपनो अपने धर्म मन्दिर गुरुद्वारा में
शान समन्दर घर नींव का या फल उम्र हो पहली का
सफेद झण्डा कोहसार पे झूले उम्र बुढ़ाप घर दो का
पाप की बैठक घर दो गुरु के गृहस्थी शुक्र भी बनता जो
लेख जगत का मस्तक गिनते मौत जन्म जहान मिलता दो

इस घर में मंगल बद के मसनूई (बनावटी) ग्रह और पापी ग्रह खुद टेवे वाले पर मन्दा असर न देंगे बल्कि इस घर में बैठा हुआ राहू भी बृहस्पत के मातहत होगा।

सब ग्रह अपना तमाम फल जो उनमें से हर एक के लिए खाना नः 9 में लिखा हुआ है टेवे वाले की उम्र के आखिरी हिस्सा में देंगे। मसलन खाना नः 9 में शनिच्चर का फल 60 साल लिखा है जो टेवे वाले की उम्र के शुरू होने की तरफ से गिनकर 60 साल बुढ़ापे की तरफ होगा। लेकिन जब शनिच्चर खाना नः 2 में हो तो शनि का वही असर मौत के दिन की तरफ से पीछे जन्म दिन की तरफ को गिनकर 60 साल होगा। इस तरह ही सब ग्रह असर देंगे।

2. इस घर के ग्रह आखिरी उम्र बुढ़ापा में हमेशा नेक फल देंगे या वह किसी दूसरे असूलों की गिनती या चाल वगैरा से कितने ही मन्दे क्यों न हो। मंगल बद = सूरज शनि मुश्तरका 2 पापी = राहु केतु शनिच्चर,तीनों ही मुश्तरका के लिए एक नाम है खाना नः 1, 7, 4, 10

धर्म स्थान या पेशानी का दरवाजा (मस्तक)

दोनों भवों का केन्द्रीय बिन्दु (भाग) जो नाक का आखिरी हिस्सा या पेशानी पर तिलक लगाने की जगह खाना नः 2 की असली जगह है इस तिलक लगाने का निशान की जगह को छोड़कर माथे की बाकी जगह पेशानी कहलाएगी जिसका जिक्र खाना नः 11 में है जब खाना नः 2 हर तरह और हर तरफ (खाना नः 8 की दृष्टि वगैरा) से खाली हो तो खाना नः 2 को तिलक की जगह गिनते हैं इस खाना नः 2 को हवाई ख्याल की तमाम ताकतों में राहू केतु मुश्तरका की बैठक या मसनूई शुक्र की जगह मानते हैं खाना नः 8 का असर जाता है खाना नः 2 में और खाना नः 2 देखता है खाना नः 6 को इसलिए 2 का फैसला 2, 6, 8 को साथ मिला कर होगा दूसरे शब्दों में खाना नः 8 को अगर राहू केतु की शनिच्चर के साथ होने की बैठक माने तो उस बैठक या मौत के दीवर खानों का दरवाजा खाना नः 2 सिर्फ राहू केतु दोनों की बैठक मुश्तरका होगी। जिस में शनिच्चर की मौत का ताल्लुक न होगा। सिर्फ राहू केतु की अपनी नेकी बदी का मैदान गुरुद्वारा, मस्जिद, मंदिर होगा इस धर्मस्थान का दरवाजा दोनों भवों की ऐन दरम्यानी जगह होगा जिसका मालिक बृहस्पत है जो दोनों जहानों का मालिक है जिसके वस्ते की लम्बाई के दोनों सिरों पर सूरज और चन्द्र दिन रात गिनते है यानि दुनिया से बाहर खाना नः 8 और दुनिया का अन्दर खाना नः 11 के साथ बृहस्पत की दूसरीताकत खाना नः 5 भविष्य और खाना नः 9 भूत का दरम्यान वर्तमान काल खाना नः 1 (या बन्दी मुट्ठी के खाने 1, 7, 4, 10) होगा। थोड़े शब्दों में जिस तरह खाना नः 4 ने अपनी नेकी न छोड़ी थी उसी तरह ही खाना नः 2 ने कुल दुनिया से ताल्लुक न छोड़ अगर नाभि तमाम जिस्म का दरम्यान या और बन्दी मुट्ठी के खानों में खाना नः 4 बच्चे के साथ लाए हुए खजाने का भेद था तो चेहरे पर तिलक की जगह या दुनिया में बच्चा के लिए बाकी सब तरफ से मिलने मिलाने वाले खजाने का भेदी खाना नः 2 हुआ इन दो खानों यानि खाना नः 4 और खाना नः 2 का मुश्तरका असर किस्मत का करिश्मा हुआ जो ग्रह फल खाना नः 2 जो राशिफल खाना नः 4 दोनों का निचोड़ भी कहा जा सकता है। खाना नः 4 बढ़ाता है चन्द्र को खाना नः 2 बढ़ाता है बृहस्पत को दिनों मिले मिलाए (माता पिता) वाल्देन या अकेला बृहस्पत जो दोनों जहानों का मालिक है होगा जो बच्चे का मदद लेने के लिए खाना नः 5 में सूरज के साथ और खाना नः 11 में शनिच्चर के साथ जा मिलता है। बृहस्पत की इस लम्बाई को सबकी लम्बाई गिनते हैं या चेहरे की (खाना नः 6 में देखे) हो। या पेशानी की (विस्तार पूर्वक खाना नः 11 देखो) संक्षिप्त रूप से तिलक की खास जगह बृहस्पत का खाना नः 2 राह केतु की मुश्तरका बैठक की जगह (मसनूई शुक्र की राशि भी है) का दरवाजा है। खाना नः 2 में ग्रहों का असर भय खाना नः 8 के पेशानी पर तिलक लगाने की जगह △ या केतु का निशान ⌂ यानि खाना नः 2 में हर तरह से अकेला केतु हो तो शासक समृद्ध होगा।

अगूंठा

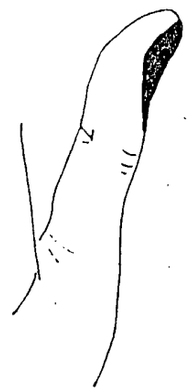

जिस तरह सिर के ढांचे का मालिक बुध और उसके अन्दर दिमागी खानों में हवाई ख्याल की लहरें पैदा करने की ताकत का मालिक राहू है इस तरह ही इन्सानी दिल का मालिक चन्द्र है। जिसके अन्दर लहरों का उछालने या गिराने की ताकत का प्रवर्तक ग्रह चाली पाप (राहु और केतु दोनों मुश्तरका) है इस पाप की बैठक खाना नः 2 (जिसमें शनि का ताल्लुक नहीं मानते) इंसानी अगूंठे पर मानी गई है

अगूंठा जिस कदर लम्बा होगा - कदर ही ज्यादा शख्सियत पर काबू पा लेने लायक होगा।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

अगूंठा जिस कदर मोटा होगा - उसी कदर ही ज्यादा निर्धन होगा
अगूंठा जिस कदर छोटा होगा - उसी कदर ही ज्यादा वहशी व हैवानी ताकत ज्यादा होगी, तंग हौसला जिद्दी होगा
अगूंठा अगर सीधा रहता हुआ मालूम हो, और अगूंठे की नाखुन वाली पोरी पीठ की तरफ झुकी रहे। — इसका धन दौलत दूसरों दुनियावी साथियों के काम बहुत लगे खुद नरम दिल होगा

पोरी का हिस्सा	उसकी हालत	उम्र का हिस्सा व तासीर व ताकत
नाखून वाली पोरी कुंडली का खाना नः 6 मन मर्जी केतु से मुतल्लका	जिस कदर हथेली की तरफ झुकती जावे उस कदर उसका ज्यादा धन दौलत दूसरों के काम लगे और वह खुद नरम दिल होगा उल्टे हालत में उल्टे नतीजा लेंगे	बचपन फैलना आध्यात्मिक शक्ति
दरम्यानी पोरी कुंडली का खाना नः 12 दलील मुन्तकः सोच विचार की ताकत राहू से मुतल्लका	जिस कदर ज्यादा लम्बी हो उसी कदर ही ज्यादा वादलील और होनहार प्राणी होगा	जवानी, शिकुड़ना, जिस्मानी ताकत
निचली पोरी कुंडली खाना नः 2 इश्क Love शुक्र से मुतल्लका	जिस कदर ज्यादा छोटी हो उसी कदर ही ज्यादा जादू मंतर की ख्वाहिश और जन मुरीदी में गर्क रहने वाला होगा	बुढ़ापा हन्यानी नफसानी ताकत

Free by Astrostudents

लगन से कुंडली का पक्का घर खाना नः 3 इस दुनिया से कूच के वक्त राहे रवानगी (बीमारी वगैरा)

इस घर का है जो रंग है खूनी — असर होता भी खूनी है
होता जभी ग्रह इस घर जुल्मी — देता असर व कष्टी है
पापी अगर हों उम्दा टेवे — कष्ट सभी ग्रह करता हो
तीन मन्दा पग 12 उसके — असर खाना नः 8 करता हो
ग्रह मन्दे घर तीसरे बैठे — बुरा मालिक नहीं करते हैं
खून दृष्टि जुल्म से अपने — जहर बाहर ही मरते हैं
उम्र पहली हो ग्यारह शक्की — ग्रह तीजे जब मन्दा हो
मौत रुकेगी आठ से उठती — बैठा तीजा खा कैसा हो
ग्रह जब तक कोई तीसरे बैठा — मौत टेवा न पाता हो
भेद गुरु से बेशक खुलता — फैसला बुध से होता हो
माया दौलत जो ग्यारह आती, — भाग तीसरे से जाती हो
तासीर मंगल हो टेवे जैसी, — हालत वही कर पाती हो

जब नः तीन में पापी बैठे हो और न 6 व 8 भी मन्दे हो रहे हो तो अगर मौत नहीं तो बहाना मौत जरूर खड़ा कर देंगे। लेकिन खाना नः 12 का ग्रह चाहे नः 3 वाले का दुश्मन ही हो, नः 3 को मदद देगा।

मंगल नः 12 केतु नः 3 तो मरुक रेखा वास्ते धन हालां कि मंगल केतु बाहम दुश्मन है इसी प्रकार ही बुध नः 12 शनि या बृहस्पति नः 3 हो तो अमृत कुण्ड हर तरह से बरकत का जमाना होगा इसी तरह नः 12 में शुक्र ग्रह इकट्ठे हो तो जाहिरा तौर पर 21 या 25 साला उम्र बैवा पन जाहिर होगा। लेकिन अगर उसी वक्त ही खाना नः 3 में शनि बैठा हो तो राहु का शुक्र वद कोई बुरा असर न होगा। क्योंकि शनि शुक्र को हर तरह मदद देगा। लेकिन जब नः 3 में मुश्तरका ग्रह हो तो 12 व 3 ग्रहों की (हरेक का अकेला-अकेला गिनकर) बाहमी दोस्ती दुश्मनी बहाल होगा-

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

लग्न से कुंडली का पक्का घर खाना नः 4 माता की गोद व पेट का जमाना

ग्रह घौथे के रात को जागे या जागे वह मुसीबत में
मदद कोई न जब कोई करता आ तारें वो बुढ़ापे में
ग्रह घौथे हो जो कोई बैठा, तासीर चन्द्र वह होता हो
असर मगर हो उस घर जाता, शनि जहां टेवे बैठा हो
खाली होते घर घौथा मन्दिर - आखिर उम्र तक उन्नति हो
चन्द्र का फल घर दे चन्द्र, बैठा चन्द्र खा नष्टी हो
पाप बैठा घर चन्द्र माता - बुध शनि दो उम्दा हो
आठ, तीजा, छ टेवे मन्दा, मौत बहाना घौथा हो

ग्रह मुकल्लका के कारोबार यावक्त रात फायदा मन्द होगे
मनिन्द नः 2 या चन्द्र खुन नः 2 जो की ऊंच उतम फल देता है
इस घर में शनिच्चर जहरीला सांप या मंगल जला हुआ बद हो सकता है।
गर राहू केतु धर्मात्मा ही रहेंगे या यू कहो की राहू और केतु सिर्फ इस घर बैठे हुए चुप होंगे मगर किसी भी दूसरी जगह मन्दे काम छोड़ने का दा नहीं करते। क्योंकि या तो उनके खून की ही बुनियाद है बल्की हो सकता है उन के चुप रहने से कई दफा फायदे की बजाए नुकसान हो _____ जैसा की दण्ड देने का अख्तियार का मालिक अगर शरारती को न डांटे तो अत्याचार और बढ़ जाता है।

तख्त पड़े जब घौथा टेवे, राहू मन्दा खुद होता हो
मुट्ठी चन्द्र आठ ग्यारह बैठे, अकेला घौथा न मन्दा हो
थाल समुन्दर ग्रह नः 9 नाभी, मुरदा कोई नहीं रखता हो
तीनों ग्रह नर शरण माता की पेट अन्दर कुल पलता हो

. चन्द्र का मुट्ठी (खाना नः 1, 7, 4, 10) से बाहर और खाना नः 4 खाली हो तो चन्द्र का सब ग्रहों माए खुद चन्द्र पर नेक असर होगा चाहे चन्द्र खुद रद्दी निकम्मा या मन्दा हो रहा हो
. खाना नः 4 में कोई भी अकेला ग्रह हो और चन्द्र उसी वक्त बन्द मुट्ठी खाना (1, 7, 4, 10) से बाहर कहीं भी खराब हो रहा हो मसलन खाना नः 8 में चन्द्र नीच या नः 11 से चन्द्र 0 निरपक्ष या मन्दा वह नः 4 वाला ग्रह नेक असर ही देगा चाहे वह चन्द्र का दोस्त हो या दुश्मन।
चाफा नः 1 हाथ की सब आखिरी जगह गैबी हालत दिल की अन्दरनी कल या रात का जमाना (चन्द्र का बुर्ज) बताती है।
: 1 खाना नः 4, 16, 28, 40, 52, 64, 76, 88, 100, 114
ाला उमर
: खाना नः 1, 7, 4, 10
: 3 मंगल बद या मंगलीक का कोई भी अकेला बैठा हुआ ग्रह
: 4 सूर्य मंगल बृहस्पत मित्र (चन्द्र का दोस्त सूर्य बुध) तो पेट में पालना करे शत्रु (लेकिन जब चन्द्र का दुश्मन राहू केतु) तो समुन्द्र मर्द को भी बाहर कर देगा
जब वह दुश्मनी करे यानि जब तक राहू केतू (सम्बन्धित वस्तुएं) जिन्दा होंगे नेक फल देंगे वर्ना खुद बरबाद हो जाएँगे।

लग्न से कुंडली का पक्का घर खाना नः 5 औलाद भविष्यतः का समय

गुरु टेवे में जब तक उम्दा औलाद दुःखी न होती हो
पांच पापी गुरु मन्दा टेवे बिजली चमक आ देती हो
शनि शुक्र या दो कोई उम्दा बिजली कड़कती मन्दी हो
चन्द्र भला तो चमक हो उम्दा असर हालत वो जल्दी हो
वजह चमक घर तीसरे होगी कर्क निशानी 11 हो
तीन खाली घर आठ से पड़ती उल्ट हालत पेड़ 8 पे वह
घर तीन चार या हो 9 मंदा बुरा असर 5 देता है
6, 10 खा दोस्त उसका शत्रु जहरीला होता हो
अपनी लिखा अहवाल आईन्दा गुरु शनि से चलता हो
केतु भला तो सब कुछ उम्दा राहू मन्दे सब उल्टा हो

1. नः 6, 10 की जहर से बचाव के लिए नः 5 के दुश्मन ग्रह की चीज पाताल (नः 6) या जद्दी बजुर्गी मकान (नः 10) में कायम करें। जब तक नः 8 मन्दा न हो लेकिन अगर नः 8 मन्दा हो तो नः 5 के दुश्मन ग्रह की चीज सिर्फ पाताल (नः 6) में तह जमीन के नीचे दबाने से मदद होगी। क्योंकि नः 10, 2 गुना रफ्तार से चला करता है। और जब नः 8 मन्दा हो नः 10 दुगुना मन्दा हो जाएगा। विस्तार के लिए पक्का घर नः 10 देखें।
2. फर्ज किया बृहस्पत नः 10 शुक्र नः 11 केतु नः 8 शनि राहू नः 5 औरत (शुक्र) को जुकाम (केतु) की बीमारी के बाद लड़के (केतु) पर मन्दा असर
उपायः
लड़के के वजन के बराबर 25 शुक्र 48 (केतु) दिन तक आटे की रोटियां कुत्तों को तकसीम करें।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

3. शनि या शुक्र या दोनों जब कभी मन्दे हो तो दोनों की हालत की मुताबिक फौरन मन्दा असर होगा। लेकिन मगर चन्द्र उस वक्त भला हो मन्दी हालत फौरन ही बदलकर उत्तम असर हो जाएगा। जन्म कुंडली के खाना नः 5 में अगर सूरज शुक्र हो तो जब शुक्र या पापी सूरज बृहस्पत नः 1 में आए अपनी सेहत के ताल्लुक में मन्दा वक्त होगा लेकिन अगर नः 5 में शुक्र बुध या कोई पापी हो तो सूरज या बृहस्पत के सु नः 1 में आने के वक्त सेहत के ताल्लुक में मन्दा जमाना होगा। बृहस्पत की वजह से पैदा शुदा (जब बृहस्पत नः 5 में हो) बीमारी नई औलाद पैदा हो चुकने के बाद खत्म होगी।

लग्न से कुंडली का पक्का घर खाना नः 6 दुनियावी जड़, पाताल की दुनिया ,रहम का खजान खुफिया मदद।

पाताल खाली घर जब तक रहता नेक असर फल देता हो
दूजे बैठे की पहली अवस्था असर छठे पर होता हो
उच्च मन्दी ग्रह खुद वहाँ होगा घर 6 वे आ बैठे जा
लाख उपाय कर न टलता यह फल लिखा जिसको हो
अकेला बैठे या से मुश्तरका बन्दी मुट्ठी के खानों में
9 ही ग्रह पाताल में बैठे देखा करे उन तरफों में
10, पाखंडे का दुश्मन जहरी हुक्म राहु का पाता हो
साथ मगर, 2, 8 दृष्टि फैसला ढ़का होता हो

खाना नः 6 खाली हो तो नः 2 और खाना नः 12 के ग्रह दोनों की तरफ के इसलिए खाना नः 2 में अच्छे ग्रह हो और 12 में भी उत्तम ग्रह बैठे हो तो नः 6 को जगा लेना मददगार होगा यानि देवे वाला अगर अपने बैठे हुए ग्रह की अपनी ग्रह वाली उच्च और खुद ग्रह

मुतल्लका की जाती अशिया का असर

सिवाय सूरज बृहस्पत और चन्द्र बाकी सब ग्रह इस घर में ग्रह फल के होंगे और बुध व केतु

इस घर (नः 6) या नः 8 में बैठे हुए ग्रह की मियाद तक मन्दे होंगे या नः 6 के ग्रह का असर बुध केतु या शुक्र बैठा होने वाले घर में भी जा सकता है। नः 6 में बैठा हुआ शनिच्चर उल्टा नः 2 को देखा करता है नः 6 में सूरज या चंद्र होने के वक्त मंगल नः 4 का मंगल अब मंगल बद न होगा। नः 6 में ऊंच माने हुए ग्रह (बुध,राहु) कभी मन्दे न होंगे और न ही वह बन्द मुट्ठी के घरों या नः 2 पर मन्दा असर देंगे।

क्याफा चेहरा:

चेहरे की चौड़ाई कुल चेहरे की लम्बाई का 2/3 अगर कुल के दो हिस्से करें। तो तीन हिस्सों से दो हिस्से नेक होती है यह चौड़ाई जिस कदर इस मिक्दार से घटे उसी कदर नेक असर ज्यादा बढ़े और मुबारिक होवे,चौड़ाई केतु की ताकत लम्बाई बृहस्पत की ताकत (सूरज शनिच्चर दोनों का मालिक गुरु) गोलाई बाहर को उभार, बुलन्दी, बुध की ताकत पस्ती गहराई नीचे अंदर को दुनिया राहु की ताकत उपर की ताकतों का घटना बढ़ना ग्रहों के दृष्टि दर्जे कीताकत के बढ़ने से मुराद होगी

चेहरे की चौड़ाई खाना नः 6 केतु से बजरिए दृष्टि या खाना नः 6 या नः 6 के ग्रह से जिस कदर बृहस्पत का साथ होवे उसी कदर चेहरा लम्बा होगा। जिस कदर कम असर या ताल्लुक बृहस्पत का खाना नः 6 से होवे उसी कदर चेहरा चौड़ा होगा। जिस कदर चेहरा की लम्बाई ज्यादा उसी कदर नेक असर ज्यादा होवे साथ लाई हुई जाती किस्मत का चौड़े चेहरे में बृहस्पत की बजाए राहु के साथ शनिच्चर की खुद गर्जाना ताकतें होगी लम्बा चेहरा बृहस्पत के साथ व ताल्लुक से केतु में शनिचर की हम दर्दाना ताकतें होगी। लम्बा चेहरा बृहस्पत के साथ वा ताल्लुक से केतु में शनिच्चर की हमदर्दाना ताकतें होंगे जहानत (अक्ल) कम होगी और जिस कदर चेहरा चौड़ाई से लम्बाई वाला होता जावे उसी कदर यह खुद गर्जाना ताकतें कम होती जावें और जहानत बढ़ेगी या लम्बे चेहरे वाला हमदर्द होता जाएगा। मर्द का चेहरा व मुंह दोनों ही लम्बे हो तो नेक वख्त होगा।

मर्द का चेहरा व मुंह दोनों ही चौड़े हो तो खुदगर्ज होगा। औरत का चेहरा लम्बा व मुंह लम्बा बदबख्त होगी औरत का चेहरा मुंह चौड़ा नेक नसीब होगी

पांव पर खास निशान

दाएं पांव के पव पर कनिष्ठका के नीचे बुध पर या शुक्र के बुर्ज या अगूंठे की जड़ पर अगर
(I) शंख, सदफ हो तो वही असर जो हाथ में होता
(II) चक्र हो तो आसूदा हाल, साहबे इकबाल होगा
(III) त्रिशूल, अंकुश, आला अफसर मुन्साफ मिजाज
(Iv) चश्म फी (हाथी की आंख) का निशान साहबे तख्त होगा।
(v) चश्मफील अगर बाएं पांव पर हो तो राह जन चोर डाकू होवे फिर भी तंग बहुत मन्दा हाल
औरत के पांव में (दानों पांव इकट्ठे गिनकर) जिस कदर गहरे चक्र या पद्म या सदफ पव या पांव की हथेली पर हो। उसी कदर लड़के होंगे और जिस कदर चक्र या पद्म नरम व बारीक लकीर हो तो उसी कदर लड़कियां होंगी।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

कुंडली का पक्का घर खाना नः 7
गृहस्थी चक्की

(आकाश, जमीन, दो पत्थर सांतवे रिजक अक्ल की चक्की हो)
बुध शुक्र शुक्र बुध

दोनों घुमे कीली लोहे की, घर आठ के[1] जो होती हो
पहले घर के खाली होते, सातवां फौरन सोया
पांच साला हो सूरज[2] निकले, आठ जब दूजे हो या
दोस्त[3] शुक्र हो घूमते पत्थर, शत्रु[4] पत्थर गड़े माना है
बुध बराबर चक कुम्हार[5]ने, साथी हत्थे को जाना है
जैसे शुक्र हो वैसे ही सब फल, निचले पत्थर से होते हैं
बाकी असर ग्रह अपनों अपना, साथी को प्रबल गिनते हैं
दो से ज्यादा घर सांतवें में, स्त्री[7] ग्रह नर[8] होते हैं
असूल मिलावट[9] मिले बेशक अपने, असर मर्द पर करते हैं।

1. जब खाना नः 8 के ग्रह (वर्षफल के अनुसार) खाना नः 8 या खाना नः 1 में आवे तो आपसी दोस्ती दुश्मनी के असूलों पर असर करेंगे।
2. 5 साला उम्र से किस्मत का सूरज उदय होगा
3. बुध शनि केतु अपना अपना नम्बर 7 का दिया हुआ फल घूमते पत्थर यानि वास्ते रिजक फालतू धन राशिफल (काबिले उपाय)
4. सूरज चन्द्र राहू जैसा शुक्र वैसा ही अपना अपना फल पत्थर यानि वास्ते रिजक व फालतू धन ग्रहफल (अटल फैसला)
5. दो पत्थरों की बजाए कुम्हार के चक्र की तरह एक ही पत्थर जो दो का काम देवे। मंगल या बृहस्पति वास्ते परिवार
6. जहां शुक्र हो उस घर का ग्रह बहैसियत मालकियत या पक्का घर चक्की व चक्र का रहनुमा होगा।
7. स्त्री ग्रह से अभिप्राय शुक्र और चन्द्र
8. नर ग्रह से अभिप्राय बृहस्पत सूरज मंगल
9. असूल मिलावट से अभिप्राय दर्जा दृष्टि या आपस में देखना

प्रायः स्त्री ग्रह स्त्रियों पर असर करते हैं और नर ग्रह मर्दों पर मगर जब खाना नः 7 में दो से ज्यादा ग्रह वाका हो तो स्त्री ग्रहों को नर ग्रह ही समझ कर असर गिनना चाहिए। मसलन चन्द्र नः 7 में किसी और दो ग्रहों के साथ बैठा हो तो मिलावट या दृष्टि की रुह से जो भी असर खाना नः 1 या 7 में बैठे हुए ग्रहों का चन्द्र पर हो सकता है वही असरी नर ग्रह यानि बृहस्पति पर लेंगे या यूं कहो कि अगर कोई असर चन्द्र या माता पर होता हुआ मालूम होवे तो वह असर चन्द्र के साथ कोई और ग्रह (जब सब को मिलाकर दो से ज्यादा हो जावे) होने पर बृहस्पति या पिता पर होगा। इसी तरह ही शुक्र नः 7 के साथ कोई दो और दो से ज्यादा ग्रह होने पर स्त्री (शुक्र) की बजाए नर ग्रह (मर्द) पर असर लेंगे यानि ऐसी हालत में खुद टेवे वो की स्त्री की बजाए वही असर खुद टेवे वाले के अपने जिस्म पर होंगे और वह बृहस्पति मंगल सूरज तीनों ही ग्रहों से मुतल्लका हो सकता है।

लगन से कुंडली का पक्का घर 8 मुकाम

मौत, अदल (इन्साफ)

मौत शनि हो मंगल चन्द्र, बुध मंगल नहीं मन्दे है
बैठा कोई ग्रह जब तक तीजे, मौत टली ही गिनते हैं
घर आठवां जब बदी पर आवे, 2, 6 भी आ मिलते हैं
बैठा बारह खा दुश्मन होवे, फैसला उस का लेते हैं
मंगल बद गो सब से मन्दा, बुध पापी नहीं अच्छे हैं
ग्रह ग्यारह घर चीज जो आवे, छत गिरी ही लेते हो

अदल से अभिप्राय यह है कि इस ग्रह घर के ग्रह इन्साफ व जिसमें रहम और अक्ल दोनों शामिल होते है कि बजाए अदले का बदला के असूल पर अपना असर करेंगे मसलन किसी ने दूसरे का लड़का कत्ल कर दिया तो राजा के तालुक में उसका लड़का ही कत्ल किया जाये बेशक पहले शख्स के पांच लड़कों में से एक लड़क मारा गया और दूसरे प्राणी के यहां सिर्फ एक ही लड़का हो दूसरे के कत्ल के हुक्म पर उसका खानदान ही नष्ट हो जावे इसी तरह ही इस घर के ग्रह अपना असर करेंगे और किसी को मुआफ करने के लिए रहम या अक्ल का दखल न देंगे।

अगर खाना नः 8 में सूरज बृहस्पति तथा चन्द्र में से कोई भी अकेला अकेला या कोई दो या तीनों ही मुश्तरका बैठ जावे तो खाना नः 8 न आगे को खाना नः 12 को नहीं पीछे को खाना नः 2 को देखेगा। बल्कि खाना नः 8 का ऐसा असर सिर्फ खाना नः 8 में ही बन्द हुआ गिना जाएगा (गोया मौत के घर को सूरज, बृहस्पत चन्द्र मुश्तरका) योगी जोगी जीत लेगा।

शनिच्चर मंगल या चन्द्र अकेले अकेले घर में हमेशा उम्दा मगर जब कोई दो या तीनों इकट्ठे तो शनिच्चर मौतों का भण्डारी चन्द्र दौलत व सेहत के बरबाद करने वाला और मंगल में नः 2, 6 का मन्दा असर शनिच्चर या वह मंगल बद हर तरह की लानत का देवता जलता ही होगा। बुध नः 8 हमेशा मन्दा मंगल नः 8 अमूमन बुरा। मगर मंगल बुध दोनों मुश्तरका नः 8 में उत्तम होंगे जब तक नः 2 में शनिच्चर न हो वरना

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

मंगल बद ही होगा। जो मैदाने जंग में मौत का बहाना खड़ा करेगा।

8, 6 कोई मन्दा तो दोनों मन्दे

आखिरी अपील चन्द्र पर होगी

खाना नः 11 का ग्रह (वर्षफल के अनुसार)

खाना नः 8 या 11 में ही आ जाने तो खाना नः 11 में बैठे हुए ग्रह की मुकम्मल नीच नई सबीत कर घर लाने पर मोहन या मोहन जोनी बरबाद होंगे नम्बर 3।5 की मन्दी हालत की जो खाना नः 4 मार्फत नः 2 होगा जब तक नः 2 खाली तो मन्दी हालत नः 8 तक महदूद होगी। नः 11 में अगर नः 8 का दुश्मन हो तो नः 8 का बुरा असर नः 2 में न जाएगा।

जब नः 8 दुश्मन हो नः 2, 11 या नः 8 का ग्रह वृष्टि के अनुसार जब कभी भी इसे मोका मिले नः 2, 11 पर मार कर ही देगा

कुंडली का पक्का घर खाना नः 9
आगाजे किस्मत

जड़ बुनियाद ग्रह 9 होता, किस्मत का आगाज भी हो
हर दूजे पे बारिश करता, समन्दर घिरा बहमायु भी हो
घर तीजे का असर हो पहले, बाद मिला घर पांच का हो
कुंडली मकानां मरकज गिनते, हाकिम गिना ग्रह सबका हो
उम्र ग्रह जो अपनी जागा, असर गिना उस उमर का हो
ग्रण पितृ जब टेवे बैठा, रेत समन्दर जलता हो
पांच दृष्टि 9 पे करता, निकास औलाद की गिनती जो
रवि चन्द्र कोई 9 जब बैठा, नजर दृष्टि उल्टी हो
शान समुन्द्र घर नीवे का, या फल उम्र हो पहले का
सफेद झंण्डा काले सार के झूले, उम्र बुढ़ाप घर दो का
किस्मत का असल आगाज खाना नः 9 का ग्रह होगा
नः 9 जब 3, 5 खाली तो नः 2 की मार्फत जाग पड़ेगा।
जब नः तीन सोया हुआ हो तो तीन साला उम्र के बाद इसका असर होगा।

जन्म कुंडली का सोया हुआ ग्रह जब कभी वर्षफल अनुसार नः 9 में आने पर जाग पड़े तो वह ग्रह अपनी उम्र से अपनी उम्र के जमाने तक नेक असर देगा मसलन सूरज में हो तो 22 साला उम्र से 22 साल तक यानि 44 साला उम्र तक नेक असर देगा। यही असर जन्म कुंडली के नः 9 वाले बाकी ग्रहों का नः 9 में आने से होगा। मंगल नः 9 का 28 से 28, बृहस्पत नः 9 का 16 से 16 साल, सूरज नः 9 का 22 से 22 साल, चन्द्र नः 9 का 36 से 36, साल केतु नः 9 का 48 से 48 साल, राहू नः 9 का 42 से 42 साल सब के सब उत्तम सिवाय। :-

(I) शुक्र नः 12 का जो सिर्फ 25 वे साल मन्दा होगा। जब नः 3 या 5 की दृष्टि से मन्दा हो रहा हो वरना नेक असर देगा।

(II) बुध नः 3 का 17 से 17 मन्दा जब बाकी असूलों से बुध मन्दा हो वरना नेक असर देगा।

6. ऐसी हालत नः 5 में बैठे हुए पापियों का औलाद पर कोई बुरा असर न होगा मगर बाकी सब बातें में वही असर लगे जो सूरज चन्द्र से पापियों के ताल्लुक पर हो सकता है।

नः 9 के ग्रह के मुतल्लका आशिया तिलस्म की जगह लगाने से नः 9 का असर पैदा होगा

लगन से कुंडली का पक्का घर खाना नः 10 किस्मत की बुनियाद का मैदान।

ग्रह मंडल 9 ही से टेवे, घर दसवें जब बैठा हो
6, 5 में खा दोस्त उसके, दुगनी जहर का होता हो
ग्रह दसवें घर 10 शक्की, दुगनी, ताकत का होता हो
आंख गिना है घर दो जिसकी, ख्वाब 12 में लेता हो
घर दूजे के खाली होते, दसवां फौरन सोया
दिन उसी ग्रह 10 जागे, शनि दूजे जब बोए

इस घर में वर्षफल के अनुसार आया हुआ ग्रह धोके का ग्रह होगा। जो अच्छा बुरा दोनों ही तरफ हो सकता है। अगर नः 8 मन्दा हो तो दुगना मन्दा और अगर नः 2 नेक तो दुगना उम्दा होगा। अगर दोनों तरफ बराबर तो अच्छा असर पहले और बुरा असर बाद में होगा। अगर नः 8, 2 दोनों ही खाली हो तो नः 3, 5, 11 के ग्रह मदद गार होंगे अगर वो भी खाली हो तो फैसला शनि की हालत पर होगा जब नः 10 में आपस में लड़ने वाले कोई भी ग्रह बैठे हो तो वह रेखा अन्धे ग्रहों की होगी यानि वो ग्रह हूबहू ऐसे ही ढंग पर असर देंगे। जिस तरह कि दुनिया में एक अन्धा प्राणी चलता फिरता है। ऐसे हालत में फैसला चन्द्र की हालत पर होगा यानि अगर चन्द्र उम्दा तो अगर उम्दा वरना मन्दा फल लेंगे। अगर खाना नः 10 खाली ही हो तो खाना नः 4 के ग्रहों का कोई नेक फल न हो सकेगा। या उस घर में जिक्र के चश्मे को उभारने के लिए ग्रह लाख दर्जा ही उम्दा क्यों न हो अपने माता पिता को मिलते रहना मदद देगा। 10 अन्धे मर्दों को इकट्ठा ही मुरत (बतौर खैरात) खुराक तकसीम करना (नकद रुपया पैसा हरगिज नहीं) खाना नः 10 के ग्रहों (मन्दे या बाहम लड़ने वाले) की जहर धो सकेगा।

राहू केतु बुध तीनों ही इस घर में हमेशा शक्की होंगे जो शनिच्चर की हालत पर बना करते है यानि अगर शनिच्चर उम्दा तो दुगना उम्दा अगर शनिच्चर मन्दा तो दो गुना मन्दा असर देंगे।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

ान से कुंडली का पक्का घर खाना नः 11 गुरु स्थान इंसाफ की जगह

ाफ करने कराने की जगह या मुकाम मगर खुद इंसाफ नहीं या इन्सानी किस्मत की बुनियाद

पाप अकेला, असर अकेला 3, 5, 9, 11
शनि बली का साथ मिले तो असर बढ़े गुना ग्यारह
ग्रह 11 जो मन्दा होवे, असर में सबसे उम्दा हो
घर 11 से चलकर अपने, बैठा तख्त पर जिस दिन हो
किस्मत का ग्रह घर उस तीजे, मदद न पांव से होती हो
खाली तख्त 3, 11 सोवे, लिखत, शनि पर चलती हो
उम्र पहली में 11 शक्की, घर तीजा जब मन्दा हो
खुद तीजा हो बेशक रद्दी, मौत आई आठ रोकता हो
खुद बेड़ी को पापी चलावे, डूब डबाने वो नहीं है
ग्रह 11 घर चीज जो लावें, मौत खड़ ही करते ही
घर 11 में ग्रह जो आवे, तासीर शनि वो होता हो
असर मगर इस घर में जावे, गरू जहां टेवे बैठा हो

) 11-23-36-48-57-72-84-94-105-119 साला उम्र

) नः 3 में बृहस्पत के दोस्त (सूरज चन्द्र मंगल) तो नः 11 हमेशा नेक असर देगा।

) खाना नः 8 के ग्रह मुतल्लका की अशिया से आई हुई मौत

3 में केतु के दोस्त शुक्र राहू तो नः 4 हमेशा नेक असर देगा।

ाना नः 11 को खाना नः 3 देखा करता लेकिन खाना नः 11 का असर उसी वक्त ही मुकम्मल जाग्रत हुआ माना जाएगा। जबकि खाना नः 3, दोनों ही घरों में कोई न कोई ग्रह जरूर हो।

न्मकुंडली या वर्षफल के अनुसार खाना नः 8 और 11 बाहम दुश्मन हो तो नः 11 के ग्रह की मुतल्लका चीज टेवे वाले के किसी काम न ाएगी। बल्कि ऐसे सदमे या मन्दी हालत की निशानी होगी कि जिससे पीठटूटी हुई की तरह मातम का जमाना होगा ऐसी हालत में खाना नः 11 ग्रह की मुतल्लका चीज के साथ ही उस ग्रह (खाना नः 11 वाले) के दोस्त ग्रह या ऐसे ग्रह के मुतल्लका चीज भी साथ ही ले आवे जो ग्रह के न्दे असर को नेक लेवे। मसलन शनि नः 11 होतो शनि की आशिया के साथ ही केतु की मुतल्लका अशिया ले आना मुबारिक होगा। यानि अगर कान बनाओं तो कुत्ता साथ ही ले आओ (रख लो) मशीने खरीदों तो बच्चों के खेलने का सामान खिलौने वगैरा साथ ही खरीद लाओं। इस तरह निव्वर बुरे असर की बजाए और भी भला असर देगा। मसलन बुध 11 शानिव्वर 12 बृहस्पत शुक्र 7 उम्दा गृहस्थ सूरज 11 शनि 3 बृहस्पत कर्जा है।

ाना नः 11 के ग्रह सिवाय पापी ग्रहों के बेएतबारी हालत में होंगे अगर खाना नः 3 खाली हो तो अमूमन नेकफल तख्त में आने के दिन से शुरू रेंगे और खाना नः 8 में आने के वक्त मन्दा असर देंगे। मन्दी हालत में ग्रह मुतल्लका की कुल मुकर्ररा उम्र की मियाद के बाद नः 11 में बैठे ए या उसके दोस्त ग्रह की मुतल्लका चीज का उपाय मददगार होगा बशर्ते कि पापी ग्रह से कोई उस वक्त वर्षफल के हिसाब से खाना नः 1 में । हो.. अगर कोई पापी नः 1 में ही हो तो खाना नः 9 में आए हुए ग्रहों की मुतल्लका चीज के उपाय से नेक असर होगा अगर खाना नः 9 ाली ही हो वे तो बृहस्पत का उपाय मददगार होगा।

ाना नः 11 के ग्रह किस साल खाना नः 8 में आयेंगे।

'-20-34-45-53-67-79-92-97-113.

ाना नः 11 के ग्रहों की बेएतबारी की हालत खाना नः 11 में बैठे हुए ग्रह का असर

ाना नः 11 में ग्रह ठा हो	नेक हालत में	बुरी हालत में
ृहस्पत नः 11	जब तक टेवे वाला खानादान में मुश्तरका रहे और पिता जिन्दा हो तो सांप भी सजदा करें।	जब पिता से अलहदा और चाल चलन का ढीला और जन्म कुंडली के हिसाब से कारोबार या रिश्तेदार का हद से ज्यादा ताल्लुकदार हो तो मच्छर का मुकाबला न कर सके और कफन तक पराया हो
ूरज नः 11	जिस कदर धर्मात्मा और सफा (सूफी की) खुराक और पोशाक का मालिक रहे उसी कदर उत्तम जिन्दगी और साहिब परिवार हो	जब शनि की खुराक गोश्त शराब खाता हो तो विधाता खुद अपनी कलम से लावल्दी का हुक्म लिख देगा।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

चन्द्र नः 11	अगर टेवे में बृहस्पत और केतु उम्दा तो माया और औलाद की माता के बैठे तक भी कोई कमी न होगी	माता के जिंदा होते हुए नर औलाद शायद ही माता को तो देखनी नसीब होगी
शुक्र नः 11	दौलत का भण्डारी जब तक औरत के भाई मौजूद या मंगल उम्दा हो (जन्म कुंडली में)	वरना बुद्धू बुजदिल और हिजड़ा और धन दौलत से दुखिया ही होगा।
मंगल नः 11	बृहस्पत के पीछे पीछे कदम पर कदम रखने वाला स्यादर घीते की तरह जनाने की अन्धेरी रातों को अबूर (पार) करके अपना शिकार या दिली ख्वाहिश पा लेगा।	वरना दुम को आग लगी हुई हालत में लंका से भागते हुए हनुमान जी की तरह समन्दर के पानी (अपना रिजक और आमदन) की तलाश में भागता होगा।
बुध नः 11	चन्द्र बृहस्पत और शनिच्चर से मारे हुए यानि माता पिता, के यहां जन्म लेने के दिन और दुनिया के गैबी अन्धेरे से निकल कर आंखों के देखने के वक्त से ही दुखिया होने वाले को अपने वक्त में हर तरह और हर हालत से डूबे होने पर भी जिन्दा करके तार देगा।	ऐसी खोटी अक्ल का मालिक जो पौधे के जड़ से ही उखाड़ देवे और खुद भी गिरने वाले दरख्त के नीचे आकर दब मरे
शनिच्चर नः 11	विधाता की तरफ से लावल्दी के लिखे हुए हुक्म को भी पूरे करके बच्चे की पैदायश का हुक्म देगा। और तमाम दुनिया के जहरों और हर तरह से विरोधियों के विरुद्ध अकेला ही हर तरह से पूरी हिफाजत करेगा। और धर्म ईमान में सच्चा होने का पूरा सबूत देगा।	(ऐन समन्दर के दरम्यान) पहुंचकर बेड़ी का चप्पू सिर, सिरहाने रखकर अचानक सो जाएगा और अपनी अल औलाद को ऐसी अधूरी हालत में छोड़ कर मरेगा कि उनकी आहों को सुनने वाला शायद ही कोई गृहस्थी मददगार होगा या हो सकेगा।
राहू नः 11	इतने तकब्बुर (गर्व) और अपनी कमाई पर काबिज के अपने मां-बाप से भी कोड़ी पाई तक न लेंगे ताकि उस पर कोई एहसान न हो जावे खुद कमायेंगे। और सोना बनाएंगे मगर अपन जन्म से पहले के मिले हुए सोने को खाक कर दिखलाएंगे, न बृहस्पत पिता का लिहाज, न राहू ससुराल के जेलखाने का फिक्र मगर खुद ख्वाबी दुनिया में कोहे नूर पर बैठे खुद की पूजा कर रहे होंगे। अल औलाद की ख्वाहिश और केतु की अशिया, रिश्तादार या दीगर कारोबार मुतल्लका केतु का फल 11 गुना नेक होगा जब खाना नः 5 में चन्द्र या बृहस्पत न हो।	जन्म लेने की अपनी अवधि से पहले अगर सब के सांस और जिस्म के खून (खासकर बाप या बाबे के) को दुखिया और अफीम से जहरीला बरबाद और बन्द न कर दिया। तो ऐसे टेवे वाले के जन्म लेने का किसी को पता ही क्या लगेगा यानि अगर अफीम से मरे या संखिया से बन्द बंगे या हीरा चाट जाए, कोयला से राख हुए जो कुछ कहो सच्च मगर वह तमाशा देखने के लिए हर वक्त हाजर-नाजर (जिंदा) होगा। खुद अपना केतु यानि अल औलाद और शनि और चन्द्र का फल हद से ज्यादा निकम्मा होगा

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

खाना नः 11 क्याफाः पेशानी

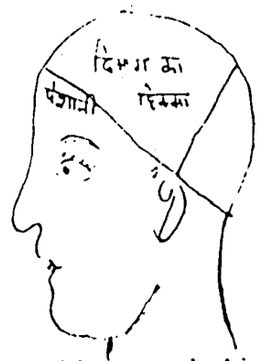

दिमाग का खाना नः 35 कुंडली का खाना
: 11 पेशानी से तुलना की गई है भवों से ऊपर और
दिमाग की हद से नीचे कान के सुराख ने 90 अंश पर खिंची
ई रेखा दिमाग के हिस्सों को सिर और भवों से अलहदा कर देता है
ो पेशानी होगी इन्सान का जाती हाल या इन्सान का कुल दुनिया से ताल्लुक
य की मुश्तरका किस्मत का मैदान या पेशानी हर शख्स अपने साथ लिए
करता है गویा पेशानी पर रायकी सारी किस्मत लिखी है। यह हिस्सा
मेशा जमाने की हवा से टकराता और इन्सानी किस्मत पर बृहस्पत का असर डालता है। दिमागी खानों में खाना नः 35 पेशानी के पीछे खाना नः
20 सूरज और खाना नः 21 चन्द्र चमक रहे हैं जिन दोनों के ऊपर खाना नः 13 शनिच्चर का घर है पेशानी की चौड़ाई कुल चेहरा की लम्बाई
का 1/4 (1/4 अगर चार हिस्से किए जावें तो 4 में से सिर्फ एक हिस्सा) तो नेक होती है पेशानी की इस अनुपात से जिस कदर चौड़ाई बढ़े
इस कदर नेक असर ज्यादा बढ़े। और मुबारिक होवे।

यह चाल	पेशानी की क्या हालत है क्याफे की रूह से (अनुसार)	तो खाना नः 11 का क्या असर होगा।
1. खाना नः 2 के बृहस्पत से या खाना नः 2 से बजरिए दृष्टि वगैरा जिस कदर ज्यादा केतु का ताल्लुक होवे	उसी कदर पेशानी चौड़ी होगी।	उसी कदर नेक असर कम होगा।
2. खाना नः 8 का 2 की मार्फत खाना नः 6 में असर हो गये। केतु जब बृहस्पत के साथ या बृहस्पत के घरों (2, 5, 9, 12) में हो।	कुशादा (खुली) पेशानी होगी	अक्ल की बारीकी ज्यादा होगी।
3. जिस कदर केतु का ताल्लुक खाना नः 2 के बृहस्पति 6 से कम होवे	उसी कदर पेशानी लम्बी होगी	उसी कदर ही नेक असर ज्यादा होगा
4. खाना नः 2 का असर खाना नः 6 की मार्फत खाना नः 12 में जावे	पेशानी के ऊपर का हिस्सा बाहर को उभरा हुआ	जांच पड़ताल (कुव्वते दरयाफत) और चाल चलन उम्दा होगा।
5. खाना नः 8 का असर खाना नः 11 की मार्फत जिसके लिए विस्तार से खाना नः 8 में देखे) खाना नः 2 में जावे।	पेशानी का निचला हिस्सा बाहर को उभरा हुआ।	कुव्वते ख्यालों नेक तरफ काम करने वाली होगी।
6. खाना नः 2 में खाना नः 8 के मन्दे ग्रहों मंगल बद वगैरा का असर मिल रहा हो।	तिलक लगाने की जगह छोड़कर बाकी पेशानी पर निशानात का असर सिर्फ उम्र की कमीबेशी पर होगा पेशानी पर तिकोन, तराजू मछली त्रिशूल अंकुश पद्म, पंखा तलवार या परिन्द में से कोई भी ऐसा निशान	अजीजों व रिश्तेदारों का सुख नसीब न होवे
	पेशानी पर बैठने के पांव का निशान हो	कम उम्र और मन्द भाग्य होगा

Free by Astrostudents

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

7 खाना नः 2 में बृहस्पत के दुश्मन ग्रह (शुक्र बुध) या केतु के दुश्मन ग्रह (चन्द्र मंगल हो)	पेशानी पर टूटी-फूटी लकीरें बहुत हो या उनका झुकाव नीचे की तरफ हो या हो	अल्पायु यानि कम उम्र और जिंदगी उम्र के आठवे साल 8, 16. 24, 32, 40.48, 56, 64 [illegible] में होगी:
8 खाना नः 2 व 7 में मन्दे ग्रह हो।	पेशानी पर 7 या ज्यादा लकीरें	ठग कज्जाक डाकू उम्र 50 साल
9. नः 2 में मंगल बुध या सूरज बुध	सुर्ख रंग नाड़े	कम उम्र होवे
10. राहू बृहस्पत मुश्तरका नः 2 या अकेला बुध नः 2 में।	सब्ज रंग की नाड़े खावाह मर्द या औरत	मुबारिक और खुश किस्मत होवे

लगन से कुंडली का पक्का घर खाना नः 12

इन्साफ मगर इन्साफ करने कराने की जगह नहीं

आरामगाह, ख्वाब अवस्था इंसान का सिर

घर 12 न ग्रह जो बोले, घर दो में वह बोलता है
फल घर 12 दो का इकट्ठा, साधु समाधि होता है
एक जन्म से पूजा शुरू हो, 12 जहां दो होता है
सुख दौलत और सांस आखिरी, हुक्म विधाता होता है।

कुंडली के तमाम ग्रहों की अपील खाना नः 12 पर होगी यनि खाना नः 12 का फैसला राय से आखिरी फैसला होगा लेकिन अगर खाना नः 12 के लिए खुद अपनी अपील हो तो खाना नः 2 पर होगी। या खाना नः 12 के जाती ताल्लुक में खाना नः 2 का फैसला रायसे आखिरी फैसला होगा। अमूमन नः 11 पहला दुनियावी हाकिम (बिल लिहाज मुलाजमत वगैरा) और नः 1 कुंडली का राजा होता है। मगर नः 12 के लिए (जनम कुंडली के अनुसार) नः 1 के ग्रह की उम्र (मसलन सूरज नः 1 तो 22 साला) गुजरने के बाद नः 2 अपील का काम देगा। जिसका आखिरी निर्णायक केतु होगा। अगर जन्म कुंडली के अनुसार नः 1 खाली हो या नः 1 के ग्रह की उम्र (मसलन मंगल नः 1 तो 28 साला) के बाद नः 1 खाली हो जावे तो सबसे आखिरी निर्णायक चन्द्र होगा। मगर नः 1 की उम्र के अंदर अंदर आखिरी हाकिम हमेशा नः 1 का ग्रह ही होगा। वास्ते व तमाम दीगर हालात

:. नः 12 के ग्रह मुतल्लका रिश्तेदार टेवे वाले के आराम पैदा करने के ताल्लुक में खुदाई ताकत का मालिक होगा। जिसके बाद उस ग्रह की मुतल्लका चीज कायम करने से सुख सागर होगा मसलन बृहस्पत नः 12 हो तो पिता बाबा जिन्दा होने के वक्त तक टेवे वाले की रात हमेशा आराम से गुजरेगी उनकी मृत्यु के उपरान्त बृहस्पत की अशिया बवक्त रात कायम रखना आराम देगा।

:. नः 8 मन्दा और नः 2 खाली हो या नः 12 और 8 दोनों ही घरों में ऐसे ग्रह हों जो इकट्ठे हो जाने पर मन्दे जो जावे तो मन्दिर में पूजा पाठ या यात्रा वगैरा के लिए जाने की बजाए मन्दिर से दूरी बेहतर वरना खाना नः 8, 12 की मन्दी टक्कर होगी मसलन बुध 8 शनि 12 लड़कियों की बिनाई नेत्र (ज्योति) बरबाद जब बाप मन्दिर में जावे।

बारह ही पक्के घर मुश्तरका

धन की थैली सातवें हो वे, मर्द बोलते 6 में है
घर आठवें से उम्र मिले तो, बने महल घर दूसरे है
घर पांचवा औलाद का गिनते, गयारह होता घर धर्मी है
अंग जिस्म घर पहले होते, साथ लगी 9 बुर्जगी है
चश्मा दौलत घर चौथे निकले, मैदान रिजक घर 10 का हो
आखिर वक्त घर तीसरे चलते, ख्वाब पाया घर बारह हो
खरबूजा देख खरबूजा पके, 9 पहले और 7, 11
घोरां टोनी एके बोला, बुध शनि और शुक्रयाग

जिस्मानी (शारीरिक)

नः 2, 6, 12 (तीनों ही) में कोई न कोई ग्रह जरूर हो तो कुव्वते दरयाफ्त व याद बखूबी उन्दा होगा।
इंसान की जिस्मानी ताकत से मुतल्लका खाली खाना नः 10 (उंगलियों का दरमयानी हिसाब)

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

रूहानी (अध्यात्मिक)

नः 2, 8 दोनों ही में कोई न कोई जरूर हो और नः 8 का असर नः 2 में पहुंच रहा हो यानि नः 11 में नः 8 का दुश्मन न हो तो अक्ल कीबारीकी व कुव्वते ख्याल उम्दा होगी खाली खाना नः 2 ऊंगलियों के नाखून वाली पोरी या टुकड़ा रूहानी ताकत से मुतल्लका होगा खाना नः 1 से तीन पहली अवस्था 4 से 6 दूसरी अवस्था 7-9 तीसरी अवस्था 10 से 12 चौथी अवस्था बतलाएगा या दूसरे शब्दों में।
पहली अवस्था 25 दूसरी अवस्था 50 तीसरी 75 चौथी 100 साला उम्र तक।

नफसानी (इन्द्रीय) वासना

खाली खाना नः 12 ऊंगलियों का निचला हिस्सा नफसानी ताकत से मुतल्लका होगा। खाली खानों के लिए आम तौर पर खाली खानों की हालत में खाली नः वाली राशि का मालिक ग्रह लेते हैं। खाना नः 6 व बारह में बुध व बृहस्पति के साथ केतु और राहू का निवास भी माना है। इसलिए हर दो में से कौन सा एक होगा बृहस्पत जब अपनी दूसरी राशि नः 9 में हो तो खाली खाना नः 12 का मालिक राहू होगा। बुध जब अपनी दूसरी राशि नः 3 में हो तो खाली खाना नः 6 का मालिक केतु होगा।

1. बृहस्पत 9, 12 में से किसी जगह भी न हो तो खाली खाना नः 12 में बृहस्पत राहु दोनों ही मुश्तरका या मरानूई (बनावटी) बुध होगा। 2. बुध 3, 6 में से किसी जगह भी न हो तो खाली खाना नः 6 में बुध केतु दोनों ही मुश्तरका हो सकते हैं लेकिन जहां बुध जबर्दस्त होगा केतु वहां कमजोर होगा इसलिए ऐसी हालत में खाली खाना नः 6 का मालिक बुध या केतु में से कोई एक लेंगे। जो कि दोनों में से (प्रबल या जबरदस्त हो) उस कुंडली में (जन्म कुंडली के हिसाब से) उम्दा होवे क्योंकि खाली खाना नः 6 हमेशा नेक — मानों में होता है। इसलिए दोनों में से कमजोर या मन्दे को अब खाना नः 6 का मालिक नहीं लेंगे। खाली खाना नः 9 का मालिक बृहस्पत और खाली खाना नः 6 का मालिक बुध होगा बाकी खाली खानों के लिए उस खाली राशि नः का मालिक ग्रह (घर का) लेवे।

क्याफा:

1. (हम साये ग्रह) की बाहा सीमा का प्रभाव अंगूठे और तर्जनी की जड़ का दरम्यानी फासला (जिस में मंगल नेक और बृहस्पत है) हौसला और अन्दरूनी दिली ताकत की मजबूती से मुतल्लका है।

2. तर्जनी और मध्यमा की जड़ों का दरम्यानी फासला (बृहस्पति और शनिच्चर का दरम्यान) विचार शक्ति, सोच विचार, की ताकत से मुतल्लका है

3. मध्यमा और अनामिका की जड़ों का दरम्यानी फासला (शनिच्चर सूरज का दरम्यान) ख्यालात की आजादी जाहिर करता है मौका के मुताबिक लट्टू की तरह फौरन पहलू बदल लेने वाला होगा।

4. अनामिका और कनिष्ठका की जड़ों का दरम्यानी फासला (सूरज और बुध का दरम्यान) खुद काम करने की ताकत व आदत ज्यादा दूसरों की कमाई की तरफ उम्मीदें रखने की बजाए खुद अपनी कमाई में बरकत पर शुक्र व सब्र करने वाला होगा।

5. कनिष्ठका की जड़ और बुध का हिस्सा हथेली से बाहर को निकला हुआ सिर्फ बुध के बुर्ज की हद बोलने की ताकत से लोगों में रसूख पैदा करने की ताकत ज्यादा

6. शुक्र की जड़ से चन्द्र की जड़ का हिस्सा जो बाजू की चौड़ाई या कलाई की चौड़ाई होगी दिली मुहब्बत और मगन शुक्र या औरत कीलगन कुव्वते नफसानी (इश्को मुहब्बत) माता की मुहब्बत पितरों या बर्जुगों की सेवा की ताकत से मुतल्लका होगी।

हथेली की चारों तरफे

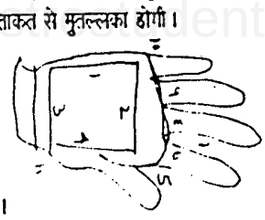

1. बुध से चन्द्र की तरफ की लम्बाई वाला हिस्सा जिस कदर ज्यादा लम्बाई उसी कदर जवान की ताकत ज्यादा आह जिस कदर कनिष्ठका की जड़ से बाहर को उभरी हुई या निकली हुई उसी कदर रसूख पैदा करने की ताकत और रसूख पैदा किया हुआ ज्यादा होगा।

2. बृहस्पत से बुध की तरफ ऊंगलियों की जड़वाला हिस्सा जिस कदर लम्बाई ज्यादा उसी कदर जहनी व दिमागी ताकत ज्यादा होगी। और उसी कदर बुध के बुर्ज की पाएदारी होगी।

3. शुक्र से चन्द्र वाला हिस्सा जिस कदर लम्बाई उसी कदर ख्वाहिशात नफसानी या शुक्र की ताकत ज्यादा या शुक्र का असर ज्यादा होगा।

4. शुक्र की जड़ से बृहस्पत के आखिर तर्जनी की जड़ तक हिस्सा जिस कदर यह लम्बाई ज्यादा उसी कदर जानी हिस्सा हैसियत के ज्यादा या अंगूठे की ताकत ज्यादा या मंगल नेक का नेक असर ज्यादा होगा।

1. हथेली भारी या मोटी लालची होगा, मामूली दर्जा की जिंदगी वाला क्योंकि इस हालत में तर्जनी हासिद (ईर्ष्यालु) मध्यमा बेबुनियाद ख्याललात अनामिका मशहरी पसन्द कनिष्ठका बेवफा जाहिर करती है

2. हथेली अगर (कमजोर) या पतली और कमजोर सी गरीबाना हालत या गरीबाना रोजगार वाला होगा। हथेली लम्बी जुबान में जाहरदारी याजाहिर करने की ताकत जयादा हो जिस कदर लम्बाई ज्यादा होवे उसी कदर यह ताकत ज्यादा होवे।
लम्बी व गोल हथेली वाला हुकमरान; खुश गुजरान आसूदा सम्पन्न हाल होवे।

3. हथेली लम्बी जुबान में जाहरदारी या जाहिर करने की ताकत ज्यादा हो जिस कदर लम्बाई ज्यादा होवे उसी कदर यह ताकत ज्यादा हो।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

4. लम्बी व गोल हथेली वाला हुक्मरान, खुश, गुजरान आसूदा (सम्पन्न) हाल होवे।

सोए हुए पक्के घर या पक्के घरों में बैठे मगर सोए हुए ग्रह

ग्रह सोए हुए घर से अभिप्राय यह है कि वह ग्रह या घर सब कुछ होते हुए भी अपना कोई नेक असर न देगा।

1 अकेले न कोई दुश्मन - नहीं दोस्ती होती है
रियाया बना न राजा कोई - नहीं वजीरी होती है
1से 6 तक तरफ जो पहली- हिस्सा दायां कहलाती है
बाद के घर 7 से 12 - तरफ बाई हो जाती है
तरफ पहली नः ग्रह हो कोई- बाद के घर सोए होते हैं
घर जब बाद का खाली होवे- तरफ सोई पहली गिनते हैं
जिस घर में ग्रह हो कोई बैठा- जागता घर वह लेते हैं
जागे घर न ही असर ग्रह का- जब तलक खाली होते है
ऊंच दृष्टि कितना ही होवे- निर्बल प्रबल किसी भी घर
घर दृष्टि का जब तक खाली- असर जावे व दूसरे पर
घर 9, 11 गुरु से जागे- चन्द्र से 8, 4, 2 घर
रवि जगाता घर पांचवा तो - शुक्र जगावे 7 वां घर
शनि से दसवां राहू 6 को- बुध जगाता है तीसरा घर
मंगल से घर पहला जागे - केतु जगावे 12 वां घर

कुण्डली

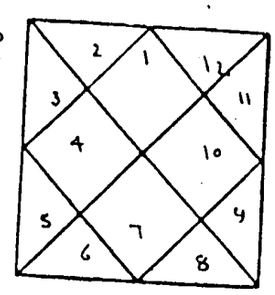

सोया हुआ घर व सोया हुआ ग्रह

सोया हुआ घर

जिस घर में कोई ग्रह न हो या जिस घर पर किसी ग्रह की दृष्टि न पड़ती हो वह घर सोया हुआ होगा।

सोया हुआ ग्रह

जिस ग्रह की दृष्टि में मुकाबले पर कोई ग्रह न हो वो ग्रह खुद ही जोकि पहले घरों का है सोया हुआ होगा।

1. कुंडली के खाना नः 1से 6 पहली तरफ और लगन से नः 7 से 12 बाद की तरफ मानी गई है अगर पहली तरफ कोई ग्रह न हो तो बाद के ग्रही सोए हुए माने जाएंगे लेकिन जब बाद का घर खाली हो तो पहली तरफ सोई हुई होगी हर हालत में सोए हुए ग्रह का असर बाद के घर से नहीं जा सकता । ग्रह बैठा होने वाला घर हमेशा जागता होगा और पक्के घर का मालिक ग्रह मसलन शुक्र खाना नः 7 या मंगल खाना नः 3 में हर हालत में जागता हुआ गिना जाएगा।

जब पहले घरों में कोई ग्रह न हो तो बाद के घरों के ग्रह सोए हुए माने जाते हैं ऐसी हालत मे किस्मत के ग्रह जागने वाले ग्रह की तलाश की जरूरत होगी और अगर बाद के घर खाली हो तो खाना नः को जगाने वाले ग्रह के उपाय की जरूरत होगी जो कि खाली है ग्रह का जागना और खाना नः का जागना दो जुदी-जुदी बातें है।

बगैर जगाए हुआ सोया हुआ ग्रह अगर स्वयं जाग उठे यानि अपना फल देना शुरू कर दे तो ऐसे जागे हुए ग्रह की आम उम्र (मसलन शुक्र 3, मंगल 6 केतु तीन साल वगैरा) के आखिरी साल फर्ज किया शुक्र शादी के तीसरे साल पर सब ही ग्रह का फल मन्दा कर देगा खा वह ग्रह स्वयं जागे या एक ग्रह के दोस्त हो या दुश्मन

2. सोये हुए ग्रह के जगाने वाले घर (वहैसियत पक्का घर) को मुतल्लका ग्रह का रिश्तेदार कायम होते हुए कोई मन्दा असर न होगा मसलन शुक्र नः 11 व नः 3 खाली अब अगर औरत के भाई (शादी होने या औरत बनने से पहले) कायम हों खा 3, खा 1 तो खुद व खुद जागे हुए शुक्र का बुरा असर न होगा।

खाना नः10 में कोई भी ग्रह न हो तो खाना नः 2 के ग्रह सोए हुए होंगे।
खाना नः 2 में कोई भी ग्रह न हो खाना नः 10 के ग्रह सोए हुए होंगे।
खाना नः 2 में कोई भी ग्रह न हो तो खाना नः 9 में ग्रह सोए हुए होंगे।

सोया हुआ घर नः	कौन ग्रह जगा देगा
1.	मंगल
2.	चन्द्र
3.	बुध
4.	चन्द्र
5.	सूर्य
6.	राहू
7.	शुक्र
8.	चन्द्र
9.	बृहस्पत
10.	शनिचर
11.	बृहस्पत
12.	केतु

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

सोया ग्रह कब स्वयं जाग पड़े

ग्रह	कब जाग पड़ेगा	किस उम्र में	कब मन्दा असर देगा
बृहस्पत	आम कारोबार शुरू होने पर	16 साला उम्र के बाद	6 वें या 22 वें साल
सूरज	सरकारी नौकरी या ताल्लुक	22 साल उम्र के बाद	दूसरे या 24 वें साल
चन्द्र	तालीम ताल्लुक	24 साला उम्र के बाद	पहले या 25 वें साल
शुक्र	शादी करने	25 साल उम्र के बाद	तीसरे या 28 वें साल
मंगल	औरत ताल्लुक	28 साला उम्र के बाद	6 वें या 34 वें साल
बुध	व्यापार, बहिन या लड़की की शादी	34 साला उम्र के बाद	दूसरे या 36 वें साल
शनिच्चर	मकान ताल्लुक	36 साला उम्र के बाद	6 वें या 42 वें साल
राहू	ससुराल ताल्लुक	42 साला उम्र के बाद	2रे या 48 वें साल
केतु	पैदाइश औलाद	48 साला उम्र के बाद	तीसरे 51 वे साल

ग्रह दृष्टि

कुंडली के बारह ही घरों में से किसी घर में बैठे ग्रहों की मुकर्रर रास्तों के जरिए बाहमी असर मिलाने की ताकत या नजर ग्रह दृष्टि देखना कहलाती है। जो ऊंगली टेढ़ी हो जावे वह अपनी ताकत छोड़ देती है और जिस ऊंगली की तरफ झुक जावे उस ऊंगली का असर पैदा होगा ऊंगली के झुकाव से अभिप्राय यह है कि ऊंगली की बनावट में टेढ़ापन होवे न कि जाहिरा झुकाव हो।

क्याफा:

हस्त रेखा में रेखा की शाखों या रेखा के उतार झुकाव को ज्योतिष विद्या में ग्रह दृष्टि गिनते हैं रेखा के उपर को झुकाव और उठाव तरक्की या नेक असर और नीचे को झुकाव से मुराद होगी कि इसमें उस ग्रह का असर आकर मिल रहा है जिस ग्रह के बुर्ज की तरफ को रेखा उठ रही है दूसरे शब्दों में खत्म होने से पहले ही दूसरी रेखा का शुरू हो जाना — रेखा टूटा हुआ नहीं होता बल्कि परिस्थित के परिवर्तन का द्योतक है। चाहे वह परिवर्तन अशुभ या शुभ हो। अगर ऐसा परिवर्तन बुरी तरफ को जाता मालूम होवे तो दान से रिहाई छुटकारा और नेक असर होगा।

आम हालत न: 1

[1]

1, 7 घर चौथे दसवें, पूर्ण दृष्टि होती है
5, 9 वें और 3, 11, आधी नजर ही रहती है
8, 6 वें दो बैठे 12, नजर चौथाई करते हैं
केतु राहू और बुध की नाली, लेखा जुदा ही रखते हैं

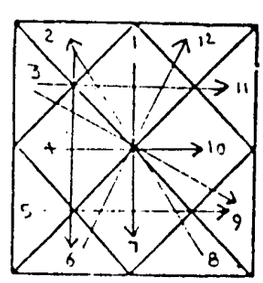

शुरू होने वाले तीर के घर निम्नलिखित हैं		तीर खत्म होने वाले होने वाले घर
1	→	7
3	→	9, 11
4	→	10
5	→	9
6	→	12
8	→	2

[1] लग्न को एक गिनकर पहला सातवां चौथा 10वां वगैरा।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

देखने से मालूम होगा कि इस शक्ल में दिए हुए तीरों के निशान किसी खास घरों से शुरू होकर किसी खास-खास घरों में जाकर
होते है तीर से मिले हुए घरों का मतलब यह है कि जस घर से तीर शुरू होता है वहां बैठे हुए खा जन्म कुंडली के अनुसार या वर्ष फल
अनुसार ग्रह का असर उस घर में बैठे हुए ग्रह के असर में मिल सकता है जहां पहुंच कर वह तीर खत्म होता है। मसलन खाना नः 3 से
तीर ∴ खाना नः 11 में और दूसरा खाना नः 9 में जाकर खत्म हो जाता है। जिसका मतलब यह हुआ कि खाना नः 3 में बैठे हुए ग्रह का अ
खाना नः 11 खाना नः 9 में बैठे हुए दोनों ही ग्रहों के असरों में जाकर मिला करता है अगर तीर शुरू होने वाले घर में कोई ऐसा ग्रह बैठा हो
कि इस ग्रह का दोसत हो जहां जाकर वह तीर खत्म हुआ हो तो तीर खत्म होने वाले घर में बैठे हुए ग्रह का असर और भी उम्दा हो जा
लेकिन, अगर तीर शुरू होने वाले घर का ग्रह तीर खत्म होने वाले घर का दुश्मन होता तो तीर खत्म होने वाले घर के ग्रह का असर खराब
जाता। याद रहे कि तीर शुरू होने वाले घर का ग्रह तीर खत्म होने वाले घर के ग्रह के असर को अच्छा या बुरा कर देता है मगर तीर खत्म
वाले घर के ग्रह का तीर शुरू होने वाले घर के ग्रह के असर में कोई दखल नहीं हुआ करता।

कुंडली में हर ग्रह व खाना नः की मुतल्लका चीजों का असर देखने के लिए उनकी बाहम दृष्टि का ताल्लुक हर ग्रह अपने से सा
दरम्यान में 5 छोड़कर सौ फीसदी नजर से देखते है। खाना नः 1 और 7 व खाना नः 4, 10 सौ फीसदी नजर रखते है खाना नः 5, 9 व खा
नः 3, 11 पचास फीसदी नजर खाना नः 2, 6 व खाना नः 8, 12 पल फिर राशि का ऊंच ग्रह अपनी राशि में उत्तम फल देगा 25 प्रतिशत तक
100 फीसदी दृष्टि की हालत में दो ग्रह एक दूसरे के ज्यादा नजदीक या एक ही हो जाने या मिल जाने 50 फीसदी पर इनका दरम्यानी फासला
आधा रह जाता है या दोनों की ताकतें आधी-आधी परस्पर मिल जाती है 25 प्रतिशत फल सिर्फ एक चौथाई मिलते यानि तीन चौथाई वह
दूसरे से दूर रह जाते है बुध की खास नाली राहू केतु सिर्फ दोनों की बाहम दृष्टि और खाना नः 2 और 9 में इन तीनों का ताल्लुक जुदा होगा।

1. हर एक ग्रह के कौन कौन से ग्रह दोस्त है और कौन-कौन ग्रह इसके दुश्मन यह एक अलग सूचि में दर्जकर दिया गया है।
2. तीर शुरू होने वाले घर खाना नः 1, 3, 4, 5, 6, 8 है
3. तीर खत्म होने वाले घर खाना नः 7, 9, 11, 9, 12, 2 है:

उल्टे घर (आम हालत नः 2)

घर उल्टा 8 दूजे देखे न देखे 5, 11 घर

बुध -12, 6, 9, 3 मारे शनि 6 से दूसरा घर

शनि नः 6 की उल्टी दृष्टि हुआ करती है जो शनि नः 6 मे विस्तार से लिखी है।

ग्रहों की बाहम दृष्टि व राशियों (कुंडली के खानों) से ताल्लुक

बात को समझने के लिए राशि को स्त्री और ग्रह को मर्द कहिए। दोनों का मिलाप ग्रह व राशि या मर्द औरत का जोड़ा मिथुन राशि बुध है
खाली आकाश मेशुक्र की गृहस्थी मुतब्बत (हकीकी वगैर हकीकी) में कुल सृष्टि दुनिया त्रिलोकी तीनों जमाने या खाना नः 3 में मंगल के घर
भाई बन्दी से चल रहा है। इस जोड़े की नीयत तीन हिस्सों में बंटी हुई समझे।

1. घर की माल्कीयत या साधारण जैसी हर मर्द व औरत की गिनी जा सकती है।
2. ऊंच हालत की जो हर एक या बाहम एक के लिए दूसरे की नेक हो सकती है।
3. नीच या मन्दी और दुश्मनी भरी बुरी या एक के हाथों दूसरे का बुरा करने वाली होगी। हर एक राशि के असर के लिए उसके घर का

मालिक, ग्रह साधारण या आम हालत (भला या बुरा) ऊंच फल की राशि से मुराद, नेक फल देने का ताल्लुक खा राशि को ग्रह के लिए या ग्रह
को राशि के लिए और नीच फल की राशि का ग्रह बुरे असर से मुतल्लका होगा या जिसकी खा राशि की इस मुतल्लका ग्रह के लिए कहा खा ग्रह
के लिए इस राशि के ताल्लुक से समझो। नीयत यह गिनी जाएगी हर एक राशि किसी खास ग्रह के लिए खास-खास ताल्लुक (बुरा या भला)
की और हर एक ग्रह किसी खास राशि के लिए खास-खास ताल्लुक का मुकर्रर किया गया है। इस तरह मुकर्रर किए हुए जोड़े में से जब कोई
ग्रह अपनी मुकर्ररा राशि के बजाय किसी और ग्रह की ताल्लुक दार राशि में जा बैठे तो वह ग्रह जो चलकर दूसरी जगह जा बैठा कुंडली वाले की
किस्मत पर वैसा ही असर देगा जैसा कि वह दूसरी जगह जा कर हो गया है।

कुंडली के बारह खानों को एक बड़े मकान की 12 कोठिड़या फर्ज करें। हर एक खाना की लकीर को इस कोठड़ी की दीवार समझे तो ख्याल
आएगा कि कुंडली के अन्दर के चार खाने चार दीवारों वाले चार खाने है जिसमें साथ लाया हुआ खजाना गिना गया है। बाकी आठ खाने सिर्फ
तीन तीन दीवारों से बने हुए आधे मकानों के तरह आठ मुस्लसे (त्रिकोन) है जिसमें कुंडली वाले का आधा आधा हिस्सा गिनकर खुद आठों से
आधा या चार पूरे घर और है। गोया बच्चे के कुल आठ घर होंगे। पहला घर अपना जन्म का जिस्म व आठवां खाना मौत है। ग्रहों को लैम्प
मानिए सब कोठड़ियो के दरवाजे किसी न किसी तरफ खुलते हुए माने गये है या एक घर में चमकते या जलते हु एलैंप की रोशनी उसके दरवाजे
से दूसरे के अन्दर जाती हुई मानी गई है रोशनी के इस तरह दूसरे घर में पहुंच जाने के ढंग को ग्रह की दृष्टि देखना कहते है। लाल किताब में
हर ग्रह अपने से सातवें यानि फालने घर के ग्रह फलाने घर को 100 फीसदी 50 फीसदी की नजर से देखता है। से मुराद है कि वो अपने उस
घर से अपने से बाद के घर को देखता है या उसका अपने बैठे हुए घर का असर वो अपने बाद वाले घर में भी पहुंच रहा है मगर यह मतलब नहीं
है कि वो अपने से बाहर वाले सातवे घर के ग्रह के असर को अपनी तरफ अपने बैठे हुए खाना नः में खैंच कर ला रहा है खाना नः 8 मौत का
घर उल्टा देखता है यानि वो अपना असर खाना नः 2 की तरफ भेजता है। यह खाना नः 2 सब के लिए राहू केतु के मुश्तरका। बैठक के अगर
(पाप पुण्य का मकान) का मुकर्रर है मगर इस नः 2 में खाना नः 8 से आने वाले असर में तमाम पापी ग्रहों राहू केतु के अलावा शनिच्चर का
भाग भी शामिल है।

अपने से सातवे घर को देखने वाले खनों के ग्रह यानि खाना नः 3, 6 के ग्रह (तीसरा नौवे को देखता है मगर 9 वां तीसरे को नहीं

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

देखता इसी तरह खाना 12 को देखता है मगर 12 वां खाने में आकर अगर कोई [illegible] खाना नः 12 के बुरा के कारण बुरा गो [illegible] है और खाना नः 6 [illegible] और खाना नः 12 [illegible] है) तो हर [illegible] कर सकते हैं। खाना नः 8 मौत को पीछे को देखने वाले घर के ग्रह हर आठवें सात तबदीली हालात दे सकते हैं। अपने से बाद के सातवें को देखने वाले घर यह है।

[illegible] है खाना नः [illegible] से 0 को	[illegible]
देखता है खाना नः 6 से 12 को	जो [illegible] है सुहावना खाना नः 3
देखता है खाना नः 8 से 2 को	से नः चार को

देखता हुआ कुंभ या नः 9 में बैठा हुआ राहु ही ग्रह का फल बेगयानी कर देता है खाहो तमाम एक तरफ और कुंभ अकेला ही मुकाबले पर खा उसके दोस्त हों या दुश्मन खा वो उसके साथ ही हो या उससे अलहदा मुकाबला पर खाना नः 8 पीछे को देखता है इसी असूल का 8 ने नः 2 को देखा और नः 2 ने नः 6 को तो नः 8 का असर नः 6 में नः 12 के देखा तो नः 8 का असर नः 12 में चला गया या नः 8 अपना असर नः 12 में 25 फीसदी हालता है अब नः 2 में सौ फीसदी नः 8 का असर मिला है और नः 12 में 2, 6 की मारफत 25 फीसदी नः 8 का असर मिला है गोया नः 2 देखता है 25 फीसदी नः 12 को

सौ फीसदी और अपने से बाद के सातवे को देखने का फर्क:

शत प्रतिशत वाला खाना नः अपने से बाद के खाने में दूध खांड की तरह अपना असर ऐसा का वैसा ही मिला देता है मगर अपने से सातवें वाला अपने से बाद के घर के असर को उल्टा कर देता है। गोया दूध का कर्ज ही जहरीला कर देता है दोनों हालतों दृष्टि का असर तो शत प्रतिशत होता है। फर्क थोड़ा सा यह है कि

1. सौ फीसदी के असर के खाने सिर्फ बंद मुट्ठी के अन्दर के मुकर्रर है (यानि 1, 7, 4, 10) मगर अपने से बाद के खाने बाहर के तिकोनों के घरों से मुकर्रर है। मुट्ठी के अन्दर अपने से सातवें का असूल न होगा और न ही बाहर वालों पर सौ फीसदी (नेक कर देने) का असूल चल सकेगा।

2. जब कोई ग्रह अपने से बाद के घर का सौ फीसदी की नजर से देखता है तो वह देखने वाला ग्रह अपने बाद के घर के ग्रह में (बाद के घर में नहीं) अपना असर मिला देता है कि पहले का असर दूसरे में मिला हुआ मालूम ही न होगा जैसा दूध में खांड ऐसी मिलावट को बुध की मिलावट कहते है और इस पहले घर वाले ग्रह का वही असर रहेगा जैसा कि वो पहले घर में था मगर जब कोई ग्रह अपने से बाद के सातवें को देखे तो न सिर्फ देखने वाले ग्रह का असर इस घर (ग्रह में नहीं) ऐसा मिला हुआ होगा जैसे एक टांग कटे आदमी को दूसरी टांग लगा दी गई (दो चीजों का इकट्ठे होकर काम करना मगर अपने अपने वजूद को न छोड़ना यह मिलावट मंगल की कहलाती है। बल्कि इस पहले घर वाले ग्रह का असर बाद वाले के लिए बिल्कुल उल्टा होगा। यानि अगर पहले घर वाले का पहले घर में नेक असर था तो बाद के घर के मिलने के बाद वो असर जो नेक या बाद वाले के लिए बुरा ही होगा मगर पहले का खुद अपने लिए जैसा कि वे हो वैसा ही रहेगा।

ग्रह का असर ग्रह में और ग्रह का असर दूसरे ग्रह के घर में और उनका फल

पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर के ग्रह में मिल जाने से मतलब यह होगा कि पहले घर के व बाद के घर के ग्रहों का असर एक ही होगा या बाद के घर के ग्रह में पहले घर के ग्रहों का असर एक ही होगा या बाद के घर के ग्रह में पहले घर के ग्रहों का असर ऐसा मिला कि जुदा न गिना गया। लेकिन इस मिलावट ने बाद के घर में यानि बाद के खाना नः में अपना कोई असर न डाला हो सकता है कि उस बाद के घर में कई ही ग्रह हों पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर सब ग्रहों (जितने भी हो) में जब मिला तो हो सकता है कि अगर वो पहले सबके सब जो बाद के घर में थे दोस्त हो तो जब

(I) इन में से पहले घर के ग्रह की जहर मिली तो वो सबके सब या उनमें से चन्द बाहम या चन्द दूसरों के दुश्मन हो जाएं

(II) उनमें दोस्ती पैदा करने की ताकत का असर मिल जावे तो जो पहले दुश्मन भाव के थे अब बाहम या चन्द दूसरों से दोस्ती का ताल्लुक कर लेवे।

(III) पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर में मिल जावे (ग्रह में नहीं) से मुराद होगी कि बाद के घर के ग्रह अलहदा अलहदा ही रहेंगे। मगर वो मंगल की बनाई हुई मिलावट की तरह अलग-अलग होते हुए भी उस आ मिलने वाले ग्रह के असर का सबूत देंगे क्योंकि इस घर का ही असर आ मिलने वाले ग्रह के असर ने सब के लिए बदल दिया या बाद के घर के ग्रहों के लिए वो खाना नः ही किसी और असर का हो गया यानि इन ग्रहों ने अपना भला असर इस घर की तमाम चीजों पर बदल कर दिया जब ग्रह से ग्रह मिला था तो आखरी तौर पर यह फर्क हुआ था कि पहले घर के ग्रह ने बाद के घर के ग्रह के असर को बदला था। यानि बाद के घर का असर जिसमें कि वो ग्रह (जिसका असर बदला गया) बैठा था सिर्फ अपना ही बदला हुआ असर इस खाना की सिर्फ उन चीजों पर किया जो चीजें कि उस असर बदला जाने वाले ग्रह की और उस घर जिसमें बैठा हुआ कि वो असर में बदला जाने वाला ग्रह था। अगर बहुत ग्रह होंगे इन ग्रहों जिनका असर बदला गया अपने बदले हुए असर फल सबूत सिर्फ उन्हीं चीजें पर दिया जो चीजों कि इस खाना की उन ग्रहों से मुतल्लिक हो मसलन बुध शुक्र दोनों का ही पक्का घर खाना नः 7 है जिसमें उपर से खाना नः 1 का असर मिल सकता है। फर्ज करे कि खाना नः 1 में है सूरज और खाना नः 7 में हो शुक्र और बुध अब सूरज का असर दोनों में ही मिल गया यानि शुक्र और बुध दोनों ही सूरज की तरह चमकने लगे और सूरज का असर नः 7 वालों के लिए अपना पहले घर में उंच हालत का होने की बजाए उल्ट बुरा न होगा और वो असर दोनों ही ग्रहों में दूध में खांड की तरह मिल जावेंगे यह है हालत सौ फीसदी की। दूसरी मिसाल है जब शुक्र हो खाना नः 6 में और मंगल हो खाना नः 12 में दृष्टि में 6, 12 अपने से सातवें है यानि शुक्र नः 6 का जो असर है खाना खाना नः 6 में उसका उल्ट होगा खाना नः 12 में उस ग्रह के लिए जो खाना नः 12 में है वो है मंगल गोया अब मंगल के लिए वो खाना नः 12 सभी चीजों के असर के लिए जो खाना नः 12 की है मूबारिक होगा क्योंकि नः 6 का शुक्र नीच है जब उसका असर नः 12 तमाम चीजों

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

देखता इसी तरह खाना 12 को देखता है मगर 12 वां खाना में अपना असर नहीं [illegible] सकता। [illegible] खाना नः 12 के बुध के [illegible] कि बुध को आकाश माना है और खाना नः 6 पाताल और खाना नः 12 आकाश में भी खाली [illegible] है। [illegible] सकते हैं। खाना नः 8 मौत को पीछे को देखने वाले घर के ग्रह हर आठवें साल [illegible] दे सकते हैं। अपने से बाद के खाने को देखने वाले घर यह है।

देखता है खाना नः 1 से 9 को — बुध के [illegible]

देखता है खाना नः 6 से 12 को — जो जुदा [illegible] है खुशामत खाना नः 3

देखता है खाना नः 8 से 2 को — से नः चार को

देखता हुआ बुध या नः 9 में बैठा हुआ सब ही ग्रह का फल [illegible] कर देता है [illegible] एक तरफ और बुध [illegible] ही मुताबिक पर या उसके दोस्त हों या दुश्मन या वो उसके साथ ही हों या उससे अलहदा मुताबिक पर खाना नः 8 पीछे को देखता है इसी असूल का 8 ने नः 2 को देखा और नः 2 ने नः 6 को तो नः 8 का असर नः 6 में नः 12 के देखा तो नः 8 का असर नः 12 में बना गया या नः 8 अपना असर नः 12 में 25 फीसदी डालता है अब नः 2 में सौ फीसदी नः 8 का असर मिला है और नः 12 में 2, 6 की मारफत 25 फीसदी नः 8 का असर मिला है गोया नः 2 देखता है 25 फीसदी नः 12 को

सौ फीसदी और अपने से बाद के सातवें को देखने का फर्क:

शत प्रतिशत वाला खाना नः अपने से बाद के खाने में दूध खांड की तरह अपना असर ऐसा का वैसा ही मिला देता है मगर अपने से सातवें वाला अपने से बाद के घर के असर को उल्टा कर देता है। गोया दूध का बर्फ ही जमा कर देता है [illegible] दृष्टि का असर तो शत प्रतिशत होता है। फर्क थोड़ा सा यह है कि

1. सौ फीसदी के असर के खाने सिर्फ बंद मुट्ठी के अन्दर के मुकर्रर है (यानि 1, 7, 4, 10) मगर अपने से बाद के खाने बाहर के तिकोनों के घरों से मुकर्रर है। मुट्ठी के अन्दर अपने से सातवें का असूल न होगा और न ही बाहर वालों पर सौ फीसदी (नेक कर देने) का असूल चल सकेगा।

2. जब कोई ग्रह अपने से बाद के घर का सौ फीसदी की नजर से देखता है तो वह देखने वाला ग्रह अपने बाद के घर के ग्रह में (बाद के घर में नहीं) अपना असर मिला देता है कि पहले का असर दूसरे में मिला हुआ मालूम ही न होगा जैसे दूध में खांड ऐसी मिलावट को बुध की मिलावट कहते है और इस पहले घर वाले ग्रह का वही असर रहेगा जैसा कि वो पहले घर में था मगर जब कोई ग्रह अपने से बाद के खाने को देखे तो न सिर्फ देखने वाले ग्रह का असर इस घर (ग्रह में नहीं) ऐसा मिला हुआ होगा जैसे एक टांग बंदे आदमी को दूसरी टांग लगा दी गई (दो चीजों) का इकट्ठे होकर काम करना मगर अपने अपने वजूद को न छोड़ना यह मिलावट मंगल की कहलाती है। बल्कि उस पहले घर वाले ग्रह का असर बाद वाले के लिए बिल्कुल उल्टा होगा। यानि अगर पहले घर वाले का पहले घर में नेक असर था तो बाद के घर के मिलने के बाद वो असर जो नेक या बाद वाले के लिए बुरा ही होगा मगर पहले का खुद अपने लिए जैसा कि वे हो वैसा ही रहेगा।

ग्रह का असर ग्रह में और ग्रह का असर दूसरे ग्रह के घर में और उनका फल

पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर के ग्रह में मिल जाने से मतलब यह होगा कि पहले घर के व बाद के घर के ग्रहों का असर एक ही होगा या बाद के घर के ग्रह में पहले घर के ग्रहों का असर ऐसा मिला कि जुदा न गिना गया। लेकिन इस मिलावट ने बाद के घर में यानि बाद के खाना नः में अपना कोई असर न डाला हो सकता है कि उस बाद के घर में कई ही ग्रह हों पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर सब ग्रहों (जितने भी हों) में जब मिला तो हो सकता है कि अगर वो पहले सबके सब जो बाद के घर में थे दोस्त हों तो जब

(I) इन में से पहले घर के ग्रह की जहर मिली तो वो सबके सब या उनमें से चन्द बाहम या चन्द दूसरों के दुश्मन हो जाएं

(II) उनमें दोस्ती पैदा करने की ताकत का असर मिल जावे तो जो पहले दुश्मन भाव के थे अब बाहम या चन्द दूसरों से दोस्ती का ताल्लुक कर लेंगे।

(III) पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर में मिल जावे (ग्रह में नहीं) से मुराद होगी कि बाद के घर के ग्रह अलहदा अलहदा ही रहेंगे। मगर वो मंगल की बनाई हुई मिलावट की तरह अलग-अलग होते हुए भी उस आ मिलने वाले ग्रह के असर का सबूत देंगे क्योंकि इस घर का ही असर आ मिलने वाले ग्रह के असर ने सब के लिए बदल दिया या बाद के घर के ग्रहों के लिए तो खाना नः ही मिली और असर का हो गया यानि इन ग्रहों ने अपना भला असर इस घर की तमाम चीजों पर बदल कर दिया जब ग्रह से ग्रह मिला था तो असली तौर पर यह फर्क हुआ था कि पहले घर के ग्रह ने बाद के घर के ग्रह के असर को बदला था। यानि बाद के घर का असर जिसमें कि तो ग्रह (जिसका असर बदला गया) बैठा था सिर्फ अपना ही बदला हुआ असर इस खाना की सिर्फ उन चीजों पर किया जो चीजें कि उस असर बदला जाने वाले ग्रह की और उस घर जिसमें बैठा हुआ कि वो असर में बदला जाने वाला ग्रह था। अगर बहुत ग्रह होंगे इन ग्रहों जिसका असर बदला गया अपने बदले हुए असर का सबूत सिर्फ उन्हीं चीजें पर दिया जो चीजें कि इस खाना की उन ग्रहों से मुताल्लिक हों मसलन बुध शुक्र दोनों का ही परका घर खाना नः 7 है जिसमें उपर से खाना नः 1 का असर मिल सकता है। फर्ज करें कि खाना नः 1 में है सूरज और खाना नः 7 में हो शुक्र और बुध अब सूरज का असर दोनों में ही मिल गया यानि शुक्र और बुध दोनों ही सूरज की तरह [illegible] और सूरज का असर नः 7 वालों के लिए अपना पहले घर में ऊंच हालत का होने की बजाए उल्टा बुरा न होगा और वो असर दोनों ही ग्रहों में दूध में खांड की तरह मिल जावेंगे यह है हालत सौ फीसदी की। दूसरी मिसाल है जब शुक्र हो खाना नः 6 में और मंगल हो खाना नः 12 में दृष्टि में 6, 12 अपने से सातवें है यानि शुक्र नः 6 का जो असर है खाना खाना नः 6 में उसका उल्टा होगा खाना नः 12 में उस ग्रह के लिए जो खाना नः 12 में है तो है मंगल गोया अब मंगल के लिए वो खाना नः 12 सभी चीजों के असर के लिए जो खाना नः 12 की है भयानक होगा क्योंकि नः 6 का शुक्र नीच है जब इसका असर नः 12 तमाम चीजों

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

मंगल के लिए ऊंच फल की ही होगी मगर यह ऊंच फल किसके लिए होगा मंगल के लिए जो खाना नः 12 का है यानि कुंडली वाले के भाई मंगल का गृहस्थ का सुख उस भाई के लिए उम्दा होगा मगर कुंडली वाले के शुक्र (औरत) का फल वैसे का वैसा ही मन्दा और नीच होगा।

संक्षप्तिः सौ फीसदी की मिलावट की हालत में कुंडली वाले को जाती अच्छा बुरा असर मिलेगा मगर अपने से सातवें की दृष्टि असर करेगी बाद के घर पर जिसकी वजह से उस घर का जो ग्रह उस कुंडली वाले का जैसा भी ताल्लुक दार हो वे उस पर असर देगी। मगर कुंडली वाले पर सीधा असर न होगा मसलन बाद के घर में सातवीं मिलावट की हालत में शुक्र है तो असर होगा बाद के घर का शुक्र पर उल्ट कर दिया औरतजात के ताल्लुक दार या कुंडली वाले के ससुराल वगैरा पर अपने असर का उल्ट असर होता होगा अगर पहले घर का कुंडली वाले को मंदा फल मिल रहा है तो उस मन्दे फल का उल्टा अच्छा फल मिलता जाएगा कुंडली वाले के उस ग्रह के मुतल्लका रिश्तेदार को जो बाद के घर के ग्रह से कुंडली वाले के साथ सम्बन्ध रखता हो यानि मंगल हो तो भाई बुध हो तो बहिन वगैरा।

सेहत बीमारी, शादी, औलाद, मकान वगैरा खारा खारा चीजों के लिए दृष्टि

घर अपने से पांचवे दोस्त, सातवें उल्टे होते हैं
आठवें घर पर टक्कर खाते, बुनियाद नींवे पर होते है
तीसरे घर के जुदा-जुदा तो, बुध से वो आ मिलते हैं
घर दस पर बाहम दुश्मन धोका देते या चक्कर है
नर ग्रह बोलते जुफ्त के घर में, स्त्री बोलने ताक में है

बुध है बोलता 3, 6 में तो, पापी नहीं बोलते 2 में है

स्त्री ग्रह शुक्र चन्द्र

दो घरों के दरम्यान जब घर होवे तीन 5वां दोनों खानों के ग्रह बाहम मददगार होंगे या दोस्त हों या दुश्मन 5(7वां) देखने वाले के ग्रह देखा जाने वाले घर पर बैठा होने वाले घर के असर का उल्ट असर देंगे या उल्टा असर देंगे। बन्द मुट्ठी की शर्तें जुदा होंगी 6(8वां) दोनों घरों के ग्रह बाहम टकराव पर होंगे सिवाय खाना नः 9 के जिनमें कोहसार और समुन्दर की तरह का टकराव बारिश करवाने का फायदा कर रहा होगा बाकी सब टकराव के घरों में मन्दा असर होगा 7(9वां) दोनों घरों के ग्रह बाहम साधारण दोस्ती या दुश्मनी जो भी होवे।

आठवां और दसवां दोनों घरों के ग्रह बाहम दुश्मनी पर होंगे मसलन खाना नः 9 से नः6 तक दरम्यनी खाने खाली होंगे। (10 से 12 = 3, 1 से 6 = 5) और फर्जन नः 9 में शनिच्चर जो नः 9 में निहायत मुबारिक और 60 साला असर का है। नः 6 में बुध है जो बजाते खुद नः 6 में ऊंच या राजयोग है लेकिन अब अगर खाना नः 6 वाले यानि टेवे वाले के मामू वगैरा सिर्फ बुध के मुतल्लका कारोबार ही करे तो वो काम करने के लिए राजयोग होंगे लेकिन अगर वही मामू वगैरा शनिच्चर के मुतल्लका कारोबार करें तो वह बरबाद होंगे। बजाते खुद नः 9 वालों के लिए यानि इसके बुर्जगों के लिए शनिच्चर का फल उतम ही होगा और नः 6 वाले (मामू वगैरा) बुध के काम मुबारिक होंगे इस दुश्मनी का टेवे वाले पर कोई बुरा असर न होगा। अगर कोई होगा तो शनिच्चर का नः 6 के घर के ताल्लुक वालों पर मन्दा होगा। मिसाल खाना नः 1 से 5 के दरम्यान घर होंगे 11, 12 से 4 यानि कुल 6 घर मगर खाना नः 5 से 10 तक दरम्यान के घर होंगे। 6 से 9 या कुल चार घर यानि खाना नः 10 देख सकेगा नः 5 को मगर नः 5 नहीं देख सकता नः 10 के सिवाय नः 5 के चन्द्र को जो नः 10 के लिए जहर होगा आमतौर ये पहले घरों के ग्रह दूसरे घर वालों को देखा करते है। (सिवाय खाना नः 8) लेकिन खाली खानों की हालत में सोए हुए घर या सोए ग्रह देखने के लिए ऊपर की शर्त आगे पीछे दोनों ही तरफ चला कर देखी जाएगी।

योग दृष्टि बवक्त सेहत बीमारी

नर ग्रह बोलते जुफ्त के घर में, स्त्री बोलते ताक में है
बुध है बोलता 3,6 में तो पापी नहीं बोलते दो में है।

NEXT PAGE पर CHART I, II दो!

योग दृष्टि

बाहमी (पारस्पारिक सहायता) मदद चाहे दो घरों के ग्रह परस्पर दोस्त हो या दुश्मन मगर करेंगे एक दूसरे की मदद ही।

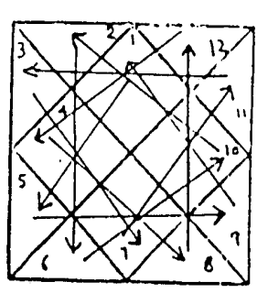

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

खाना	दृष्टि	बाहम मदद	आम हालत	टकराव	बुनियादी	धोका	मुश्तरका दिनार		अचानक चोट		निशान	
1	A	5	7	8	9	10	2	4	3	7	11	D
	B	9	7	6	5	4	12	10				
2	A	6	8	9	10	11	3		4			E
	B	10	8	7	6	5	1					
3	A	7	9	10	11	12	4		1			F
	B	11	9	8	7	6	2					
4	A	8	10	11	12	1	5	7	10	6	2	H
	B	12	10	9	8	7	3	1				
5	A	5	11	12	1	2	6		7			G
	B	1	11	10	9	8	4					
6	A	10	12	1	2	3	7		4			K
	B	2	12	11	10	9	5					
7	A	11	1	2	3	4	8	10	1	5	9	L
	B	3	1	12	11	10	6	4				
8	A	12	2	3	9	5	9	2	10			M
	B	4	2	1	12	11	7					
9	A	1	3	4	5	6	10		7			N
	B	5	3	2	1	12	8					
10	A	2	4	5	6	7	11	11	4	8	12	P
	B	6	4	3	2	1	9	7				
11	A	3	5	6	7	8	12		1			Q
	B	7	5	4	3	2	10					
12	A	4	6	7	8	9	1		10			R
	B	8	6	5	4	3	11					

A देख सकता है खाने को

B देखा जा सकता है खाना नः से

Free by AstroStudio

ग्रहों की बाहम दृष्टि के वक्त उनके मुश्तरका असर की मिकदार

हर देखा जाने वाले या दूसरे हमसाया मुश्तरका होने वाले ग्रह की ताकत होगी

कायम हो या देखता होवे	बृहस्पत	सूरज	चन्द्र	शुक्र	मंगल	बुध	शनि	राहु	केतु
बृहस्पत	..	2	1/2		2/1	2/1	3/1	2/1	5/6
सूरज	2/3	..	3/4	3/4	3/1	1/2		ग्रहण	1/2
चन्द्र	2/1	2/1	..	2/1	2/2	2/1	1/3	1/2	ग्रहण
शुक्र	1/2	3/4	1/2	..	4/3	3/3	1/3	2/1	2/1
मंगल	2/1	2	2/1	1/3	1/3	2/1	4/3	0/1	1/2
बुध	1/2	2/1	1/2	2/2	2/2	..	5/4	2/1	1/4
शनि	5/4		1/3	4/3	1/3	4/5	..	2/1	1/2
राहु	0/1	ग्रहण	1/2	1/2	2/2	2/1	2/1	..	2/2
केतु	2/1	1/2	1/2	ग्रहण	2/1	1/2	3/4	2/1	2/2

दोस्ती दुश्मनी का भाव नेक व बुरे हिस्से कि मिकदार होगी मध्यमान अनुपात
दे अंकों में रकम का ऊपर का भाग देखा जाने वाले ग्रह के असर की
मिकदार और नीचे का भाग देखने वाले के असर की मिकदार होगी।
सिर्फ एक ही भाग से पूरा पूरा अंक देखा जाने वाला ग्रह की ताकत से मुराद होगी।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

योग दृष्टि की सूचि के खाना निशान में D के खाना नः 1 के सामने दृष्टि के खाना में शब्द A और B लिखने में और खाना नः बाहमी मदद के नीचे शब्द A के सामने अंक नः 5 लिखा है और शब्द B के सामने अंक नः 9 लिखा है यह भी योग दृष्टि में लिखा हुआ कि शब्द A से मुराद होती है कि देख सकता है खाना नः 5 को पारस्पारिक सहायता के लिए इसी तरह ही वही खाना नः 1 देखा जा सकता है खाना नः 9 से यानि खाना नः 9 सहायता दे सकता है खाना नः 1 को 1 दूसरे शब्दों में सिंहासन पर विराजमान राजा को खाना नः 9 के ग्रह सहायता दे सकते है चाहे वह (9 व खाना नः1 वो) परस्पर मित्र हो या शत्रु और स्वयं खाना नः 1 का ग्रह सहायता देगा खना नः 5 को चाहे परस्पर मित्र हो अथवा दुश्मन।

आम हालत

इस अवस्था में बैठे हुए ग्रहों की वही दृष्टि इत्यादि की अवस्था होगी जो कि आम हालत में हुआ करती है यानि 1, 7, 4, 10 या 5, 9, 3, 11 वगैरा वगैरा अब पारस्पारिक मित्रता शत्रुता का सिद्धांत कायम रहेगा।

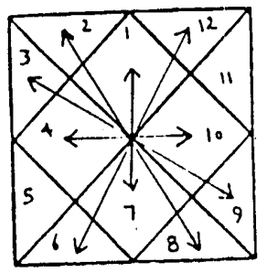

टकराव

दो भिन्न भिन्न घरों के ग्रह चाहे आपस में मित्र हों चाहे शत्रु मगर ऐसी हालत में आ बैठने के समय जरूर आपस में टकराव पैदा करेंगे यानि लड़ाई झगड़ा या एक ग्रह दूसरे का बुरा ही करेगा बेशक आम असूल पर वह बाहम कितने ही दोस्त हो ऐसी टक्कर मारेंगे कि दूसरे की जड़ तक

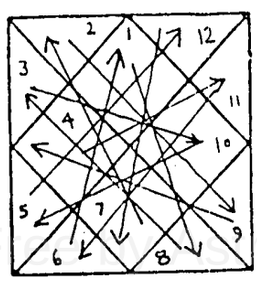

Free Astrostudents

काट देगें।
1 मारेगा टक्कर 8 को
6 मारेगा टक्कर 1 को

बुनियाद

चाहे परस्पर मित्र हो या न हो मगर एक दूसरे को पूरी और पक्की बुनियाद की तरह मदद ही देगे या एक के असूल की वही बुनियाद होगी जो कि दूसरे की हो या दोनों घरों के ग्रह आपस में एक दूसरे को बाहम बुनियाद बनकर चलते-चलाते और मदद देते रहेंगे।

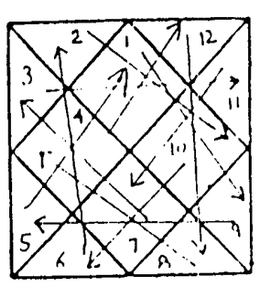

9 वीं दृष्टि पक्की बुनियाद की तरह मदद

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

धोका

अब यह ग्रह दुगनी ताकत के होंगे अच्छे या बुरे। बात का फैसला पक्के घर नः 10 में धोका के ग्रह के मुतल्लक दिए हुए अगूल पर होगा

अपने से 10 वीं दृष्टि धोका

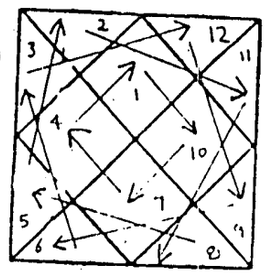

मुश्तरका दीवार

दो घरों में जुदा जुदा बैठे हुए दो दोस्त ग्रह आपस में मिले हुए ही गिने जाते हैं मगर दो दुश्मन हमेशा जुदा जुदा ही गिने जाएँगे या दो दोस्त ग्रहों के बैठे हुए घरों के दरम्यान की दीवार नहीं गिना करते मगर दुश्मन व दीवार की वजह से बाहम इकट्ठे होकर लड़ाई नहीं बढ़ा सकते। यह असूल तो है सिर्फ एक साथ ही लगते हुए दूसरे घर की हालत में मगर मगर योग दृष्टि के वक्त दूर दूर घरों के ग्रह भी हूबहू वैसे ही गिने जायेंगे।

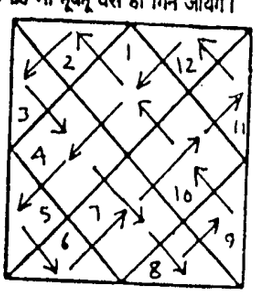

Free by Astrostudents

अचानक चोट

परस्पर मित्र हो या शत्रु जब कभी भी अवसर मिले ऐसी चोट मार देंगे कि चोट खाने वाला सोच ही न सके कि किसने चोट मारी थी और यह चोट कोई हर रोज या हर साल न होगी मगर होगी अचानक फौरन और झटपट दम के दम और हानि कर देगी माल और जान दोनों ही का इस सीमा तक जिस का किसी को ख्याल भी न हो सकता हो।

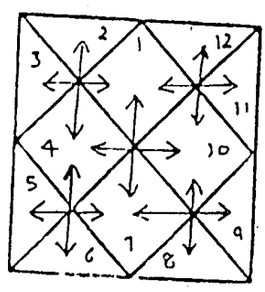

कुंडली में पहले या बाद के घरों के ग्रह

नः 1 दृष्टि और 1, 2, 3 हद 12 की तरतीब (क्रम) से जो घर या खाने पहले आ जावें उनमें बैठे हुए ग्रह पहले घरों के होंगे। यानि जो ग्रह दूसरे ग्रहों को देखते हो और हो भी गिनती की तरतीब में पहले नम्बरों के तो वह पहले घरों के कहलाएँगे। उदाहरण के रूप में अगर ग्रह स्थित हो।

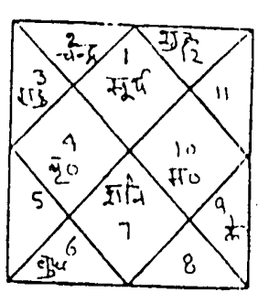

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

तो सूरज खाना नः 1 वाले को कहेंगे कि वह शनिच्चर खाना नः 7 वो से पहले घरों का है। बृहस्पत खाना नः 4 वाले को मंगल खाना नः 10 वाले से पहले घरों का कहेंगे। अब मंगल से सूरज बृहस्पत शनि हर एक या तीनों गिनती में तो जरूर पहले नम्बर पर है मगर मंगल से पहले घरों के ग्रह से मुराद सिर्फ बृहस्पति से होगी या मंगल अब बृहस्पत के बाद के घरों का ग्रह है क्योंकि खाना नः 1 का सूरज और खाना नः 7 का शनिच्चर दृष्टि के असूल पर खाना नः 10 के मंगल को नहीं देख सकता। एक ही घर का ग्रह जब दो और घरों को देखे मसलन खाना नः 3 देखता है खाना नः 9 और खाना नः 11 को अब खाना नः 9, 11 दोनों ही घरों के ग्रह खाना नः 3 में बैठे हुए ग्रह से बाद के घरों के ग्रह होंगे। इसी तरह ही जब कहें कि चन्द्र दुश्मनी करता है शुक्र से तो मुराद होगी कि चन्द्र से पहले घरों में शुक्र है

2 कुंडली के पहले घरों के ग्रह अपने से बाद के घरों में अपना असर मिलाया करते हैं। सिवाय खाना नः 8 जिसके ग्रह पीछे को देखते या अपने से पहले घरों में अपना असर मिला देते हैं ऐसी हालत में जब तक पीछे से बाद के घरों में किसी ग्रह का बुरा असर आना बन्द न हो जावे या पहले घरों के बुरे ग्रह की अवधि तक बाद के घरों के ग्रहों का असर नेक न होगा यही असूल खाना नः 8 के ग्रहों का नः 2 के ग्रहों के लिए होगा। मित्रता, शत्रुता करता है देखता है दृष्टि के वक्त कुंडली के खानों में 1, 2, 3 वगैरा की, तरतीब से पहले घरों का ग्रह अपने बाद के घरों से दोस्ती दुश्मनी करता कहलाता है। सिवाय खाना नः 8 के जो खाना नः 2 को (पीछे की तरफ) देखता है

उलझन के ग्रह

जिनकी यदाकदा ही आवश्यकता पड़ेगी या ऐसी ग्रह चाल जिसके देखे बगैर ही काम चल सकेगा। क्योंकि ऐसे देवे वाले प्राणी पुरानी पीढ़ी दर पीढ़ी मंदी हालत में होते चले आने के कारण संसार में रह ही कहां सकते है। संसार में ऐसा प्राणी जो जन्म से या किसी एक विशेष दिन से वर्षों ही वर्षों निरन्तर मन्दा पे मन्दा जमाना देखता चला आवे वह कहां तक जमाने का मुकाबला करके अपनी जिंदगी कायम रखता चला आ रहा होगा।

उलझन के ग्रह

राशि ग्रह जड़ है

उलझन के ग्रह

ऋण पितृ के ग्रह

ऋण पितृ से ~~तात्पर्य~~ कुंडली वाले पर उसके अपने पूर्वजों के पाप का गुप्त प्रभाव होता है ~~अथवा~~ गुनाह कोई करे, मगर सजा उसकी कोई और भुगते मगर भुगतेगा उस गुनाह करने का वास्तविक रिश्तेदार ही।

घर नींव हो ग्रह कोई बैठा, बुध बैठा जड़ साथी जो
ऋण पितृ उस घर से होगा, असर ग्रह सब निष्फल हो,

साथी ग्रह जब जड़ कोई काटे, दृष्टि मगर वो छुपता हो
5, 12, 2, 9 कोई मन्दे, ऋण पितृ बन जाता हो,
बुध की नाली की दृष्टि बवक्त ऋण पितृ
असर ग्रह घर तीसरा पहले, बुध नाली जब मिलता हो
बुध ग्रह घर दोनों रद्दी, शत्रु मित्र ख्वाह बैठा हो
हाल मन्दा न तीन का होगा, मिला असर ख्वाह तीसरे हो
बुध मिले खुद देवे ऐसा, बदल असर सब देवे वो

जन्म कुंडली में जिस ग्रह की जड़ उसकी अपनी राशि में उसका दुश्मन ग्रह बैठकर उस का फल रद्दी कर रहा हो और साथ ही वो ग्रह खुद भी मन्दा हो रहा हो तो ऋण पितृ होगा जिसकी आम निशानी यह होगी कि बाप बेटे भाई वगैरा सबके सब या कई एक की जन्म कुंडलियों में मन्दा ग्रह एक ही या ऐसे किसी दूसरे घर में जहां कि वो ग्रह पूरा मन्दा गिना जा रहा हो प्रगट होता चला आ रहा होगा। मसलन राहू नः 11 शनि 4 या 6 या बुध 2 या तीन आठ 11, 12 उस खानदान में कई एक ही जनम कुंडलियों में जाहिर या प्रगट होता चला आ रहा होगा। वास्तव में यह दशा खाना नः 9 के ग्रहों से अभिप्राय होता है। यानि जब उस घर में या उस घर के स्वामी ग्रह यानि बृहस्पत के कि दूसरे घर में कोई और ग्रह एक या एक से ज्यादा बैठे हुए आपस में दुश्मनी पर होगा या वो आपस में या अलग अलग बृहस्पत की ताकत को खराब करते या बृहस्पत के असर में जहर मिलाते हो तो पितृ ऋण होगा। राहू को बृहस्पत के चुप कराने वाला गिना है वो अगर बृहस्पत का मुंह बन्द करके खुद मन्दी हालत का असर बृहस्पत के तान्ल्लुक से (यानि या तो वो बृहसपत के घरों में हो या बृहस्पत के पक्के घर में) देवे तो भी पितृ ऋण का योग होगा। इसी तरह और ग्रह भी यानि चन्द्र की खराबी से मातृ पक्ष के मातृ ऋण का वगैरा का बहाना हो सकते है। ऐसे शख्स के (कुंडली वाले के) अपने ग्रह ख्वाह लाख राजयोग वाले ही क्यों न हो बुरा असर दो ग्रहों का ही होगा। और उपाय भी दो ही ग्रहों का करता होगा। मान लें उदाहरणता कुंडली वाले के बाप ने बिला वजह अकारण कुत्ते मारे या मरवाए तो कुंडली वाले पर बृहस्पत और केतु दो ही ग्रहों का पितृ ऋण होगा जो कुंडली वाले पर उसकी सोलह से चौबीस साल उम्र तक कुंडली वालों की बालिग होने की उम्र से 16-24 साल तक रह सकता है।

इसी तरह ही बाकी सब ग्रहों का उपाय होगा। यानि एक तो उस ग्रह का उपाय करेंगे जो खुद निकम्मा हो गया और दूसरे उसे ग्रह का उपाय करेंगे जो उसके जड़ की राशि में बैठकर उसको निकम्मा कर रहा हो उदाहरणता बृहस्पत नः 9 में बैठा राहू नः 2 या 11 में बैठ जाए तो एक उपाय तो नः 2 या 11 में राहू की मन्दी हालत के सामय करने को लिखा है वो करेंगे। और दूसरा उपाय वह होगा जो बृहस्पत नः 9 बरबाद होने के वक्त पर सहायक होगा लिखा है।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

उपाय अवधि के लिए ग्रह का उपाय के हाल में देखे, यानि 40/43 दिनों की बजाए 40/43 सप्ताह लगातार होगा। जब तमाम के तमाम खानदान की भलाई के लिए करना हो। ध्यान रहे एक समय में दो उपाय चालू कर देने उचित न होंगे क्योंकि ऐसा करने से किसी भी उपाय का फल प्राप्त न होगा इसलिए पहले एक उपाय 40/43 दिन हफ्ते करें फिर कुछ दिन/हफ्ते खाली छोड़ दे फिर उसके बाद दूसरा उपाय 40/43 दिन हफ्ते लगातर करे।

2. राहू केतु की स्वयं अपनी मन्दी हालत या नीच हालत (राहू नः 12 केतु नः 6) या 2, 8 में कोई तमाम सहायक ग्रह न हो तो ऋण पितृ की हालत में सिर्फ दुनिया की माया पर बोझ (मन्दा असर होगा) बाकी किसी तरफ से भी मन्दा असर न होगा।

3. ऋण पितृ के वक्त स्वयं उस ग्रह का जो मन्दा हो गया हो और जिस ग्रह ने जड़ राशि से बर्बाद किया हो दोनों ही उपाय और दोनों ही की मीयद तक करना लाभदायक होगा।

क्रमांक	ग्रह का नाम	किस खाना में	कौन साथ दुश्मन ग्रह बैठा हो	ऋण की प्रकार	वजह पाप	साधारण चिन्ह और बयाफा के लिए
1.	बृहस्पत	2, 5, 9 12	शुक्र बुध राहू	ऋण पितृ	पूर्वजों का पाप, खानदानी कुल पुरोहित बदला गया होगा या वजह लावल्दी खानदान नाराजगी	हम साया धर्ममन्दिर या बृहस्पत से सम्बन्धित वस्तुएं पीपल को तबाह बरबाद ही कर चुके या करते होंगे।
2.	सूरज	5	शुक्र या पापी ग्रह	जाती ऋण	अन्त खराब, नास्तिक पन, पुराने रस्मों रिवाज जिन्दुल न मानना निन्दा भर्त्सना करना	उस घर में जमीन दोज अग्नि कुंड आम होंगे या आसमान की तरफ से रोशनी के रास्ते आम होंगे
3.	चन्द्र	4	केतु	मातृ ऋण	माता आदमी नीयत बद अपनी औलाद पैदा होने के बाद अपनी माता के दरबर अलहदा या दुखिया करना या इसका अपने आखरी दुखिया हो जाने पर ध्यान न देना	हम साया कुआं दरिया नदी नाला पूजने की बजाय घर का मंदा मादा बहाने का जरिया बनाया जा रहा होगा
4.	शुक्र	2, 7	सूरज राहू चन्द्र	स्त्री ऋण	कुटुम्बी पेटा मार स्त्री को प्रसूति के समय लालच वश जान से खत्म कर देना	उस घर में दांतों वाले जानवरों का पालन विशेषकर गाय को पालना या अपने घर में रखने से खानदानी नफरत का निदम चलता होगा।
5.	मंगल	1, 8	बुध केतु	रिश्तेदारी का ऋण	मित्र द्रोह जहर के वारयात करना फर्जी खेती को आग लगाना बच्चा आई भैंस का मारना या मरवा देना	रिश्तेदारों के मिलने बरतने से नफरत बच्चों की पैदाय, दिन त्यौहार के समय खुशी मनाने से गुरेज
6.	बुध	3, 6	चन्द्र	बेटी बहन का ऋण	जवानी धोखा किसी की पुत्री और बहन की हत्या या हद से ज्यादा जुल्म करना।	मामूर, कम उम्र या गुमराह बच्चों का बेचना लड़की लड़के का लालच में तबादला को उचित समझना

Free by Astro students

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

7.	शनि	10, 11	सूरज चन्द्र मंगल	जालिमाना ऋण	जीव हत्या, मकान शनि से सम्बन्धित वस्तुएं धोखा से ले लेना पर कीमत किसी तरह से अदा न करना।	घर के मकानों का बड़ा रास्ता साधारणतया दक्षिण में होगा या सन्तान विहीन लोगों से जगह लेकर मकान बनाया होगा या रास्ता या कुंआ छत कर महल बनाए होंगे
8.	राहू	12	सूरज शुक्र मंगल	अनजन्मे ऋण	ससुराल या आपसी पारस्पारिक सांसारिक रिश्तेदारों धोखा फरेब या दगा की घटनाएं ऐसे ढ़ग से किए दो कि उनका कुल ही गर्क हो जाए।	घर से बाहर निकले हुए दरवाजे की दहलीज के नीचे घर का गन्दा पानी बाहर निकालने के लिए नाली चलती होगी या दक्षिणा की दीवार के साथ उजाड़ वीरान कब्रिस्तान या भड़भूजे की भट्ठी होगी
9.	केतु	6	चन्द्र मंगल	दरगाही ऋण कुदरती	कुत्ता, फकीर बदचलनी, बदफेली मगर ऐसे ढ़ग से कि दूसरों की गरीब कुत्ते की तरह हद से ज्यादा दुर्दशा या तबाही हो जावे और ऐसी कारवाईयों में नीयत बद की बुनियाद हो	दूसरों की नर औलाद किसी न किसी गुप्त या गुमनाम बहाने से जाया करवाना कुत्तों को बिना वजह गोली से मरवाना या केतु से सम्बन्धित दूसरी वस्तुओं या रिश्तेदारों की लालच के कारण कुल नष्ट करना या करवा देना हर हालत में नीयत बद बुनियाद गिनते है।

Free Astro Readers

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

~~पितृ~~ पितृ ऋण की प्रथम अवस्था हालत

(जब बुध जड़ में बैठा हो)

~~(सबसे ग्रह)~~

1. बृहस्पत हो खाना नः 9 और बुध हो खाना नः 12
   सूरज हो खाना नः 9 औकर बुध हो खाना नः 5
   चन्द्र हो खाना नः 9 और बुध हो खाना नः 4
   शुक्र हो खाना नः 9 और बुध हो खाना नः 2, 7
   मंगल हो खाना नः 9 और बुध हो खाना नः 1, 8
   शनि हो खाना नः 9 और बुध हो खाना नः 10, 11
   राहू हो खाना नः 9 और बुध हो खाना नः 12
   केतु हो खाना नः 9 और बुध हो खाना नः 6

~~द्वितीय अवस्था~~ ऋण (पितृ की दूसरी हालत

क्रमांक (जब ग्रह कुंडली की जड़ के इस कारकत्व ग्रह बैठा हो)

1.	बृहस्पत खाना नः 2, 3, 5, 6 9, 12 से बाहर कहीं भी हो	और नः 2 में शनि ~~बुध~~ वा हैसियत पापी ~~ग्रह~~ ~~ग्रह के रूप में अथवा~~ बैठा नः 5 में शुक्र अथवा नः 5 में बुध या नः 12 में राहू या नः 3, 6 बुध, शुक्र या शनि बाहैसियत पापी ग्रह
2.	सूरज खाना नः 1 और 11 बाहर हो	और नः 5 में शुक्र या पापी ग्रह
3.	चन्द्र खाना नः 4 से बाहर	और नः 4 में शुक्र बुध शनि हो तो पितृ ऋण की द्वितीय अवस्था होगी।
4.	शुक्र 1, 8 से बाहर	और 2, 7 में सूरज चन्द्र राहू में से कोई एक या अधिक
5.	मंगल खाना नः 7 से बाहर	और 1, 8 में बुध केतु
6.	बुध खाना नः 2, 12 से बाहर	और 3, 6 में चन्द्र
7.	शनि खाना नः 3, 4 से बाहर	और 10, 11 में सूरज चन्द्र मंगल
8.	राहू खाना नः 6 से बाहर	और खाना नः 12 सूरज शुक्र मंगल
9.	केतु खाना नः 2 से बाहर	और खाना नः 6 में चन्द्र मंगल

जन्मकुंडली की कई घरों की हालत

जन्म कुंडली के अनुसार ऊपर ~~लिखित कर~~ दो अवस्थाओं में खाना नः 2, 5, 9, 12 की मन्दी हालत की जरूर साथ हो तो ऋण पितृ होगा अन्यथा कोई या किसी भी किस्म का ऋण पितृ या मातृ या कोई और ऋण न होगा। ख्याल रहे किस ऋण पितृ हमेशा जन्म कुंडली से देखा जाएगा वर्षफल वाली कुंडली का इसके कोई सम्बन्ध होगा।

ऋण का अर्थ है कर्जा पितृ का अर्थ है बुजुर्गों से सम्बन्धित या ऐसा पाप किया था बजुर्गों ने पर उसका एवज भरना पड़ा मौजूदा पुश्तों को ग्रह से सम्बन्धित आशिया या रिश्तेदारों या कारोबार का उस हद तक नुकसान कर देना कि मुर्वालिक का बेड़ा ही गर्क हो जाने की नौबत आ जावे। ऐसे वक्त के दुखिय के दिल का धुआं पितृ ऋण के बहाना होगा।

Free by AstroStudents

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

पितृ ऋण के बुरे ग्रहों का प्रभाव वा उपाय

1. बृहस्पतिः-

जब बाल स्याद से सफेद होने लगे। किस्मत बदलती नजर आएगी सोना पीतल हो जाएगा। इज्जत अकारन अपमान का बहाना होगी। जो कार्य स्वतः हो रहे थे अब जान तोड़ जोर लगाने पर भी नेक फल न देंगे। दुःख की अवस्था होगी।

कुल खानदान के हर एक मेम्बर जहां तक कि खून का असर हो हर एक से एक-एक पैसा वसूल करके धर्म मन्दिर में एक ही दिन देना या उनके खानदानी घर से बाहर निकलने के दरवाजे पर अटक जाए मुंह बाहर को पीठ मकान के अन्दर को है अब जिधर नजर जा रहीहै या जिधर बायां हाथ है इन दोनों तरफों में सोतरह इन्दन के अन्दर बृहस्पति की वस्तुएं धर्म मन्दिर या पीपल का दरख्त मौजूद होगा उसकी पालना

2. सूरजः-

जो भी जवान हुआ या जवानी ने सर उठाया उसका जिस्म सर और पांव राजदरबारी हवाओं के मन्दे झोंकों से तंग आने लगे बढ़ती जवानी में दुख और गरीबी आकर मिलने लगे बचपन की उम्मीदें खत्म हो जाए। मुकद्दमा किसी का कर्ज किसी का डिग्री किसी और के नाम मगर वसूली हंडे के साथ इस प्राणी से होने की नौबत आ जाए किसी ने न देखा कि दरअसल कसूर किस का है सब को यही मालूम होता गया कि उसके बाजू में जो दर्द हो रहा है वो उसके जिगर की खराबी का बहाना है इसलिए दिल और जिगर का आपरेशन होना चाहिए या आंखे तकलीफ में हो मगर राजदरबारी हा० ने अपनी दलील बाजी को हर तरह से साबित करते हुए उस प्राणी के सभी दांत निकलना कर कर्ज का हलवा खाने के लिए मजबूर कर लिया गर्ज कि हियाकत और दिल की तमनाओं की आहें उठती जवानी से बुढ़ापे के शुरू उसकी आधाएं (38 साल की उम्र तक) जिस्म के अन्दर दबी हुई या कफन में लिपट कर रह जाती है। और ज्यूं अंग कमजोर होते है सिर हिलने लगता है शन्ति की कुछ ठंडी हवा के झोंके आने लगते है और वो भी वक्त जब कोई बच्चा या पोता 11 महीने या 11 साल की आयु पर आ पहुंचता है

कुल खानदान के हर एक मेम्बर जहां तक की खून का असर हो उन सबका बराबर और मुश्तरका हिस्सा लेकर यज्ञ करना।

चन्द्रः-

जब भी ऐसा प्राणी तालीम से ताल्लुक करे या दूध के जानवर उसे से सम्बन्धित हो जावे या ऐसी कीमती दूध पिलाने लगे (बच्चे वाली होकर) चांदी का पैसा, घड़े का पानी दिल की शान्ति रात का आराम, आमदन का फौव्वारा, घर का दूध, दुनियावी यार दोस्तों या सम्बन्धियों की गैबी मदद रेशम के सफेद रंग की बजाए दीवारों पर रंग बदलने के लिए मिट्टी की सफेदी में तब्दील होने लगे। हर चन्द कोशिश जिस किसी ने भी हिम्मत की, तालीम का जवाब निकम्मा ही रहा रुपया जमा किया तो वह किसी मुर्दे के कफनो, रिश्तेदारों की बिमारियों, या दूसरे नाहक जजिये व जुर्मानों में ही खर्च होता देखा गया और कभी ऐसा वक्त न पाया गया जब दिल ने स्वयं खुश होकर पीने के लिए दूध मांगा हो या किसी दूसरे साथी को बगैर मांगे बिला मतलब खुद-बखुद अपनी खुशी से दूध पिलाया अगर कहीं हुआ होगा तो दूसरे की पगड़ी या दोस्त के जूते का मुफ्त उड़ाने की ख्वाहिश ही पैदा हुई होगी।

कुल खानदान हर एक मेम्बर जहां तक कि खून का असर हो उन सब से बराबर हिस्सा की चांदी लेकर दरिया में एक ही दिन बहा दी जाए।

शुक्रः-

शादी हुई या होने के लिए बाजे बजने लगे जिस्म को धोया, बनाया जिल्द चमकने लगी खूबसूरती ने साथ दिया औरत या खविन्द बन बैठे मगर वसल की रात शादी का फल (औलाद नरीना और दुनियावी जाहिरदारी का नतीजा कभी भला न पाया गया) कहीं जिन्द में कोढ़, फलयहरी वगैरा खुशी के वक्त मातम का साथ यानि इधर शादी हो रही हो उधर उसी वक्त ही या इसके लगभग उन्हीं का कोई मुर्दा जल रहा या जलाने के लिए तैयार होगा। अगर कोई फरह होती होगी तो किसी न किसी का कफन खरीदा गया होगा। बहरहाल खुशी के फल में गमी का कयीज मिल रहा होगा मगर पता न चला कि शादी शुदा औरत मर्द में असल भाग्यवान कौन था जिसके ऐसे शुभ कान होते ही घर में बन्दर केला (एक खेल) आजमा और जमी हुई मिट्टी उड़कर सिर पर पड़ने लगी, और गौ और माता दोनों ही रात को बिलकने लगी एक चूड़ी टूटी दूसरी को तोड़ने की कोशिश की गई या कई एक थमते-थमते ही खुद-बखुद टूट गई मगर भेद न खुला कि वह मर्द था या औरत जिसके खूबसूरती को देखते ही हर एक ने ऐसे आंसू बहाए जो जाहिर न हुए कि वह बेहद खुशी के थे या मातम में जले हुए दिल की भाप का पानी जो दिल से उछल कर बाहर कतरे-कतरे होकर बहने लगा।

सौ गऊओं को जो कि अंधी हीन न हो कुल खानदान के बराबर 2 मुश्तरका खर्च पर एक ही दिन में लजीज भोजन वगैरा खिलाया जाए।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

मंगल:-

जिस्म में खून पैदा हुआ। मुंह पर मुंहे निकलने लगी या मजावारी आयाम (हैज) शुरू हुआ बच्चा बनाने की धुन (लग्न या मुहब्बत) पैदा हुई हर नये काम जिसमें भी हाथ डाला का नतीजा स्वयं नेक होता हुआ मालूम होने लगा जो नहीं भी जानता था। कोसों दूर से एक प्राणी को शौक से मिलने मिलाने का ख्वाहिश मन्द हुआ। दुश्मन शिश्मने और दोस्त आशा रखने लगा जो भी दानों से आया रखने की खुशी में अनाज के साथ घुन की तरह पिसता चला गया। जंगी राज सभा यार दोस्त, स्त्री दरबार या माता के परिवार गर्ज कि हर जगह उसकी तलवार का डंका बजने लगा मगर अचानक दम के दम में क्या हुआ कि गुमनाम आग भड़क उठी छत पर पहुंचने से अभी थोड़ा ही नीचा था कि कमन्द टूट गई। छाती की हड्डियां आ टूटी, खून गर्दिश में हुआ किसी यार दोस्त मदद न की और किसी की हत्ती के इन्तजाम में ही इसका सब बहा दिया गया। रहम ने साथ छोड़ा। मुन्सफ ने नजर फेरी। और जिन्दा ही बच्चे में गाड़ दिया गया वह अपने धर्मईमान पर चलता रहा हर एक पर भरोसा रखा मगर जाहिरदारी दुनियावी खांड ने शीशा के बारीक टुकड़ों के रेत का संयुत दिया। एक नहीं जो भी खानदान में होनहार गबमें अच्छा उम्दा हैसियत का फल या एक कारामद प्राणी साबित होता हुआ मालूम होने लगा अचानक मौत का शिकार या किसी न किसी ऐब वजह से नाहक बर्बाद या तबाह देखा गया उम्र का आम अरसा 28 साला उम्र और 36 के मध्य का अरसा किसी जालिम चक्की के चलने का जमाना पाया गया। मगर किसी हकीम या डाक्टर ने यहां जांच ना की उसके खून में इस कदर ताकत और अच्छी हालत होते हुए इसमें अचानक और दम-दम में जहर आ बनने की वजह क्या थी? एक नहीं दो नहीं वाकात तो बहुत हुए मगर तमाम हमदर्दों ने सिर्फ अफसोस के आंसू बहाए मगर बेमौका जालिम तलवार के चलाने वालों का सुराग न पाया गया। मुंह पर मुंहे क्या निकली मौत की आमद की किश्ती साबित होने लगी।

बाहर से गांव में दाखिल होने पर दरम्यानी दुकान के मालिक जो शनिच्चर के कारोबार से बाबास्ता मगर कोई कारीगर पेशा, पेशावर हकीम हाजिक या अक्लवन्द वगैरा हो तमाम खानदान के ताल्लुकदारों से एक-एक पैसा इकट्ठा करके ऊपर जिक्र शनि के कारोबार करने वाले शख्स को उस काम को कुछ हिस्सा मुफ्त करने के लिए दे या ऐसे शख्स की निशानी गांव में पूर्व तरफ से दाखिल हुए एक चौक आया पीठ अभी गांव से बाहर को ही हो और मुंह गांव में अन्दर की तरफ को ऐसी हालत में चौक में ठहर गये, सामने ऐसे शख्स की दुकान होगी दाईं हाथ की तरफ उस चौक से रास्ता जा रहा है। और दुकान का एक दरवाजा भी उसी हाथ पर है बाईं हाथ की तरफ जो दुकानें है उनका मालिक उन्हें बेच गया। जिस ने उन दुकानों में कारोबार किया वह बरबाद हो गया ऐसे शख्स के अक्ल नर औलाद हुई ही न होगी और अगर हो गई तो वह बेचारा ऐसी औलाद का जमाना न देख सका और अगर कारकजा लड़के के जवान हो भी गए तो वह बच्चे उस शख्स की अमूमन दुश्मनी ही करते रहे वजह सिर्फ यह हुई कि वह शख्स शनि नः 4 का मारा हुआ था। यानि हकीम के होते हुए साप का तेल बेचता रहा कारीगर हो व धोखा देही से पक्के की जगह कच्चा सामान देता गया या दूसरों की शनि की मुल्लका अशिया ऐसा धोखा से बरबाद करता गया जिसको सिर्फ गैबी ताकत का मालिक ही पहचान सका।

बुध:-

लड़की पैदा हुई बहन का साथी भाई आ पहुंचा दोनों मिलकर बैठने लगे हा हा हु हा तु तां होने लगी। दोनों की चक्की चलने की आवाज आ निकली कि कोई लटक गया। कपड़ा आ फंसा, चक्की को हल्का करो। किसी समझदार को आवाज दो जो करद आफ करे। जल्दी करो वह पिसाला चला जा रहा है चक्की ताकत हटाने पर और भी उल्टी तेज हुई जा रही है। अक्ल मारी गई दाएं कि जगह बाएं पर लग गया। जवान का जरा सा एक लफ्ज। तलवार से ज्यादा नुकसान कर बैठा। लड़का पैदा हुआ घर वालों ने शुकर मनाया। पर बाप को पता नहीं बच्चा आ चिमटा कि उसका धन दौलत सब रेत आ हुआ। नाड़े खिचने लगी दांत हिलने लगे और ऐन जवानी के पूरे जोर पर चक्की की मरकजी की लौ निकल बैठी पिता की उम्र की हुई या माता अपनी हीजान से हाथ धो बैठी या उस खानदान में जब तक कोई बाप (बेटे) का न बना या माता न हुई खुशहाल और तन्दरुस्त रहे मगर ज्योंहि कि नूरेचश्म खानदान के चिराग लड़के पैदा हुए वह प्राणी जो अब बाप बना अपने ही दिल अपनी हालत को देखकर रात के वक्त आंसू बहा कर सोने लगा। मगर बरतन में उस गुमनाम सुराख का भेद छुपा ही चला गया अगर कोई माता बनने पर जिन्दा रही तो वह आखिर बुढ़ापे तक अपनी मन्दी हालत को देखकर हर रात सिसकती बिलखती और रोती ही देखी गई और जो बाप बना था वह हर चन्द अपने खर्चे और कारोबार को थमथमा कर चलता चलाता गया। मगर न पहचान सका कि उसकी जाती और जद्दी जायदाद को बरबाद करने वाला कीड़ा किस जगह लगा हुआ है। और उसकी खुशी के बाजे से मातम की आवाज क्यों आ रही है। साल भर अगर कहीं मेहनत से दो पैसे जमा कर ही लिए तो आखिर पर नया साल शुरू होने से पहले-पहले दो आने का खर्च यानि डेढ़ आना मंगली का जवाब ही मिल रहा मगर वक्त सिर्फ यही रही कि अगर रुपया ने हार दी तो जानों ने साथ नहीं छोड़ा। लेकिन इस नमक हराम लौंडी (बुध) ने कई खानदानों को तो ऐसा तबाह करके छोड़ा उनके नाम लेवा तो यकतरफ रहे बल्कि अपने शरीक भाईचारा अमदन के मददगार खानदानी पलने वाले बजुर्ग, माता खानदान के रिश्तेदार या आईन्दा आने वाले मासूम बच्चे दोनों हाथों से सिर पीटते बल्कि कह दिया तो सब के सब मेहरबान गुमनाम गढ़ों में गिरकर दम कि दम में खाक होते देखे गए सिर्फ वही भला मालूम हुआ जिसको जुबान न थी या जो अपनी तकलीफ को जाहिर न कर सका जहां कुछ भी न था उस कुड़ी का फंदा मौजूद था मगर उस फंदा लगाने वाले शिकारी का साया किसी को मालूम न हुआ दांत आए चले गये, सरगुरान खत्म हो गए या पिस चुके मामू दर बदर हुए या चले गए मगर उस छुपे लड़ाई के भेद में दूजे जांसम कसाई के खंजर का राज खुलने न पया उम्र 34 से 48 हुई या बोलना सीखने के वक्त से दांत निकल जाने तक तमाम जिस्म की नाड़ों ने कोशिश करके देखा कि भेद क्या है तो यही मालूम हुआ कि

हजारों भटकते है लाखों दाना करोड़ों सयाने
जो खुद करके देखा-आखिर खुदा की बातें खुदा ही जाने।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

जिसने कुछ काम न किया नाम बदनाम हुआ लेकिन जिसने कुछ काम किया गुमनाम हुआ मगर दोनों के दायरे की हद बन्दी का निशान कोई मुकर्रर न हुआ।

कुल खानदान के हर एक मेम्बर जहां तक कि खून का असर पीली कौड़ी एक-एक लेकर एक ही जगह इकट्ठी करके जलाकर उसकी राख को उसी दिन दरिया में बहा दे।

शनि:-

नींद से उठे आँखे खोली तो मकान के दरवाजे पर दस्तक की आवाजा आई कि वह किधर गये जो कि शाम को मशीनों का सौदा कर रहे थे कुछ ब्याना भी दे गये थे कारखाना की दीवारों तक का खर्चा पेशगी जमा करवा गए मगर बात अभी तय न होने पाई थी कि उनकी आंखों में अचानक मिट्टी का कण उछलकर पड़ गया सर दर्दी शुरू हुई और सब कमाली जहां की तहां रह गई सब इन्तजार में है बारिश जोर कर रही है। सामान मकान बर्बाद हो रहा है चलिए पता करिये, कि वह साहब कहां है इतने में भागती हुई लौंडिया आई कि मकान के उस कोने में जहां के तेल नारियल लकड़ी का बारदना (गोदम) जमा था आग से खाक हो गया। आग के बुझाने वाले नल की चाबी का जिम्मेदार चौकीदार कभी बाहर गया हुआ है इस नागहानी आग में एक दो रिश्तेदार भी टांगों से जख्मी हो गए है। और उनको अस्पताल पहुंचाने का इन्तजाम नजर नही आता यह तकरार हो ही रही थी कि कोने से एक सांप सरकता हुआ नजर आया सबका दम सिवने लगा। और यह सब राम कहानी ख्वाबी हुआ मालूम होने लगी बारिश के जोर से बगैर छत की खड़ी हुई दीवारें खटाखट गिरने लगी और नींद से उठते ही यह नजारा दरपेश हुआ ससुराल और बच्चों की दरसगाहो (स्कूल) से पैगाम आए कि पुलिस और मुकामी अफसरों और महकमा तालीम की जिम्मादार हस्तियों से जाहक झगड़े फसाद खड़े हो गए। लड़का निहायत लायक आगर मकानों, इंजिनों, पहाड़ो खानो और हाक्टरी के इल्म से पूरा वाकिफ था मगर वजह न मालूम हुई कि मुकाबले पर परीक्षक ने क्यों सिफर नम्बर देकर निकाल दिया। लड़का जिस कदर समझदार होशियार था बाजार में उसी कदर ही बेकदी पाई गई। मकान देखने में आलीशान और भारी लागते खर्च कर के बनाए गये मगर ज्यों ही उनमें रहने का मौका आया किसी ने उन में आराम ने पाया अगर कोई नया बनाया ही मकान खरीदा गया तो उसकी सीढ़िया दरम्यान से टूटी हुई या तोड़ कर दोबारा ही बनती रही बल्कि कई दफा तो मालिक ने (जिसने मकान बनवाया) इस नये मकान में एक रात भी सोकर न देखा। अगर कहीं भूलकर सो ही गया तो सुबह दो बार उठता जागता न देखा गया कोशिश तो बहुत की मगर पता न लगा कि उस खानदान में मकानों या उनके सामनों का आराम क्यों नहीं मिलता और वहां सांपों हय्यारो या नाहक जहर के वकातों से खानदान क्यों घटता-बढ़ता गया।

सौ मुख्तलिफ जगह की मछलियों को एक ही दिन में कुल खानदान के बराबर और मुन्तरका खर्चा से खाना वगैरा देवे। 100 मजदूरों को सभी खानदान वाले पैसा इकट्ठा कर के खाना खिलाए।

राहू :-

शाम हुई नींद का दौरा जारी हुआ कुछ-कुछ ख्वाब की लहरें लगने लगी। हर तरह का आराम और दुश्मनों से बचने का साया न मुहैय्या हो चुका कि अचानक बिजली की जहर फट निकली (लीक कर गई) सजा सजाया मकान जल उठा ख्वाब भूला नींद उखड़ गई और जान के लाले पड़ गए देर नहीं गुजरी कि करोड़ों आंखों के मालिक नीलम के व्यापारी दम के दम में खाक हो गये। सोना गुम हुआ जगह-जगह चोरी। राहजनी गबन धोखा दे ही और फरेब के वाकानसे धन हानि होने लगी जो भी कोई ससुराल का ताल्लुकदार हुआ या 16 से 21 साला उम्र में पहुंचा सर से जख्मी ख्यालात का गंदा और जिसमें में बेहद बेहौल बीमारियों से मारा हुआ नौजवानी के बजाय बचपन में ही बूढ़ा, खोखला निकम्मा साबित होने लगा।

जिस अक्ल से काम करता गया उसी कदर ही बेकार निर्धन और असहाय पाया गया शाम को सोचा अपने में सोचा, अकेले पन में सोचा मगर पता न चला की सोना खामख जंग लगा पीतल पीला झिलमिल रंग से क्यों नीला बनता गया। खानदानी मेंबर नौजवान लड़के देखने में सुन्दर लम्बे कदावर मगर सांस में क्यों रुकने लगे दमा, मिरगी, काली खांसी तथा सांस की तकलीफ, बेगुनह जेलखाने, बेमौका और अचानक मौतों की संख्या बढ़ने लगी, जहां तक भी इस खानदान के खून का असर पहुंचा काली मिट्टी की आंधी का जोर और जमाने का तकरार बढ़ाता गया चाहे स्वयं कितने ही शरीफ, गरीब तबीयत के हर के चलने वाले हुए जज ने मुकद्दमे के फैसले पर कुछ न कुछ जुर्माना डाल दिया। कसूर चाहे था या न था बताया न गया कि क्या था। जो किया सब कुछ उल्ट-पल्ट होता गया जमीन की तह से छत तक नजर दौड़ाई, नीले समुन्द्र और आसमान तक छानबीन कर ली, सुबह से फर्की शाम तक भली-भांति देखा कि क्या मगर जवाब वही रहा कि यह सिर्फ वहम है फर्जी ख्याल है या किसी हद तक दीवानगी का पैमाना है जो यह गुमनाम सजाएं आफतें और दिल-दर्दी की बुनियादें खड़ी कर रहा है।

कुल खानदान एक एक नारियल लेकर एक जगह ही इकट्ठे करके एक ही दिन में दरिया में बहा दे।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

केतु:-

बच्चे खेल रहे थे इधर-उधर भागने लगे और कुत्तों के बच्चे भी साथ-साथ शामिल होकर अचानक कोई मुसाफिर आया उसका पांव फिसला कुत्ते के मुंह पर लगा वह अपनी जान बचाने के लिए मासूम बच्चों पर झपटा जो डर कर भागता हुआ सड़क पर मोटर के नीचे आ गया। माता ने जो छोटे बच्चे को दो मंजिले मकान पर नहला रही थी घटना को देखकर उस बच्चे को वहीं छोड़कर नीचे का रुख किया मर गये हुये बच्चे का भाई तीसरी मंजिल की छत पर धूप सेंक रहा था। शोर शराबे से नीचे की देखने पर वह जमीन पर आ गिरा माता का छोड़ा हुआ बच्चा पानी के बर्तन में लेटकर डूब गया। छत से गिरा हुआ लड़का गिरते ही दम तोड़ गया। और गाड़ी की घिरी हुई माता मोटर के नीचे आई हुई लाश और छत से गिर कर मरे हुए होनहार को जब उठा कर ऊपर पहुंची तो देखा कि सबसे छोटा भाई अपनी नींद से करवट लम्बी कर चुका है अर्थात् माता की टांगे फैल गई किसी का सलाह मशविरा काम नहीं देता। कान आवाज नहीं सुनते और उस बेचारी की रीढ़ की हड्डी बगैर किसी के मरे स्वयं टूट रही है अभी तीन थे अभी एक भी नहीं रहा। किसी को कहे किसने मार दिया और क्यों और कब मार दिए। खानदान में किसी के तो पर औलाद हुई ही नहीं किसी के होकर मर गई और किसी की जब चलने फिरने के वक्त पर पहुंची तो नकारा होती गई। अगर फिर भी किसी ने जवानी देखती तो कानों से बहरा पेशाब की बीमारियों से दुखिया, अधरंग फालिज का मरीज ही होता गया। अगर अपना खानदान बचा तो मामू खानदान की मिट्टी उड़ गई अगर घर में दो पैसे जमा किए तो मुसाफिरी में हजारों का नुकसान जा देखा। अव्वल तो कोई नेक सलाह का मिलता ही न था लेकिन अगर किसी पे ऐतबार किया तो उस ने गुमराह करके कोई न कोई तूफान ही खड़ा कर दिखाया। मगर उस अचानक धोखे, जंजाल और दुनिया की दो रंगी के मन्दे नतीजे या हर दो रंग में मंदगी ही के पहलू की बुनियाद का सुराग न चला।

सौ कुत्तों को एक ही दिन में कुल खानदान के बराबर और मुश्तरका खर्च से लजीज खाना वगैरा दे या उनके खानदानी घर में अन्दर दाखिल होने के लिए बाहर दरवाजे पर ठहर गये पीठ बाहर को है और मुंह उस मकान को देख रहा उनके घर के साथ लगते हुए बाये हाथ के मकान में एक बेवा होगी जो अपनी छोटी उम्र से ही दुखिया हो चुकी होगी उस का आशीर्वाद लिया।

ऋण पितृ का उपाय निम्न निर्देशानुसार करें .....

ऐसे उपाय के वक्त समस्त खानादान, या जहा कहा भी उनके खून का कोई रिश्तेदार यानि लड़की पोती बहू बहन दोहता पोता बाया पड़दादा गर्ज कि जहां तक खून का ताल्लुक हुआ या हो रहा हो सबके सब को इसमें हिस्सा डालना सहायक बल्कि जरूरी होगा। (औरत के माता पिता) टेवे वाले के ससुर की तरफ से रिश्तेदारों के लिए पितृ ऋण के उपाय में बतौर हिस्सादार शामिल होने की कोई शर्त नहीं। मगर टेवे वाले की लड़की बहन बहू या उनकी औलाद (ख्वाह नर हो मादा, दोहता दोहती भांजा भांजी वगैरा का) बतौर हिस्सा शामिल होना या करना उचित बल्कि जरूरी माना है। अगर किसी वजह से ऐसा न हो सके तो कोई वहम की बात न ही बेहतर तो यही होगा कि इन सबको शामिल कर लिया जाए अगर कोई रिश्तेदार नास्तिकता या जाती खराबी की वजह से शामिल न हो या न हो सके तो उसको यह अर्ज कर देना जरूरी होगा कि ऐसे पितृ ऋण का गन्दा बोझ से बाहर रह जाने वाले प्राणी के खानदान या जिस्म पर चलता रहेगा।

ऐसा उपाय करने वाले का फर्ज होगा कि शामिल न होने वाले प्राणियों के लिए भी स्वयं अपनी मर्जी और हिम्मत से ऐसे गुमराहों का हिस्सा उपाय में शामिल कर लेवे। मगर उनका हिस्सा आम हिस्सा से दस गुणा किया जाएगा।

महादशा के ग्रह

मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की और डरते-डरते आखीर
एक दिन मौत का ख्वाब अजल का फरिश्ता ही बन बैठा।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

[1]

खास ग्रह बवक्त महादशा

मंगल देखता चौथे को, गुरू देखे 5 नौवें घर
शनि देखे घर दस तीजे का, दृष्टि होवे कुल पूर्ण घर
एक अकेला या मुश्तरका, बन्द मुट्ठी के खानों में
नौ ही ग्रह घर 6 वें बैठे, देखा करे उन तरफों में

[1] किसी ग्रह का लगातार ही मन्दी हालात का जमाना महादशा का अरसा होगा। और उम्र के एक 35 साला चक्र में सिर्फ एक ग्रह ही महादशा में हो सकता है। और एक किस्मत के ताल्लुक में 'ग्रहण' या इन्सान की तमाम उम्र में ऐसा जमाना ज्यादा से ज्यादा 39 साल हो सकता है एक महादशा के बाद अगर फौरन दूसरी महादशा शुरू हो जावे तो दोनों महादशा के दरम्यान का अरसा (एक का खत्म और दूसरे का शुरू) महादशा के मन्दे असर का न होगा।

1. जहां कहीं भी बैठे हो उस बैठा होने वाले घर को 1 नः यानि पहला घर गिनकर चौथा या आंठवा वगैरा महादशा के वक्त ग्रहों की अवधि निम्नलिखित होगी। बृहस्पत 16, सूरज 6, चन्द्र 10, शुक्र 18, 20, मंगल-7, बुध-17, शनिच्चर-19, राहू-18, केतु-7, कुल = 120
2. (I) किस्मत का ग्रह (II) राशिफल का ग्रह (III) ऊंच या कायम और नेक ग्रह कभी महादशा में न होगा।
3. जब बन्द मुट्ठी के खानों (1, 7, 4, 10) में कोई भी ग्रह बैठा हो और साथ ही मुट्ठी के बाहर के घरों में कोई ऊंच ग्रह हो यानि नः 9 में चन्द्र नः 3 में राहू नः 6 में बुध राहू नः 9 में केतु नः 12 में शुक्र या केतु बैठा या नः 4 या खुद चन्द्र अच्छे हो तो महादशा हरगिज न होगी।
4. महादशा के वक्त "धोके का ग्रह तबदीली हालात पैदा करेगा" हर सातवें साल बजरिए राहू और आठवें साल बजरिए ग्रह नः 8
5. महादशा में हो चुके ग्रह का दूसरों पर कोई बुरा असर न होगा।
6. महादशा के वक्त हर ग्रह का जो महादशा में हो गया हो निम्नलिखित सालों में अपना जाती असर वर्षफल के अनुसार बहाल होगा।

बृहस्पतः- दसवें या दसवां साल बृहस्पत की ग्रह पदवी और रियायती साल के इलावा होगा
सूरजः- विषम (ताक) उम्र के वो साल जो 2 के अंक पर विभक्त न होवें, 1, 3, 5 वगैरा।
चन्द्रः- सम 2, 4, 6, 8 उम्र के वह साल जो 2 के अंक पर विभक्त हो जायें।
शुक्रः- 11 वे } इस ग्रह के आम दौरा के तीन साला अरसा का पहला साल शुक्र में
मंगलः- चौथे } मंगल के मंगल का असर प्रबल होने का होता है।
बुधः- पांचवें
शनिः- 6वें
राहूः- 7वें
केतुः- तीसरे

Free by Astrostudents

बृहस्पत की आम मियाद 16 साल हुआ करती है मगर बृहस्पत की हालत में महादशा नौवे से शुरू होगी और यह ग्रह अपनी महादशा के वक्त का पहला दूसरा आठवां दसवां और चौदहवां जाती असर का रख लेगा। और गुरू होने की हैसियत से अपनी उम्र के आधे अरसा यानि 8 साल तक कभी बुरा असर न देगा। और महादशा नौवे साल से ही शुरू होगी। टेवे वाले का महादशा का हाल और उसकी औरत का हाल चन्द्र कुंडली से देखा जाएगा। जिसके लिए वर्षफल भी उसी कुंडली से बनायेगें।

चन्द्र कुंडली:-

जिस घर में ज्योतिष वालों ने लफ्ज चन्द्र का ग्रह लिखा हो उस घर को जन्म लग्न वाली का नम्बर लगाकर तमाम खानों में 12 अंक पूरे कर देगे। इस तरह से जहां भी एक का अंक आवे वह घर सामुद्रिक में पहला खाना होगा। चन्द्र कुंडली के देखने के लिए जब सामुद्रिक के हिसाब से एक कुंडली तो जन्म कुंडली नः 4 वाली दोनों का फर्क यह होगा कि जनम लग्न में चन्द्र का ग्रह खाना नः 10 आ गया और चन्द्र कुंडली में वही चन्द्र खाना नः 10 में हो गया। चूंकि जन्म राशि दोनों हालतों में सिंह राशि नः 5 फर्जकर लिया था। अब दोनों कुंडलियों का जुदा-जुदा हाल

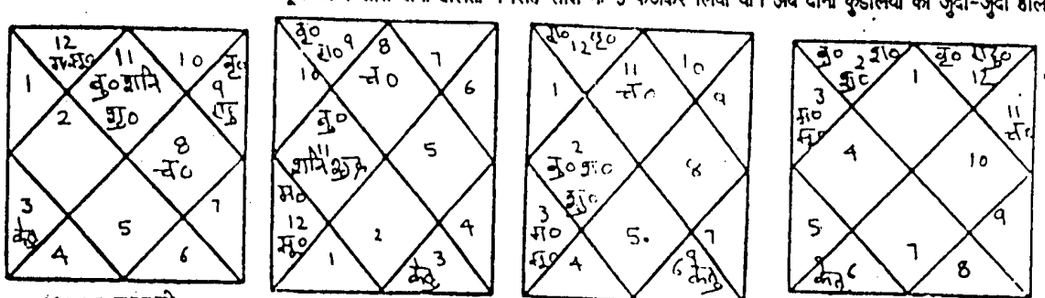

(1) जन्म कुण्डली (2) चन्द्र कुण्डली (3) (4)

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

ाल किताब के हिसाब से जुदा-जुदा देखा गया। फर्क हालात में यह होगा कि चन्द्र कुंडली का असर अचानक और सहवन और भूल भुलाए भी-कभी जाहिर होगा और वह भी महादशा के खाली रखे हुए सालों में और धोके ग्रह के सालों में जो होगा पक्का भेद जिसे राशिफल कहकर ुछ का फायदा उठा लेगें। (राशि फल वह ग्रह फल का फर्क वगैरा जद्दो जगह लिखा गया है)

दाहश 2 चैत सम्वत 1992 शनिच्यर वार व मुकाम लाहौर छावनी खास 6 बजे सुबह मुताबिक 19. 3. 36 हो तो उस दिन होगा कुंडलिया नीचे ते।

अब लाल किताब के लिए पैदाइश के दिन वाली चन्द्र कुंडली में चन्द्र को जन्म लगन की राशि यानि हिन्सा नः 11 दिया है तो वही चन्द्र ुंडली आम हालत के लिए हस्बेजैल (नीचे लिखा) होगी या अंक नः 1 को अपनी उपर की जगह किया तो लाल किताब के मुतालबिक लाल ाताब की चन्द्र कुंडली होगी, वास्ते महादशा।

ाय किसी ग्रह के बराबर के ग्रह नीच और रद्दी हो मगर खुद वह नीच और रद्दी न हो तो ऐसा ग्रह तख्त पर आने के बाद (वर्षफल के नुसार) जिस महीने खुद ही नीच और रद्दी हो जावे उस दिन महादशा में हो गया माना जाएगा।

कि जब वह ग्रह स्वयं भी नीच और रद्दी होवे और उसके बराबर के ग्रह नीच और रद्दी हों तो तख्त पर आने के दिन (वर्षफल के अनुसार) ा जन्म दिन जब जन्म कुंडली के अनुसान जब सब तरफ रद्दी हालत हो से ही महादशा में हो गया होगा। महादशा के वक्त दोस्त ग्रहों की कोई दद न होगी। मगर दुश्मन ग्रह जख्म पर नमक छिड़केंगे की तरह मन्दा असर देते होंगे।

महादशा के साल	महादशा के सालों में कितने साल मंदे होंगे।	ग्रह खाना नः	वीरवार के ग्रह किन ग्रहों में बैठे हों।	जन्म कुंडली में ही से ग्रह चाल हो तो आयु का साल मंदा होगा।	जिस साल वर्षफल के हिसाब खाना ए.बी.सी.डी.ई. की ग्रह चाल कायम हो जाते उस साल को पहला साल गिनें फिर उससे आगे महादशा का साल होगा।
चं. 16	16 में से 3 मन्दे	बु. 10	रा. 9-12 शु. 1 के. 3-6 बु. 12	20-21-22 12	11-12-13
सूर्य 6	6 में से 1 मंदा	सूर्य 7			महादशा का 6वां साल
च. 10	10 में से 1 मंदा	च. 8	शु. 6 श. 1 म. 4 बु. 10	17	महादशा का 10 वां साल
शु. 20	20 में से 8 मंदा	शु. 6	म. 4 बु. 10	9-11-12-13 17-18-21-25-27	1-3-4-5-9-10 12-17-19
म. 7	7 में से 4 मंदा	म. 4	शु. 6 श. 1 रा. 9-12	4-5-6-9	1-2-3-6
बु. 17	17 में से 7 मंदा	बु. 12	श. 1 के. 3, 6 म. 4 बु. 10	11-14-15-17 22-24-20	1-3-4-6-11 13-17
श. 19	19 में से 4 मंदा	श. 1	के. 3-6 बु. 10	1-2-11-13	1-2-11-13
रा. 18	18 में से 11 मंदा	रा. 9	बु. 10 च. 8	6-8-9-10-14 से 18-20-22	1-3-4-5-9-10 से 13-15-17
के. 7	7 में से 4 मंदा	के. 3	बु. 10 श. 1 बु. 12 सू. 7	3-4-6 1-1-13	1-3-5-6-9-11-12- 13=15-17-18
1 20 (ए)		A B	C	D	E

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

किस ग्रह के घाल के वक्त महादशा होगी। किस खाना नः में कौन कौन ग्रह महादशा में हो जाने वाले ग्रह के बराबर का मगर नीच हालत में बैठा हो बराबर के ग्रह

किस ग्रह की महादशा होगी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बृ.	श.		के.			के.			रा.	वृ.		रा.
सू.							सू.					बु.
च.	श.			मं.		शु.		च.		वृ.		
शु.				म.		शु.				वृ.		
म.	श.			म.		शु.			रा.			रा.
बु.	श.		के.	म.		केतु				वृ.		बु.
श.	श.		के.			केतु				वृ.		
रा								च.	रा.	वृ.		रा.
के.	सूर		के.			के.	सूर्य			बृह		बु

दी गई ग्रह चाल के वक्त अगर उसी वक्त ही।

खाना ग्रह बैठा हो

2 च.
3 रा.
6 बु. रा.
9 के.
12 के. शु.

या खाना नः 4 के० ग्रह अच्छे या खुद च किसी भी घर में अ प्रभाव का हो तो महादशा न होगी।

1. महादशा के असर के वक्त महादशा वाले ग्रह का कुंडली के सिर्फ उस खाना नः का जिसमें कि वह बैठा हो और उन्हीं चीजों पर जो चीजें उस ग्रह (महादशा में हो जाने वाले) की उस बैठे हुए खाना की मुतल्लका हो पर मन्दा असर होता है।

2. महादशा में हो जाने वाले ग्रह का दूसरे ग्रहों पर (बस्प दोस्ती या दुश्मनी या दृष्टि) वही असर होगा जैसा कि उस वक्त होना था अगर महादशा में न होता।

3. महादशा के वक्त सा किसी भी ग्रह की हो ज्यादा से 1 से 40 तक अंक निम्नलिखित ढंग पर 12 खानों की सूचि में लिख लें और पेशानी खाना नः 1 (अंक नः 1, 13, 25, 37 वाला खाना) में इस ग्रह का नाम लिख ले जो कि महादशा में हो गया हो मान लिया कि वह शुक्र है शुक्र को नः 1 के उपर लिख दिया और बाकी ग्रहों को भी दी हुई तरतीब से लिख देवे।

1 शुक्र	2 नः12 के ग्रह	3 सूरज	4 चन्द्र	5 केतु	6 मंगल	7 बुध	8 शनि	9 राहू	10 नं० 8 का ग्रह	11 खाना नः 9	12 बृहस्पत
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40								

जिस अंक नः की पेशानी पर जो कोई ग्रह भी लिखा हुआ हो। वह साल उन उस ग्रह की मार्फत उस महादशा के जमाना में तबदीली हालत करने वाला होगा ऊपर की सूचि में खाना नः 1 से मुराद महादशा का पहला साल और नः 2 से दूसरा साल वगैरा वगैरा होगी सा वह उ किसी भी साल में शुरू हुई हो।

धोके का ग्रह

देखते ही जाओ कि वह कही धोका ही न कर जावे

1. दुगना अच्छा होगा या दुगना मन्दा मगर चलेगा जरूर दुगनी रफ्तार से
2. धोके का ग्रह अच्छा फल देगा या बुरा इस बात के फैसले के लिए विस्तार से पढ़ो घर नः 10 देखें।
3. औसत उम्र 120 साल हो 12 गुना 10 खानों की सूचि में लिखकर पेशानी खाली छोड़ दे और सूरज जन्म कुंडली के अनुसार जिस खाना बैठे होवे उसी नः वाले अंक के खानों की पेशानी पर सूरज लिख देवे। सिवाय खाना नः 6 के सूरज को नः 9 की लाईन की पेशानी पर

खाना नः 9 के सूरज के नः6 की लाईन की पेशानी पर

खाना नः 7 के सूरज को नः 5 की लाईन की पेशानी पर

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

सिर्फ उस वक्त जब नः 1 खाली हो वरना नः 7 को 7 के उपर
बाकि ग्रहों को उसी क्रम में लिख दे, जिस क्रम से कि वह नीचे लिखे है, मसलन किसी का सूरज जन्म कुंडली में

धोका के ग्रह की तलाश

सूरज नः 11 वाली कुंडली

टेवे में नः 3 का है तो 12 खानों में सूरज को नः 3 वाले खाना के ऊपर लिखकर खाना नः 4 के ऊपर चन्द्र नः 5 वाले खाना के ऊपर केतु वगैरा लिखा दें। जिस अंक नः के खाना के ऊपर जो ग्रह आए वह ग्रह उस के इस साल धोके का ग्रह होगा, जिसके बुरे या भले असर के लिए विस्तार से नः 10 में देखें।

केतु	मंगल	बुध	शनि	राहू बृहस्पति	चन्द्र	बृहस्पति	बृहस्पति	शुक्र	बुध	सूरज	चन्द्र
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	59	60	72
73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96

याददाश्तः-

जन्म कुंडली के ग्रहों का कोई ख्याल न करेंगे सिर्फ सूरज को हम जन्म कुंडली से देख लेंगे और जन्म कुंडली के बाकी ग्रह किसी भी ग्रह का कोई ख्याल न करेंगे।

में नः 3 का है तो 12 खानों के खाका में सूरज को नः तीन वाले खाना के ऊपर लिख कर खाना नः 4 के ऊपर चन्द्र नः 5 के खाना के ऊपर केतु ख दें। जिस अंक नः के खाना के ऊपर जो ग्रह आये वह ग्रह उस के इस साल धोखे का ग्रह होगा जिसके बुरे या भले असर के लिए विस्तार से नः देखें।

सूरज नः 12 वाली कुंडली

चन्द्र	केतु	मंगल	बुध	शनि	राहू	केतु	बृहस्पति चन्द्र	बृहस्पति	शुक्र	सूरज	सूरज
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	59	60	72
73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

पेशानी में ग्रहों की तरतीब

जन्म कुंडली खाना नः 10 का ग्रह जब वर्षफल के मुताबिक दोबारा खाना नः 10 में ही आ जावे तो वह धोका (अच्छा या बुरा) का ग्रह होगा अब अगर नीचे दी हुई तालिका के अनुसार भी वह नः 10 में आया हुआ ग्रह धोके का ग्रह साबित होवे तो ऐसा ग्रह जरूर ही धोका कर देगा। अच्छा या बुरा जिसके फैसले के लिए खाना नः 10 में विस्तार से लिखा है।

सूरज	चन्द्र	केतु	मंगल	बुध	शनि	राहू	खाना नः 8 के ग्रह	खाना नः 9 के ग्रह	बृहस्पत	शुक्र	खाना नः 12 के ग्रह
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

अगर जन्म कुंडली के अनुसार खाना नः 8, 9, 12 खाली ही हो तो नः 8 के लिए मंगल शनिव्यर नः - 9, 11 बृहस्पति कोई ग्रह दो दफा लिखा जाएगा वहम न

एक के बाद दूसरी दो लगातार महादशा के बक्त दोनों का दरम्यानी साल बुरा असर न देगा। मसलन शुक्र पहले का 20 वां साल मंदा अर देना जब शुक्र की लगातार दो महादशा शुरू हो जावेगी।

Free by Astrostudents

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

फरमान नः 9

मददगार उपाय

ग्रह आत्मा राशि शरीर

(अ) रूह बुत के झगड़े की तरह ग्रह को रूह और राशि को बुत मानें तो ग्रह फल के उपाय की इस विद्या में गुंजाइश नहीं मानी गई। राशि या ग्रह या राशि फल के शक का इलाज और ग्रहों से धोके के ग्रह के धक्के से बचकर चलना इन्सानी ताकत में माना गया है। बुध के ग्रह का हीरा (निहायत कीमती पत्थर सबको काटता और मारता है। मगर वह खुद उसी बुध की दूसरी निहायत नर्म चीज कलई टांके लगाने वाली धातु) उस हीरे में सुराख डाल देती है। इसी तरह ही पापी ग्रह सब ग्रहों पर अपना धक्का लगाते है मगर उनको (पापी ग्रहों को) मारने के लिए खुद अपना ही पाप (शब्द पाप से मुराद राहु केतु है पापी से मुराद शनिच्चर, राहू केतु तीनों ही है यानि राहू के मन्दे असर को केतु का उपाय दुरुस्त करेगा और केतु के मन्दे असर को राहू का उपाय नेक करेगा) महाबली होगा। और पाप की बेड़ी भर कर हूवेगी। संक्षिप्त रूप में पापी ग्रहों का उपाय उन ग्रहों की सम्बन्धित वस्तुओं की पालना करनी होगी। या उनसे सम्बन्धित वस्तुओं से उनकी आशीर्वाद या क्षमा ले लेना कारगरआमद होगा। मसलन शुक्र की मुतल्लका चीज गाय और आम इन्सानी खुराक या सब अनाज मिले मिलाए मुकर्रर है शुक्र की मदद के लिए गाय को अपनी खुराक का हिस्सा देवें। काग रेखा धन दौलत की हानि शनिच्चर की मन्दी निशानी के समय कौव्वे को रोटी का हिस्सा देवें या औलाद के लिए दुनिया के दरवेश कुत्ते का अपनी खुराक का टुकड़ा बख्शें।

(ब) हर ग्रह की मसनूई हालत में दो ग्रह होते है जब कोई ग्रह मन्दा हो जाए तो उसकी मसनूई हालत में दिए हुए दो ग्रहों में से उसी एक ग्रह को हटाने के लिए जिस के हट जाने से नतीजा नेक हो जावे कोई और ग्रह कायम करें। जो बुरे फल के हिस्से के देने वाले ग्रह को गुम ही या नेक कर देवें। मसलन शनिच्चर मन्दा होवे तो उसके मसनूई हालत के ग्रह शुक्र बृहस्पत में से बृहस्पत को हटाने के लिए अगर बुध कायम करें तो शुक्र बाकी रह जाएगा। अब शुक्र के साथ बुध मिलने पर शनिच्चर नेक होगा।

(I) उपाय के इलावा हर एक पक्के ग्रह का उपाय तो लाल किताब के मुताबिक ही लेंगे।

(II) हर एक ग्रह की मसनूई हालत में दो ग्रह इकट्ठे माने गये है पक्के ग्रह का जिस चीज का असर या जो असर मन्दा होवे, उस असर के देने वाले ग्रह को उसकी मसनूई जुज (भाग) हटाने की कोशिश करे मसलन शुक्र जब खराब करे या खराब होवे तो शुक्र मसनूई जुज भाग राहू केतु में से राहू को हटा दे तो बाकी केतु होगा। यानि शुक्र के नेक करने से राहू को नेक मदद देगा। बुध बृहस्पत दोनों ही को चलाने के लिए बुध सबज रंग वस्तु जेवर सब्ज कागज में रखने की तरह मदद और बुध शुक्र शनिच्चर की मुश्तरका चीज अपनी खुराक से तीन टुकड़े रोटी के और कुत्ते को देना मुबारिक फल देगा। उसके लिए मान, धन, दौलत और उनके उम्दा होने के लिए भी गऊ ग्रास देवे।

मतलब यह है कि मन्दे फल के लिए मन्दा करने वाली चीज को दूर, मंगल बद के बुरे असर से मृगछाला बचाएगी।

मंगल बद का इलाज

मंगल बुध= मंगल बद, शनिच्चर की सांप या मंगल बुध शनिच्चर मुश्तरका के (हिरण की खाल) पहाड़ी जुबान में मृग है चीते की खाल नहीं माना है जिस पर सांप न आएगा। यानि मंगल बद का दोस्त मुर्दा हिरण चढ़ेगा। इसलिए साधु ने मृग मृगछाला पंगद की है,

(I) शत्रु बेमुहार के कीने (दुश्मनी) के दिल की बात उसके नाखूनों से जाहिर कर उसका दिल या चन्द्र नहीं होता या उसके पांव के नाखून केतु (कीना) सजा या वह केतु के बुरे असर को बरबाद इलाज से काबू होगा या चन्द्र की उपासना यानि चन्द्र जिस घर का कुंडली के मुताबिक हो इलाज होगा।

(II) चन्द्र उस का मालिक और हर एक पर मेहरबान होगा। मंगल बद सबके लिए मौत का फन्दा लिए फिरता है या जहां चन्द्र होगा वहां मंगल बन न होगा। जहां मंगल बद होगा चन्द्र न होगा। इस असूल पर मंगल बद का इलाज, चन्द्र की पूजना या मदद ढूंढना मुबारिक होगा। तन्दूर में मीठी रोटी लगाकर खैरात में देने से भी मंगल बद का असर दूर होगा राहू का मन्दा असर जौ (अनाज) को किसी चन्द जगह में बोझ तले दबाया जावे या दूध से धोकर चलते पानी में डाला जावे अगर तपेदिक वगैरा या लम्बा बुखार तंग करे तो जौ को गौ पेशाब में धोकर लाल (सुर्ख) कपड़े से बन्द करें। और गौ पेशाब से ही दांत साफ करे। जो ग्रह ऊंच ग्रह होवे उसको मुतल्लका चीज की मदद से मन्दे ग्रह का असर दूर हो जाता है।

अपनी मुकर्रर जगह की बजाए जब मछ रेखा, काग रेखा वगैर किसी और जगह वाका हो तो जिस ग्रह की राशि या पक्के घर में बिलहाज बुर्ज व रेखा कायम (स्थित) होवे उस ग्रह की पूजा से नेक फल होगा।

मसलन मछ रेखा बुध की सिर रेखा पर वाका हो तो शनिच्चर व बुध की चीजों की पालना यानि स्याह परिन्दा व कौव्वे की पालना करना मुबारिक अगर शुक्र पर हो तो स्याह गाय वगैरा की पूजा व पालना मुबारिक फल पैदा करेगा।

धोके के ग्रह का, जो छुपा छिपाया होता है, इलाज भी देख लेना जरूरी होगा। अगर लड़का लड़की बाप के लिए दोनों ही मन्दे फल वाले पैदा हो जावे तो सूरज लड़का, बुध लड़की या लड़की के गले में तांबे का टुकड़ा मुबारिक होगा जो बुध को दबा लेगा। पापी ग्रहों के साथ जब वह अकेले की बजाए कोई दो इकट्ठे हो तो मंगल को कायम करना मुबारिक होगा। बशर्ते कह उस कुंडली वाले का अपने कुंडली के ..... हिसाब से मंगल राशि फल का हो यानि मंगल अगर खाना नः 1, 3, 8 में होवे तो मंगल का उपाय न होगा। बुध काम देगा इसी तरह ही स्त्री ग्रहों (चन्द्र

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

शुक्र) में बुध की ताकत मदद देगी बशर्ते कि बुध खाना नः 3, 6, 7 या 9 का न हो ऐसी हालत में मंगल मदद गार होगा। संक्षिप्तः उपाय के वक्त देख ले कि जिस ग्रह के जरिए दो लेने को है वह खुद कहीं ग्रह फल का ही तो नहीं है। खाना नः 9 के ग्रहों का उपाय रंग के जरिए फर्श मकान से होगा यानि जो ग्रह मन्दा हो और खाना नः 9 में मसलन शुक्र या बुध या मंगल बद वगैरा तो उसके दोस्त ग्रहों की पालना करें। या कम से कम उस नेक ग्रह की रंग की चीजें पांव तले फर्श पर न लगावें जो रंग की खाना नः 9 के ग्रह से मुतल्लका है। जब आम उपाय काम न देवें तो घन्टों के अन्दर-अन्दर ही फैसला करने के लिए तो घण्टों के अन्दर अन्दर ही फैसला करने के लिए निम्नलिखित उपाय सहायक होंगे।

1. बद मंगलः रेवड़ियां पानी मे बहा देवें।
2. बृहस्पतः केसर नाभि या धुन्नी या जबान पर लगा देवे या खाने को देवे।
3. सूरजः पानी में गुड़ बहा देवें।
4. चन्द्रः दूध या पानी का बर्तन सिरहाने रखकर कीकर के वृक्ष को डाले।
5. शनिच्चरः तेल का छाया पात्र करें।
6. शुक्रः गऊ दान या चरी जवार दान करें।
7. मंगल नेकः मिठाई मीठा भोजन दान करे या बताश दरिया में डाले।
8. बुधः तांबे के पैसे में सुराख कर दरिया में बहा दें।
9. राहुः मूली जान करे या कोयले दरिया में डाले।
10. केतुः कुत्ते को रोटी डाले वगैरा।

अवधि उपायः

हर एक उपाय की अवधि कम से कम 40 दिन और ज्यादा से ज्यादा 43 दिन होगी। खानदानी उपाय कुल ही खानदान की बेहतरी के लिए पितृ ऋण, मातृ ऋण वगैरा या कुल सम्बन्धियों की मदद के लिए उपाय की अवधि होगी वही 40 हद 43 मगर हर रोज लगातार की बजाए हफ्तावर लगातार होगी। यानि हर आठवें दिन जो 40 43 हफ्ते होंगे उपाय के वक्त ख्वाह आखिरी दिन 39वें व 40वें ही भूल जाने या बन्द कर बैठे ते सब किया कराया नेशफल होगा। और नए सिरे से फिर दोबारा शुरू करके पूरी म्याद तक करने के बद फल देगा। अगर किसी वजह से उपाय बन्द ही करना दरकार हो, मगर पहला असर भी कायम रखना मंजूर हो, तो चावल दूध से धोकर पास रखे जावें।

जन्म दिन और जन्म वक्त के हिसाब से मददगार उपायः

मसलन पैदायश हो सोमवार बवक्त पक्की शाम तो ग्रह होगा चन्द्र वक्त का ग्रह होगा राहू जन्म वक्त के ग्रह को जन्म दिन के मुतल्लका ग्रह के पक्के घर के लिखेंगे। इस तरह पर अब राहू (जो जन्म वक्त का ग्रह है) चन्द्र जो दिन का ग्रह है के पक्के घर जद्दी जगह की सूचि के अनुसार खाना नः 4 में होगा। क्योंकि जन्म दिन का ग्रह राशिफल (कावले उपाय)

और जन्म वक्त का ग्रह, ग्रह फल बुरा या भला, अटल-जिसका कोई उपाय नहीं होता है। इसलिए कुंडली वाले के लिए जब कभी और जो भी खाना नः 4 का असर होगा राशिफल का होगा जिसका चन्द्र के उपाय से नेक असर होगा या राहू उस शख्स की खाना नः 4 की चीजों पर बुरा असर करने के वक्त राशिफल का होगा। ख्वाह वह ग्रह (जन्म वक्त का) राशिफल का न भी हो लेकिन अगर जन्म वक्त का ग्रह (पैदायश के हिसाब से जो भी होवे) ऊपर की मिसाल के मुताबिक हर ग्रह के खास-खास घर राशिफल वालों में आ जावे तो दिया हुआ उपाय मददगार होगा। जिसके लिए बदला जाने वाला या उपाय के काबिज जन्म दिन का ग्रह लेंगे जन्म वक्त का नहीं, मसलन किसी की मंगलवार सुबह के बाद दिन का पहला हिस्सा (बवक्त बृहस्पति) पैदायश है, अब जन्म वक्त बृहस्पत का ग्रह मंगल के पक्के घर खाना नः 3 में होगा। फर्जन अब बृहस्पत का ग्रह खाना नः 3 का होगा हुआ बीमारी ही बीमारी खड़ी करता जावे तो मंगल का ग्रह राशिफल का होगा जो जन्म दिन का ग्रह गिना था। मगर मंगल सिर्फ खाना नः 4 और 6 में राशिफल का लिखा है मगर फिर भी ऐसी हालत में मंगल हीका आम उपाय मददगार होगा। और बृहस्पत का उपाय फायदे मन्द न होगा।

ग्रह राशि का निशान

1. अगर किसी राशि का निशान अपनी मुकर्ररा जगह की बजाए किसी दूसरी जगह हथेली या उंगली पर पाया जाए तो उस निशान का मतुल्लका राशि नम्बर कुंडली के उस पक्के घर में लिख देंगे। जिस नम्बर पर कि वह निशान हथेली या उंगली पर पाया गया हो। मसलन मिथुन राशि का निशान (जोड़ा जो राशियों की गिनती में नः 3 पर है) किसी के हाथ के खाना नः 12 में पाया गया तो कुंडली के पक्के घर नः 12 में अंक नः 3 लिख दिया और गिनती की तरतीब से कुंडली के 12 के 12 ही खाने पूरे कर दिए इस तरह पर जो अंक नम्बर लग्न में आवे वह उस शख्स की जन्म राशि होगी। जिसका मालिक ग्रह (बहैसियत घर की माल्कीयत) कुंडली वाले के लिए हमेशा राशिफल का होगा।
2. इसी तरह राशि के निशान के बजाए अगर ग्रह का निशान पाये जाए तो जिस खाना नम्बर में वह निशान हो। कुंडली के पक्के घरों के

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

हिसाब से उसी नम्बर पर इस ग्रह को लिख दें। मसलन चन्द्र का निशान साथ पर खाना नः 5 पर वाका हो तो चन्द्र के चन्द्र खाना नः 5 में लिखेंगे। इस तरह पर चन्द्र टेवे वाले के लिए खाना नः 5 के ताल्लुक में (खाना नः 5 की वस्तुएं कारोबार या रिश्तेदार मुतल्लका खाना नः 6 हमेशा) ग्रह फल का होगा।

ग्रह का उपाय

1. ग्रहफल का उपाय नहीं मानते राशिफल हरवक्त काबिले उपाय होगा।
2. उपाय वक्त सूरज निकलने से सूरज छिपने तक दिन का अरसा है। रात का शनिव्वर राज माना है जिसमें उपाय करना कई दफा खतरनाक भी हो सकता है इसलिए बेहतर यही होगा कि रात के वक्त कोई उपाय न किया जाए।
3. अवधि कम से कम 40 दिन और ज्यादा से 43 दिन होगी शुरू करने के लिए किसी खास सोमवार या मंगलवार वगैरा के दिन की शर्त न होगी।
4. उपाय के मध्य में नागा हो जाने पर खा 39 के दिन ही भूल जावें। सब कुछ किया कराया। नेश फल होगा और दोबारा नए सिरे से उपाय करना मददगार होगा।
5. अपने खूनी हकीकी का कोई भी ताल्लुकदार उपाय कर सकता है जो जायज और फलद अंक होगा।
(।) मरने से पहले बतौर आखरी आशीर्वाद किसी ग्रह की चीज पीछे रह जाने वालों को देना मुबारिक होगा।
6. नष्ट हो चुके ग्रह या बहालत पितृ ऋण व औलाद वगैरा के लिए निम्नलिखित उपाय होगा।

1	2	3	4	5	6
गैबी ताकत में	किस्म ग्रह	नम्बर ग्रह	नाम ग्रह	रंग ग्रह	उपाय औलादन और कारण
ब्रह्मा जी	नर ग्रह	1	बृहस्पत	पीला	हरिभजन दालचना, सोना
विष्णु	नर ग्रह	2	सूरज	गंदमी	कथा हरिबन्स गंदम, गुर्य तांबा
शिव भोले	स्त्री ग्रह	3	चन्द्र	दूध का	पूजन चावल, दूध चांदी
लक्ष्मी जी	स्त्री ग्रह	4	शुक्र	दही का	लोगों की पालना घी, दही, काफूर मोती सफेद
हनुमानजी	नर ग्रह	5	मंगल	सुर्ख	गायत्री पाठ दाल मसूर, लाल, लाल (पत्थर)
दुर्गा जी	मुखन्नस	6	बुध	सब्ज	दुर्गा पाठ मूंग सालम, जमुर्द
भैरो जी	मुखन्नस	7	शनि	स्याह	राजा की उपासना माप, सालम, लोहा
सरस्वती	मुखन्नस	8	राहू	नीला	कन्यादान सरसों नीलम
श्री गणेश	मुखन्नस	9	केतु	चितकबरा,	दान कपिला गाय तिल

Free by Astro students

नोटः जो ग्रह नीचफल देवे इस ग्रह के बचाव के लिए इस लगह दिया हुआ दान करें।
शादी के समय (हिन्दू धर्म के अनुसार फेरे) मन्दे ग्रह का उपाय बहुत ही कारगार होगा खा मन्दा ग्रह औरत के टेवे का हो खा मर्द के टेवे का मगर मर्द के टेवे के मन्दे ग्रहों का उपाय जरूर कर लें। क्योंकि शादी की रस्म के पूरा होते ही, अमूमन औरत के टेवे के ग्रहों पर मर्द के टेवे के ग्रह प्रबल हो जाते गिने हैं।

तफसील के तौर पर अगर जन्म कुंडली के अनुसार

1. बृहस्पत मन्दा हो:

लड़की का संकल्प (बवक्त रस्मों रिवाज शादी) करने के ठीक उसी वक्त बाद में खालिस सोने के दो टुकड़े (वजन की कोई शर्त नहीं) मगर दोनों टुकड़े खा किसी भी वजन के हों मगर हो बराबर बराबर ठीक-ठीक इसी तरह ही दान किया जाएं जिस तरह कि लड़की का दान किया गया। फिर इन दो टुकड़ों में से एक को चलते पानी (दरिया नहीं नाला) में बहा दें। और दूसरा लड़की को दे (जो अब औरत बनी) देवे। हिदायत सिर्फ इतनी होगी कि वह लड़की उस सोने के टुकड़े का बेचकर उसकी कीमत न खा लेवे। जब तक यह टुकड़ा उसके पास रहेगा बृहस्पत के मन्दे असर से बचाव ही होता होगा ऐसा टुकड़ा अमूमन चोर भी नहीं चुराया करते या चुरा सका करते। और नहीं गुम हुआ करता है। लेकिन अगर किसी वजह से गुम या चोरी हो ही जावे तो कोई वहम की बात न होगी। गए हुए टुकड़े के इवज में एक और नया टुकड़ा कायम कर लेवे और वह भी वही नेक असर देगा। जो कि पहले टुकड़े से गिना गया है ऐसा टुकड़ा दोबारा कायम करते वक्त दूसरा और टुकड़ा नदी नाला के बहाने की जरूरत नहीं। अगर किसी वजह से सोने के टुकड़े दस्तायाब न हो सके तो, केसर की दो पुड़ियां या हल्दी की दो गांठियां ऊपर के ढंग पर कायम की गई, असर में वैसी ही होंगी जैसा कि खालिस सोना हो सकता है। लेकिन बेहतर यही होगा कि खालिस सोना ही किसी न किसी

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

तहर मुहैय्या कर लिया जावे।

2. सूरज रद्दी हुआ:

ऊपर दिए हुए मन्दे बृहस्पति के हाल में शब्द सोने की जगह सुर्ख तांबा (खालिस) गिन लें।

3. चन्द्र रद्दी हो:

ऊपर दिए हुए मन्दे बृहस्पत कि हाल में सुच्चा मोती (दूध रंग) गिन लें। और न मिलने की हालत में चांदी चावल और प्राणी के वजन के बराबर दरिया नदी नाले का पानी शादी के वक्त घर में कायम कर लिया जावे।

4. शुक्र रद्दी हो:

ऊपर दिए हुए मन्दे बृहस्पत के हाल में शब्द सोने की जगह मोती। सफेद (दही रंग) गिन लें।

5. मंगल रद्दी हो:

ऊपर दिए हुए मन्दे बृहस्पत क हाल में लाल (कीमती पत्थर जो रंग में सुर्ख तो हो मगर चमकीला रंग न हो) गिन लें।

6. बुध रद्दी हो:

ऊपर दिए हुए मन्दे बृहस्पत क हालम में हीरा गिन लें, न मिलने की हालत में सीप लें।

7. शनि रद्दी हो:

ऊपर दिए हुए मन्दे बृहस्पत के हाल में लोहा या फौलाद गिन लें। न मिलने की हालत में स्याह नमक या स्याह सुरमा लें।

8. राहू रद्दी हो:

वही उपाय जो चन्द्र में लिखा है ख्याल रहे कि मन्दे राहू के वक्त कभी नीलम की अंगूठी नहीं दिया करते, वरना दुल्हा-दुल्हन के जर्यदस्त हाथी पुरानी खन्दकों में गिरकर च्यूंटियों से मरते होंगे।

9. केतु रद्दी हो:

ऊपर दिए हुए मन्दे बृहस्पत के हाल में शब्द सोने की जगह दो रंगा पत्थर गिन लें। Cat's eye.

(I) शुक्र नः 6 के वक्त वाल्दैन की तरफ से शादी के वक्त लड़की के लिए उसके सिर पर कायम रखने क लिए खालिस सोना बतौर दान लड़की को देना जिसे वह गाहे बगाहे इस्तेमाल में लाती रहे। शुक्र नः 6 की मन्दी हालत से बचाना होगा।

(II) थोड़ा सा सोना खालिस लड़की को शादी के दहेज में छोड़ना, जबतक लड़की उसे खुद न बेचे उम्दा बृहस्पत के असर को उतम करता होगा मर्द या औरत के टेवे में जब निम्नलिखित ग्रह चाल हो अर्थात्

(III) शुक्र के साथ या शुक्र घर
1. खाना नः 2, 7 में उसके दुश्मन हो — (मसलन राहू शुक्र, सूरज शुक्र चन्द्र शुक्र किसी भी घर में हो)
2. शुक्र अकेला या मुश्तरका नः 4 या
3. राहू अकेला नः 1, 7, 5 या
4. शनिच्चर नः 5, 9 या केतु नः 8 अकेला
5. या केतु के साथ उसके दुश्मन मसलन मंगल केतु मुश्तरका का चन्द्र केतु, सूरज केतु, बुध केतु या किसी भी घर में हो तो औरत के वाल्दैन के घर से ही खालिस चांदी या मन्दे केतु का इलाज धर्म स्थान में दो रंग कंबल देना या केतु जब पितृ ऋण से मन्दा हो तो सौ कुत्तों को बारात की तरह एक ही दिन में खुराक देना यानि खुराक साथ लेकर कुत्तों को तकसीम करते जावें। और सूरज छिपने से पहले . सौ तादाद पूरी कर लें।

पहली औरत से पहला ही मर्द दो दफा कुछ वक्फा देकर शादी की रसम अदा करले तो शुक्र नः 4 की दो औरत जिन्दा कायम होने की शर्त दूर होगी।

बुध नः 12 शादी के वक्त लोहे का छल्ला जिसमें जोड़ न लगा हो टेवे वाले का हाथ लगवा कर दरिया में बहावे और दूसरा छल्ला वैसा ही लोहे का टैवे वाला हमेशा खुद पहनता रहे तो बुध-12 हमेशा ही मददगार साबित होगा।

निम्नलिखित ग्रह का मन्दा असर नेक करने के लिए किस ग्रह का उपाय दरकार है।

नाम ग्रह जो मन्दा हो	किस ग्रह का उपाय मददगार होगा
केतु: — — —	केतु ग्रह का उपाय मददगार होगा केतु की नजर अमूमन खाना नः 10 में होगी।
राहू: — — — —	राहू ग्रह का उपाय मददगार यानि केतु मन्दे का इलाज आम तौर खाना नः 10 के ग्रहों की मार्फत आसानी से हो सकेगा। पापी ग्रहों का उपाय उन ग्रहों की सम्बन्धित वस्तुओं की पालना करनी होगा।
शनिच्चर: — — —	धन दौलत मन्दी के वक्त कौव्वे को रोटी डालें।

Free by Astrostudents

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

नाम ग्रह जो मन्दा हो

शुक्र: गाय को अपनी खुराक का हिस्सा देवे।

मंगल बद: मृग छाल (हिरण की खाल) मददगार,
तंदूर में मीठी रोटी पकाकर कुत्ते को देवें या खैरात करें।
जौ अनाज को दूध से धोकर चलते पानी में बहा दे।
गौ पेशाब से जौ को धोकर लाल रंग के कपड़े
में बांधे (बुखार के लिए) और गौ पेशाब से दांत साफ करें।

मंगल बद जारी: रेवड़ियां पानी में बहा दें। केसर नाभि धुन्नी में लगावें पानी में गुड़ बहा दें।

1. मर्द की जन्म कुंडली खुद मर्द के लिए मर्द पर असर ग्रह फल का	मर्द की कुंडली खुद मर्द के लिए मर्द पर राशिफल का करिश्मा यानि महादशा की हालत के उल्ट नेक और अचानक चमकारा।
2. मर्द की चन्द्र कुंडली उस की औरत पर ग्रह फल का नेक नजारा यानि महादशा के अरसा में खाली साल रखे हुओं में किस्मत का नेक और अचानक असर देगी।	मर्द की जन्म कुंडली उसकी औरत पर राशिफल (आम साधारण) का असर देगी।
3. औरत जन्म कुंडली औरत के लिए औरी पर ग्रह फल का असर देगी।	मर्द की जन्म कुंडली उसकी औरत पर राशिफल (आम साधारण) का असर देगी।
4. औरत की चन्द्र कुंडली उसके खविन्द के लिए ग्रह फल का नेक नजारा महादशा के खाली सालों में किस्मत की अचानक व नेक चमक होगी।	औरत की जन्म कुंडली उसके खविन्द के लिए आम हालत की राशिफल का असर देगी। औरत की चन्द्र कुंडली औरत के लिए औरत पर राशिफल।
5. मर्द का दायां हाथ मर्द के खुद अपने लिए ग्रह फल का।	मर्द का बायां हाथ मर्द के खुद अपने लिए राशिफल का।
6. औरत का बायां हाथ औरत के अपने लिए ग्रह फल का	औरत का दायां हाथ औरत के अपने लिए राशिफल का।
7. मर्द का बायां हाथ उसकी औरत के लिए ग्रह फल का नेक नजारा देने वाला।	मर्द का दायां हाथ उसकी औरत के लिए राशिफल का।
8. औरत का बायां हाथ उसके खविन्द के लिए ग्रह फल का नेक नजारा देने वाला	औरत का दायां हाथ उसके खाविन्द के लिए राशिफल का।
9. बच्चा दोनों के लिए राशिफल के देने वाला हुआ करता है।	

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

हर ग्रह अपने बैठा होने वाले घर का फल (अच्छा या बुरा न देगा) जब तक कि उस घर की मुतल्लका तरफ या जगह में उस ग्रह की मुतल्लका चीज न हो। अगर किसी पितृ ऋण (खानदानी पाप) जिसका जुदा जिक्र है जहां या दूसरे कारण से कोई ग्रह सो जावे, नष्ट बरबाद या गुम ही हो जावे,तो सबसे पहले खाली खानों के घर के मलिक ग्रह का उपाय करें। बशर्ते कि वह ऐसे बराबर के ग्रह का ग्रह होवें। या दोस्त होवे उसके बाद महादशा के वक्त में काम देने वाले ग्रह लेवे। इसके बाद दुश्मन ग्रहों की दुश्मनी हटावें या राशिफल की हालत का फायदा उठावें। अगर यह भी काम न दे सके तो सूरज को कायम करें। अगर यह भी मदद न देवे तो पापी ग्रहों और सबसे आखिर पर बुध का उपाय करे

फरमान नः 10

ग्रह का प्रभाव

इलमे सामुद्रिक में ग्रहों को राशि के घरों में रोशनी के जलते Lamp माना गया है। इस तरह पर एक Lamp के साथ ही दूसरे Lamp की रोशनी का शुरू होना उन दोनों Lamp के दृश्य में तबदीली करता है

उदाहरणः

सूर्य का लैम्प गन्दमी भूरा है उस के साथ ही बृहस्पत का Lamp शुरू हो जाए जिस का रंग पीला है दो Lamps की मिली हुई। रोशनी का जो रंग हो वही रंग इन्सानी किस्मत के हिसाब से जीवन में प्रकट होगा।

Lamp बुझ गया (ग्रह असार खत्म हुआ) या जलने लगा (ग्रह असर शुरू हो) या एक घर में दूसरा और ग्रह (Lamp) जलने लगा इस अदला बदली में किस्मत के मैदान में रंग बिरंगी तो होगी मगर ग्रहों की अपनी अपनी घर की निश्चित माल्कीयत में फर्क न होगा। मतलब यह की हर ग्रह के लिए ऊंच हालत नीच हालत वगैरा हमेशा के लिए निश्चित है चाहे वह ग्रह किसी भी और ग्रह के घर मेहमान बन कर चला जाए।

ग्रह में मुराद= Lamp कितनी देर तक जल सकता है।

ग्रह की ताकत - Lamp's Candle Power

(बर्ती की ताकत)

ग्रह दृष्टिः-

एक घर या खाना नः से दूसरा खाना नः में असर जाने का दर्जा यानि 25% (1/4), 50% (1/2), 100% कुल की कुल (सारा)

वाहमी दोस्ती दुश्मनीः-

Lamps की रोशनी के अलग-अलग रंग वगैरा।

Lamp की जगहः-

हर खाना नः की मुतल्लका की अशिया

उदाहरणः

खाना नः 1 राज दरबारी Lamp
खाना नः 2 इज्जत, दौलत, धर्मस्थान।
खाना नः 3 भाई इत्यादी।
1. हर ग्रह अपनी मुकर्ररा राशि में नेक फल देगा बेशक उस की वह राशि किसी दूसरे ग्रह, ग्रह का पक्का घर मुकर्रर हो चुकी है।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

राशि नः	किस ग्रह की राशि है	किस ग्रह का पक्का घर निश्चित हो चुका है	इस राशि नः में किस ग्रह का नेक असर होगा।
2	शुक्र	बृहस्पत	शुक्र नेक असर होगा।
3	बुध	मंगल	बुध का नेक असर होगा बशर्ते की मंगल नेक होवे।
5	सूरज		सूरज का नेक असर होगा।
6	बुध केतु	बृहस्पत सूरज मुश्तरका केतु	बुध का उत्तम केतु का खुद केतु की चीजों पर मन्दा मगर दूसरों पर अच्छा, अगर दोनों मुश्तरका हो तो बुध का और बुध की चीजों पर अच्छा मगर केतु व दूसरों का मन्दा होगा।
7	शुक्र	शुक्र बुध	शुक्र का नेक, बुध बाकियों को भी मदद देवें।
8	मंगल	मंगल शनि (चन्द्र आयु)	अगर तीनों मेंसे हर एक अकेला अकेला हो तो अच्छा फल वरना मन्दा फल होगा।
11	शनि	बृहस्पत	शनिच्चर का नेक बाकी ग्रह वेरी (शनिच्चर का दरख्त) के गला घोंटने वाले वेर, जाहिरा उम्दा मगर हकीकत के बताये (यानि धोका का और अमूमन मन्दा असर)

(य) ग्रह बैठा होने वाले घर में ग्रह मुतल्लका की चीज कायम होने से उस गह का असर पाएदार होगा। मसलन केतु नः 9 हो तो जद्दीमकान में केतु की अशिआं कुत्ता व देहिता वगैरा कायम करें।

2. जन्म कुंडली में कोइ भी ग्रह जिस हैसियत से बैठा होवे वह ग्रह अपनी उस हैसियत का असर अच्छा, बुरा मन्दा, ऊंच, नीच, कांटा सिर्फ उस साल देगा। जिस साल कि वह वर्षफल के हिसाब से उस बैठा होने वाली हैसियत के लिए निश्चित की हुई राशि या पक्के घर में आ जावे मसलन बृहस्पत ऊंच है खाना नः 4 में साल कि वह वर्षफल के हिसाब से अपने नेक होने के खाना नः 4, 2 वगैरा में आ जावे। जन्म से ऊंच तो है मगर असल ऊंचपन सिर्फ साल मुकर्ररा और राशि या खाना नः 4 पक्का घर मुकर्ररा में आने पर ही जाहिर होगा। इसी तरह ही सब ग्रहों का और तरह का होगा। न हमेशा अच्छा और न हमेशा मन्दा ही गिना जावेगा। यही हाल धोका के ग्रह का है यानि धोका का ग्रह (धोके की सूचि के अनुसार) साल खाना नः 10 धोका के घर में आ जावे धोका पूरा देगा। और मन्दा धोका या धोके के ग्रह जब खाना नः 2 किस्मत के ग्रह का घर खाना नः 11 किस्मत को जगने वाले ग्रह के घर में आ जावे तो धोका देगा। नेक मायनों में मन्दा ग्रह अगर मन्दा उस वक्त होगा जिस वक्त वह खाना नः 8 में आ जावे। इसी तरह ही वर्षफल के हिसाब से हर घर में आने पर असर की हालत होगी। यानि खाना नः 6 में राहू का ताल्लुक और खाना नः 8 में मन्दे बुध और खाना नः 12 में ऊंच केतु के ताल्लुक का (1. फहरिस्त खानावार और हर ग्रह की खाना नः की चीजों की सूचि में देखे। 2. हर ग्रह के लिए उसके घर माल्कीयत या ऊंच होने के घर में जो असर दिया गया है वह उसकी नेक हालत पर होने का असर होगा। इसी तरह भी ग्रह के मन्दा होने के वक्त का वह असर होगा जो इस नम्बर में लिखा है जहां कि वह नीच गिना गया है) असर हो जायेगा वगैरा वगैरा। नेक ग्रह का मन्दा असर अपने खानावार हाल में दिया हुआ असर किया करता है लेकिन अगर खुदी जाती कोशिश से कोई नया वाका खड़ा करें तो कि इस ग्रह की मुतल्लका चीज या असर के खिलाफ होवे तो असर में तबदील हो जावेगी। मसलन राहू नः 4 में पाप न करने का हलफ लिए हुए होता है अगर उस वक्त जब कि या जिस साल वर्षफल वगैरा के हिसाब से राहू नः 4 में आया हुआ होवे और इस मुतल्लका राहू की चीजें खड़ी करे मसलन गर्की बनाना, कोयालों की बोरियां दर बोरियां अम्बार जमा करना, लावन्दों या काने आदमियों का हिस्सादार बना लेना या टट्टी या पाखाने की नई जगह बनवाना या मकानों की सिर्फ छत ही उतरवा कर नई बदलना या टट्टी या पखाना ही की छत बदलवा देना वगैरा वगैरा करे तो राहू शरारत झगड़े फसाद वगैरा पैदा कर देगा। इसी तरह ही बृहस्पत ऊंच (या जन्म कुंडली या वर्षफल 1) वाला अगर बृहस्पत की मुतल्लका चीजें पीपल के दरख्त कटवाना, साधु सन्तों को सताना या बरबाद करना वगैरा करे तो बृहस्पत का सोना मट्टी हो जाएगा। अगर केतु नः 12 में हो और कुंडली वाला ना ही केतु की सेवा करे या और न ही अपने घर में रखे बल्कि कुत्ते मरवाना शुरू कर देवे तो केतु का फल मन्दा होगा। वगैरा दृष्टि के खानों में टकराव के ग्रहों का भी हूबहू यही असूल होगा।

व) हर ग्रह की अपना जाहिर करने की निशानी के लिए ग्रह मुतल्लका की खानावार आशिआ होगी। नर ग्रहों (सू. गु. मं.) का राज या असर करने का वक्त दिन होगा। स्त्री ग्रहों (चं. या शुक्र) का राज रात का वक्त और मुग्धनरा ग्रहों (बुध मन्द पापी) का राज दिन रात दोनों के मिलने का वक्त या सुबह और शाम होगा।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

3. वर्षफल में सूरज के हिसाब से महावारी चक्कर पर जब ग्रह मतलूबा वर्षफल वाले घर आवे तो अपना असर देगा जो कि उस ग्रह का उस घर के लिए मुकर्रर है। (अच्छा हो या बुरा) 12 घंटे का दिन 12 घंटे रात 12 महीने का साल 12 राशिओं का असार और 12 साला मागूम बच्चा, और 12 साल के बाद अच्छे दिनों की उम्मीद राव के राव 35 के चक्कर में शामिल है। और जमाने की हवा या बृहस्पत की तालाश की फिर्क में जर्द रंग हो रहे है। तमाम ग्रहों के लिंगों का असर दुनिया की सब चीजों पर असर करता है हाथ क रंगदार नक्शा में हर ग्रह का जो रंग भी दिया गया जब कभी उस ग्रह के असार का वक्त होगा वह ग्रह उस रंग की मुतल्लका चीजों पर या उस रंग की चीजों के जरिए अपना असर जाहिर करेगा।

वर्षफल के मुताबिक कुंडली के लगन के घर या खाना नः में आया हुआ ग्रह अपनी हकूमत के दौरा के वक्त सबसे पहले उस का घर का अपना असर (अच्छा या बुरा) जाहिर जहां कि वह जनम कुंडली के बैठा हो उसके बाद अपने दुश्मन ग्रहों पर ख्याह वह दुश्मन ग्रह उस घर में हो, जहां कि वह खुद बैठा या कभी-कभार दोस्तों पर और फिर अपने बराबर के ग्रहों पर अगर किसी घर में एक से ज्यादा ग्रह बैठे हो तो हकूमत का मालिक खाना नः 1 का ग्रह हर एक ग्रह से ऊपर की तरतीब में बारी-बारी दुश्मनों से टकराएगा। और दोस्तों से दोस्ताना बरताव करेगा। अगर एक ही घर में दौरा वाले ग्रह के कई दोस्त ही या कई दुश्मन ग्रह ही बैठे हो तो ग्रह चाल की तरतीब से (बृहस्पत के बाद सूरज के सूजर के बाद चन्द्र वगैरा) असर करेगा। अगर कुंडली के खानों में दोस्त ग्रह अलहदा और दुश्मन ग्रह अलहदा घरों में ही होवे तो खानों की तरतीब से (नः 1 के बाद नः 2 के बाद नः 3 वगैरा) बरताव करेगा।

2. क्यायाफाः-

खूब जोर से मिलने पर रेखा जिस तरफ से ज्यादा सुर्ख (लालरंग) हो जावे वही तरफ उस रेखा या शाखा के शुरू होने की तरफ होगी।

3. खाना नः 11 के ग्रह वर्षफल तख्त पर आने के दिन से उम्दा होंगे। मगर अपनी आम उम्र (सूर्य 22 शनि 36 etc.) के बाद अमूमन नकारा हो जाया करते है। खास कर जब वह जन्म कुंडली में सोए हुए ही हो। खाना नः 2 के ग्रह हमेशा नेक फल देंगे। जब तक खाना नः 8 खाली हो।
खाना नः 2 के ग्रह टेवे वाले के बुढ़ापे में अपना असर नेक करेंगे।

4. क्यायाफाः

दाएं हाथ की हथेली के दाएं हिस्से में जिस ग्रह का निशान हो वह ग्रह अपना फल नेक देगा।

5. मन्दे ग्रह के बैठा होने वाले घर की अशिया का हाल मन्दा न होगा। बल्कि वह वस्तुएं मददगार होंगी।

उदाहरणः

सूर्य नः 6 का राजदरबार लड़के (केतु का पक्का घर 6) के जन्म दिन से उत्तम हो जाएगा।

6. हर ग्रह के खानावार वस्तुएं जो सूचि में लिखी है जब वह पैदा होंगी तो उस खाना में असर होगा।

उदाहरणः

शुक्र नः 1, 9 में सफेद गाय आने या शादी 25 साल होने से मन्दा फल होगा। हर ग्रह जहां वह वहेसियत मालिकियत मुकर्रर है बैठा होने के वक्त अपनी मुतल्लका अशिया पर नेक असर देगा।

उदाहरणः

सूर्य नः 5 अपना राजदरबार (अज सूर्य) और औलाद (अज खाना नः 5) हर दो उम्दा और नेक असर देंगे।

6B. ऊंच ग्रह किसी दुश्मन की वजह से बरबाद भी हो जाए तो भले असर की बजाए बुरा असर कभी न देंगे।

6C. हर ग्रह अपनी राशि (मालिक) में हमेशा नेकफल देगा।

6D. जब कोई ऐसे घर में बैठा हो जहां की वह ऊंच फल का माना गया है। तो वह ऊंच ग्रह अपने साथ बैठे दुश्मन ग्रह या किसी ऐसे घर में बैठे हुए दुश्मन ग्रह पर जहां की वह ऊंच ग्रह अपनी दृष्टि वगैरा में किसी तरह भी अपना असर भेज सके, कभी बुरा असर न देगा,चाहे भला असर हो या न हो गर्जे की ऊंच घर के ग्रह अपना नेक फल देंगे।
और नेकी न छोड़ेंगे दुश्मन ग्रह के साथ भी वह नेकी छोड़ दें तो मुमकिन है पर वह बदी न करेंगे।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

1. वृहस्पतः-

बैठा हो खाना नः 4 में और उसके दुश्मन ग्रह बैठे हो शुक्र बुध 10 में

2. सूर्यः-

बैठा हो खाना नः 1 उस के दुश्मन ग्रह बैठा हो खाना नः 7 में औरत की मन्दी सेहत T.B के सिवाय सूर्य अव नः 7 वालों पर कोई बुरा न देगा।

3. चन्द्रः-

बैठा हो खाना नः 2 उस के दुश्मन ग्रह बुध शुक्र पापी हो नः 6, 12 से।

4. शुक्रः-

बैठा हो खाना नः 12 में सूर्य चन्द्र राहू हो खाना नः 2 में

मंगल हो खाना नः 10 और बुध केतु हो नः 2 में।
बुध खाना नः 6 और चन्द्र हो नः 12 में।
शनिच्चर खाना नः 7 चन्द्र मंगल सूरज हो नः 7 में।
राहू नः 3, 6 में शुक्र सूरज मंगल 2 में
केतु 9, 12 में चन्द्र मंगल हो 2 में।

जिन ग्रहों ने अपने पहले 35 साला चक्र में बुरा फल दिया हो वो अपने दूसरे 35 साला चक्कर में (वर्षफलों से पता चलेगा) कभी बुरा असर न देंगे। भले असर की खा उनमें हिम्मत हो न हो।

इसी तरह ही 100 साल चक्र के बाद खानदानी हालात जरूर तबदीली पर होंगे खा भली तरफ खा बुरी तरफ

3. अगर वर्ष कुंडली के अनुसार टेवे में सभी ग्रह मन्दे हो तो एक ही आदमी लाखों का मुकाबला करने की हिम्मत का मालिक होगा। और हर तरह से उत्तम फल होगा।

मसनूई कृत्रिम बनावट के ग्रहों का असर खास बातों का होगा। मसलन

पक्का ग्रह	वृ.	सूरज	चन्द्र	शुक्र	मंगल	बुध	शनि	राहू	केतु
मसनूई ग्रह होगा	शु शु खाली हवाई	बुध शुक्र	सूरज वृहस्पत	राहू केतु	सूरज बुध मंगल नेक, शु. शनि मंगलवद	वृहस्पत राहू	शु वृ. केतु स्वभाव मंगल बुध राहू [illegible]	मं. शनि ऊंच, सूरज शनि नीच।	शु शनि ऊंच व शनि नीच
मसनूई बनावट ग्रह का असर	औलाद की पैदायश का मालिक है	सेहत का मालिक है	वाल्देनी खून का ताल्लुक है	दुनियावी सुख औलाद के सिवाय	औलाद नरीना रखने का मालिक	इज्जत शेहरत	सेहत बीमारी	झगड़े फसाद	ऐश का मालिक है

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

निम्नलिखित मुश्तरका ग्रहों से उनके सामने दिए हुए खाना नः का असर पैदा होगा दूसरे शब्दों में उनके सामने दिए हुए खाना नः का असर उन में जरूर बहाल रहेगा। ख्वाहा वो किसी ही घर में इकट्ठे क्यों न होवे। यानि सूरज मंगल के लिए खाना नः 1 में जो असर लिखा है या वगैर किसी ग्रह के ताल्लुक से खाना नः 1 की जो आम तासीर मुकर्रर की गई है वो सूरज मंगल के मुश्तरका के असर में जरूर खानदानी खून कीतरह बहाल रहेंगे खा वो दोनों मुश्तरका ग्रह किसी भी घर में और किसी भी तरह कितने ही मन्दे क्यों न हों।

ग्रह मुश्तरका	खाना नः जिसका असर मन्दा होगा और बहाल रहेगा	ग्रह मुश्तरका	खाना नः जिसका असर मन्दा होगा और बहाल रहेगा
सूरज मंगल	1	शुक्र बुध	7
शुक्र बृहस्पत	2	मंगल शनि चन्द्र	8
बुध मंगल	3	बुध शनिच्चर दोनों का जाती स्वभाव	9
मंगल शुक्र	4	शनिच्चर	10
सूरज बृहस्पत	5	बृहस्पत शनिच्चर	11
बुध केतु	6	बृहस्पत राहू	12

Free by Astrostudents

मसनूई बनावट के ग्रह की हालत में उसके हर दो ग्रहों का असर जुदा-जुदा कर लेना मुमकिन होगा। या दोनों का असर मुश्तरका कर लेना हो सकेगा। दूसरे शब्दों में ऐसा असर राशिफल का होगा।

बयाफाः

किस्मत की हेरा फेरी पक्का ग्रह, बड़ी रेखा शायद ही कभी बदला करती है मसनूई ग्रह यानि शाखों का बदलना मुमकिन है वो भी उम्र के हर सातवें साल (सात, बारह) मगर 21 साल की उम्र से रेखा में कोई तबदीली होना नहीं मानते। यह बालिग होने का जमाना है उम्र के हर सातवें साल तबदीली हाल (खा बुरी तरह होवे खा भली तरह) मानते हैं। अल्पायु (छोटी उम्र) जिसका जिक्र उम्र रेखा में होगा बालों की उम्र के 8 वें साल (8-16-24-32-40-48-56 और 64) जिंदगी खतरा में गिनते हैं।

ग्रहचाल में चीजों पर रंग का असर

तमाम चीजें किसी न किसी ग्रह के मुतल्लका मुकर्रर हो चुकी है मगर चन्द एक चीजों में कुछ फर्क है। मसलन दो रंगा कुत्ता अगर सिर्फ स्याह और सफेद दो ही रंग का चितकबरा कुत्ता हो तो केतु होगा लेकिन अगर दो रंगा तो हो मगर लाल रंग का साथ हो तो बेशक वो कुत्ता केतु की चीज है मगर वो अपने असर में बुध गिना जाएगा। इसी तरह भैंस शनिच्चर के मुतल्लका चीज है अगर वो स्याह रंग हो तो शनिच्चर गिनी जाएगी लेकिन अगर लाल रंग (भूरी हो) तो सूरज का ताल्लुक या सूरज के असर की गिनेंगे इसी तरह स्याह भैंस और सिर्फ आधा सफेद हो तो शनिच्चर के साथ चन्द्र का असर शामिल लेंगे। घोड़ा चन्द्र की चीज हो अगर जर्द रंग हो तो चन्द्र को बृहस्पत की मदद और साथ होगा।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

लेकिन अगर स्याह घोड़ा हो तो शनिच्चर का असर प्रबल लेंगे जो चन्द्र के असर को दबाता होगा। हर शख्स के टेवे में जो ग्रह भी जिस असर का हो उसे उस ग्रह के मुतल्लका चीज और रंग का ताल्लुक वही असर देगा जैसा कि उस चीज और रंग का ग्रह उस शख्स को अपने टेवे के मुताबिक अच्छा या बुरा साबित हो रहा हो।

क्याफा:

सीधे खत..... मर्द और दो शाखी ⊥ ⊼ से मुराद औरत होगी।

नर ग्रह नरों पर असर करेंगे		स्त्री ग्रह महिलाओं (मादारियों) पर असर करेंगे	
नाम ग्रह	किस पर असर देंगे	नाम ग्रह	किस पर असर करेंगे
बृहस्पत	रूह के ताल्लुक दारों पर असर देगा	चन्द्र	माता की हैसियत वाली पर असर देगा
सूरज	जिस्म के ताल्लुक दारों पर असर देगा	शुक्र	औरत के दर्जा वालियों पर असर देगा (बुध शुक्र का शादी के हाल में जुदा दर्जा है)
मंगल	खून के ताल्लुकदारों पर असर देगा		

MINERALS VIGITATION

मुखन्नस ग्रह शनिच्चर धातु जमादात पर बुध नबातात पर राहु हरकात दिमाग पर केतु पर हरकात पांव पर असर करेगा।
मसूनई ग्रह: हैवानात, बेजानों पर असर करेगा।

क्याफा:

हस्त रेखा में 21 साला उम्र से रेखा बालिग और 12 साल उम्र तक नाबालिग गिनते है मगर कुंडली में वर्षफल के हिसाब से उम्र में जिस दिन से (सबसे पहली दफा) सूरज का राज या दौरा शुरू हो जावे उस दिन से तमाम ग्रह बालिग गिने जाते है खा उम्र 21 साल से कितनी ही कम या ज्यादा होवे।

Free by Astrostudents

इस से मुराद ग्रह का वर्षफल का हिसाब से नः 1 में आने से है।
(II) सूरज अगर कुंडली के खाना नः 1, 5, 11 (जन्म लग्न को खाना नः 1 मानकर) में स्याह अकेला खा और ग्रहों के साथ होवे तो जन्मदिन से ही तमाम ग्रह बालिग गिने जाँएगे।
(III) सूरज का दौरा शुरू होने से पहले इंसान पर इसके अपने पिछले कर्मों का फैसला (अमूमन सात या आठ साला उम्र या हर सातवें या आठवें वे साल) असर किया करता है जो तबदीली का जामना हुआ करता है।

क्याफा:

बगैर रेखावाला हाथ हाकू, संगदिल होगा। रानी ग्रह नीच फल की राशि के हो
बहुत ज्यादा रेखा वाला हाथ मन्द भाग और वहमी होगा एक ही घर में बहुत ज्यादा मगर नाकिस या नीच ग्रह हो
ज्यादा चौड़ी रेखाएं } बहुत कम नेक असर देगी कई तरह की दृष्टि से टकराए हुए दुश्मन ग्रह)
चौड़ी रेखा
मद्धम जी रेखाएं } बेमानी होगी देरबाद असर देगी बहुत दुश्मन ग्रह बिल मुकाबिल)
मद्धम रेखा

किसी ताकत के ग्रह की पहचान बरए क्याफा

इंसान जिस ग्रह का साबित हो
वो ग्रह उसे खाना नः 9 का काम देगा
बेशक वह ग्रह कुंडली में कही ही बैठा हो
} इंसान किस ग्रह या मकान किस ग्रह है यह जुदी जगह लिखा है

2. जिस किसी शख्स में जिस ग्रह की ताकत ज्यादा होगी के शख्स ज्यादा ताकत वाले ग्रह की मुतल्लका चीज का ज्यादा इस्तामाल करने का आदी न होगा। मसलन सूरज को नमक (सफेद) माना है और मंगल को मीठा अब सूरज जर्बदस्त वाले की आम आदत होगी कि वो ज्यादा नमक इस्तेमाल करने का आदी न होगा और अपनी कमी पूरी करने के लिए (अगर मंगल इस का कमजोर हो) मीठा ज्यादा

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

इस्तेमाल करने का आदी होगा। इसी तरह मंगल कायम और जर्बदस्त वाला मीठा ज्यादा इस्तेमाल न करेगा नमक ज्यादा इस्तेमाल करने का आदी होगा।
ज्यादा मिकदार में खानों वाला होगा

नौ ग्रहों का दूसरी पुश्त का रिश्तेदार पर असर

1 जब किसी का बृहस्पत प्रबल मालूम हो तो जिस घर में बृहस्पत बैठा हो उस शख्स के उस खाना नः के ताल्लुकवार जिसमें कि बृहस्पत हो बृहस्पत की लिखी हुई सिफ्त के होंगे अगर बृहस्पत हो अपने घरों में या घर का तो इसके बावे या उसकी वही हालत होगी जो बृहस्पत की कही गई है इसी तरह ही और ग्रह लेंगे।

2 अगर किसी का सूरज प्रबल साबित हो मगर सूरज पड़ा हो कुंडली में केतु के घर खाना नः 6 में तो उस शख्स का लड़का (केतु) सूरज की सिफतों का मालिक होगा।

3 अगर केतु पड़ा हो मंगल के पक्के घर नः तीन में तो उसके भाई केतु की लिखी बातें पाई जाएंगी।

मुश्तरका ग्रहों का असर

ग्रह मुश्तरका बुरा नहीं करते, बन्द मुट्ठी के खानों में।
हर दो ग्यारह अपनों अपना, धर्म मन्दिर गुरुद्वारा में।

1. बृहस्पत सूरज, बृहस्पत बुध, बृहस्पत शनिच्चर, सूरज बुध, सूरज शनिच्चर, बुध शनिच्चर, इकट्ठे होने पर के वक्त वाल्दैनी सुख सागर और जायदद जद्दी के सुख से कोई ताल्लुक न होगा बल्कि सिर्फ जाती गृहस्थी सुख से मुज्ञ होगी। या अकेले अकेले यह सब ग्रह टेवे में अपनीअपनी मुतल्लका अशिआ कारोबार या रिश्तेदार ग्रह मुतल्लका के ताल्लुक में कैसे ही क्यों न हो।
2. स्त्री ग्रह (चन्द्र या शुक्र या दोनों मय बुध) के साथ जब नर ग्रह हो नेक फल होगा।
3. जब दो या दो से ज्यादा ग्रह एक ही घर में इकट्ठे बैठे हो तो उनमें से बाहमी दुश्मनी वाले ग्रह अपनी-अपनी दुश्मनी छोड़ देंगे मगर बाहमी दोस्ती न छोड़ेंगे या वो कितने ही दुश्मनों के साथ एक ही घर में अपने दोस्तों से मिलकर बैठे हों।
4. बधु अपने पक्के घर खाना नः 7 में बैठा हुआ और नर ग्रहों सूरज मंगल बृहस्पत या शनि में से कोई भी बन्द मुट्ठी के खाना (1, 7, 4, 10) में आया हुआ या धर्म मन्दिर खाना नः 2 या गुरुद्वारा खाना नः 11 के अन्दर बैठा हुआ टेवे वाले की सेहत जिस्मानी और उम्र आम मुतल्लका जाने (या इंसानों की या हैवानों की) पर कभी बुरा असर (मौत) न देगा। बशर्ते कि इन घरों में बैठा होने के वक्त शनिच्चर के साथ स्त्री ग्रहों (चन्द्र या शुक्र) का ताल्लुक या साथ न हो जावे शनिच्चर के साथ स्त्री ग्रहों के ताल्लुक हो जाने के वक्त के असर के लिए शनिच्चर के हाल विस्तार से देखें।

मुश्तरका घरों (दृष्टि की शर्त नहीं मगर दोनों घरों के ग्रहों को इकट्ठे ही गिन कर) का असर देखने का ढंग दृष्टि के हाल में दृष्टि का दर्जा मुकर्रर है यानि एक घर में बैठे हुए ग्रह दूसरे घर में बैठे हुए ग्रहों का खास-खास दर्जा नजर से देख सकते है। लेकिन अमली तौर पर उस दर्जा दृष्टि यानि 100 फीसदी 50 फीसदी या 25 फीसदी का ख्याल रखने की कोई जरूरत महसूस नहीं होती याद सिर्फ रखना पड़ता है कि किस घर के ग्रह दूसरे कौन से घर के ग्रह को देख सकते हैं मसलन खाना नः 1 के ग्रह अगर देख सकते है तो वह सिर्फ खाना नः 7 के ग्रहों को देख सकते है मगर खाना नः 7 के ग्रह कभी खाना नः 1 के ग्रहों को नहीं देख सकते। अगली तौर पर इस बात का मतलब यह हो जाता है कि खाना नः 1 में अगर कोई ऐसा ग्रह बैठा हो जो खाना नः 7 में बैठे हुए ग्रह का दुश्मन हो तो नः 1 वाला अपनी दुश्मनी की जहर खाना नः 7 वाले पर डाल सकता है मगर खाना नः 7 वाले की जहर का (अगर कोई मन्दा भाव या अगर इस नः 7 वाले नः 1 वाले ग्रह के लिए हो) नः 1 वाले पर कोई बुरा असर न हो सकेगा। इस बात को मद्दे नजर रखते हुए नीचे दिए हुए घरों के ग्रहों को इकट्ठे मिला कर देखें तो उनके बाहमी मिले हुए असर से जो जो बातें जाहर होंगी वह निम्नलिखित होंगी।

खाना नः 1, 7, 11, 8 मुश्तरका का असर राजा वजीरी हालत अगर 11 खाली तो राजा बेलगाम अगर 8 खाली तो वजीर बेदलील होगा इसी तरह ही अगर खाना नः 8 में ऐसा ग्रह बैठा हो जो तख्त यानि खाना नः 1 में बैठे हुए ग्रह का दुश्मन हो तो वह खाना नः 8 का ग्रह तख्त पर बैठे हुए राजा को इसी तरह चलाएगा कि किसी शख्स की आंखों में जहर डाल दी गई हो। जिससे कि वह रास्ता चलते वक्त देख नेकी बजाए दर्द के मारे अपना सिर पीट रहा हो दूसरी तरफ अगर खाना नः 11 का ग्रह खाना नः 1 का दुश्मन हो तो वह तख्त पर बैठे हुए राजा को इस तरह चलाएगा कि जिस तरह कि किसी प्राणी की टांगों में जहर भर दी गई हो। जिसके कारण तख्त पर बैठा हुआ राजा अगर किसी और शख्स को हाथ पकड़कर (जिस राजा की आंखे खराब हो रही हो) चलनी पड़े तो अपनी टांगों में जहर भरी होने के सबब चलने की बजाए दर्द से दुखिया होकर चिल्लाता और कराहता होगा। इसके बर्खलाफ 11, 1 और 8 बाहम दोस्त हो तो तख्त नः 1 पर बैठा हुआ राजा अपनी टांगे खाना नः 11 और आंखे खाना नः 8 की हमेशा मदद पाता रहेगा और उसकी वजारत में मदद के लिए खाना नः 7 के ग्रह मददगार होते होंगे बशर्ते कि खाना नः 1 में खाना नः 7 से ज्यादा ग्रह न हो। सिर्फ तादाद नहीं मसलन अगर खाना नः 1 में दो या दो से ज्यादा ग्रह बैठे हों और खाना नः 7 में सिर्फ एक ही ग्रह बैठा हो तो वह नः 7 वाला नः 1 वालों के बोझ के तले आकर अपनी जड़ कटवा रहा होगा।

फर्जन खाना नः 1 में राहु के साथ कोई एक और या ज्यादा ग्रह हो और खाना नः 7 में अकेला केतु ही हो तो खाना नः 7 का केतु अकेला ही वजीर गिना जाएगा जिसे खाना नः 1 में बैठे हुए तमाम राजाओं का एक ही वक्त में दिया हुआ हुक्म एक ही वक्त में पूरा करना

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

पड़ेगा। इसका मतलब यह हो जाएगा कि ऐसे वजीर की अपनी जड़ कटती होगी। अब ये ग्रह इस मिसाल में केतु का ग्रह गोया अब केतु की मुतल्लका अशिया कारोबार या रिश्तदोर मुतल्लका केतु सब का फल मन्दा होगा या ऐसे टेवे वाले की औलाद नरीना का मन्दा ही हाल होगा या वह प्राणी अपनी औलाद को तरसता ही होगा या औलाद कम देर बाद या नहीं होगी।

खाना नः 7 के ग्रहों को अगर वजीर माना तो खाना नः 8 का हुक्म नामा बतौर रहनुमाई उन वजीरों की दिगामी दलील बाजी होगी मसलन खाना नः 7 में मंगल बैठा हो तो कहेंगे कि ऐसे शख्स का सब कुछ उम्दा धन दौलत परिवार सब कीरब उम्दा होगा। लेकिन अगर खाना नः 8 में जब कि खाना नः 7 में मंगल बैठा हो बुध आ जावे तो वही मंगल नः 7 का दिया हुआ उम्दा फल सबका ही रद्दी निकम्मा बरबाद जहरीला या नष्ट हो चुका गिना जाएगा। यानि ऐसे प्राणी का जिसके खाना नः 8 में बुध और खाना नः 7 में मंगल धन दौलत और परिवार सबका सब ही नाश और दुःख का कारण होगा। इसी तरह ही अगर खाना नः 1 में बुध आ जावे और मंगल खाना नः 7 में ही गिने तो भी मंगल नः 7 का दिया हुआ फल निकम्मा होगा। बुध नः 8 या बुध नः 1 की जहर जब नः 7 के मंगल को मिलती हुई मानी तो फर्क सिर्फ यह होगा कि बुध नः 1 के वक्त ऐसे प्राणी का धन दौलत और परिवार राजा खाना नः 1' की बेहद ज्यादतियों और जालिमाना कारवाईयों या शरारतों से बरबाद होगा। मगर कुदरत कोई धोका न देगी। मगर बुध नः 8 के वक्त इसी मंगल नः 7 का फल यानि धन दौलत परिवार कुदरत की तरफ से ही रद्दी या निकम्मा होता चला जाएगा। बेशक वक्त का हाकिम जमाने का राजा उसे कितनी ही मदद देता चला जावे नतीजा खांड (मंगल) में रेत (बुध) और खून में अंतड़ियों का रास्ता बन्द यानि सेहत और गृहस्थ दोनों ही मन्दे होते चले जावेंगे। खाना नः 2, 8, 12, 6, 11 का मुश्तरका असर रात का आराम और साधु समाधि वगैरा जब नेक हालत हो तो मन्दी हालत में अकाल मौत मुसीबत इन्सान हैवान चरिन्द परिन्द इस ग्रह की मुतल्लका होगी।

जो खाना नः 8 में हो दूसरे दुनियावी साथियों के ताल्लुक से किस्मत का असर बिलहाज उम्र खाना नः 8 से खाना नः 2 को मन्दा असर जाने के वक्त खाना नः 11 का रास्ता होगा, मन्दे असर के वक्त खाना नः 11 के ग्रह अगर खाना नः 8 के दुश्मन हो तो खाना नः 8 की जहर खाना नः 2 में न जाएगी।

(अ) खाना नः 8 का असर मिल सकता है खाना नः 2 में मगर खाना नः 2 का असर नहीं मिला करता नः 8 में खाना नः 2 और खाना नः 12 आपस में बहैसियत साधु (खाना नः2) और समधि (खाना नः 12) मिलते मलाते रहा करते है किसी दृष्टि के दर्जे का कोई लिहाज नहीं हुआ करता इसी तरह ही खाना नः 2 अपना असर मिला दिया करता है खाना नः 6 में और नः 6 अपना असर (सिर्फ वही असर जो खाना नः 6 के ग्रह का है जिसमें कि ऊपर से खाना नः 2 का कोई असर मिला हुआ न हो यानि खाना नः 2 के असर के बगैर जो भी असर खाना नः 6 का जाती तौर पर हो सकता है सिर्फ उतना ही असर) खाना नः 2 में मिलाया करता है और नः 12 अपना असर नः 6 में नहीं मिलाता इस असूल से नः 12 का बुध और नः 6 का शनि (सांप) अपने जहर भरे फरटि (सांस) से खाना नः 2 के ग्रह को फूंक देगा।

(ब) खाना नः 6 और खाना नः 8 के ग्रह भी आपस में ऐसे ही मिले जुले रहा करते है जैसा कि 2, 12 के ग्रह आपस में साधु समाधि या रात की नींद की नेकी बदी में असर करते है तो खाना नः 6 और 8 के ग्रह खुफिया तौर पर पाताल में गैबी ढंग पर मन्दी लहरों का कारण होते रहते है

ऊपर के असूलों से जाहिर होगा कि खाना 8 खाना नः 6 की सलाह लेता हुआ खाना नः 11 के रास्ते खाना नः 2 में अपनी नागहानी (अचानक आने वाली मुसीबत) (जिनकी बुनियाद किसी इंसान हैवान चरिन्द चरने वाले जानवर परिन्द-उड़ने वाले जानवर जो कि खाना नः 8 में बैठे हुए ग्रह से मुतल्लका हो पर होगी) भेजा करता है। अगर ऐसी ग्रह चाल में इंसान पर अचानक कोई मुसीबत या मौत का भय आ खड़ा हो तो दुनिया के दूसरे दुनियावी साथियों के ताल्लुक में भी जोकि ऐसे प्राणी के उम्र के साथी हो अगर 2, 12 अच्छे हो साथ ही 8 और 11 आपस में दुश्मन हो तो न कोई अचानक मुसीबत आएगी और न ही कोई दुनिया दार साथी मुसीबत के वक्त धोका देगा। अगर किसी वजह से कोई मन्दी हवा का झोंका आ जावे तो दूसरे हम राही साथी हर तरह से मदद देकर रात की नींद या आराम होने के सामान पैदा कर देंगे। जिस तरह अचानक मन्दी हवा आ निकले उसी तरह ही मददगार साथी बिन बुलाए जाहरा व गैबी ढंग से दम के दम में मदद दे देंगे।

(ज) अगर खाना नः 12 और खाना 8 में कोई ऐसे ग्रह बैठे हो जो आपस में मिल जाने पर दुश्मनी का भाव पैदा कर ले या एक दूसरे के उपर असर बरबाद कर दे और साथ ही खाना नः 2 खाली हो तो ऐसी हालत में अगर ऐसे टेवे वाला प्राणी धर्म-मन्दिर आने जाने लग जावे तो खाना नः 12 और खाना नः 8 के बाहम दुश्मन ग्रहों का बुरा असर होना शुरू हो जाएगा दूसरे लफ्जों में ऐसा प्राणी अगर धर्म स्थान के अन्दर जाने से परहेज करे तो खाना नः 12 और खाना नः 8 के बाहम दुश्मन ग्रहों का बुरा असर न होगा। ऐसी हालत में धर्मस्थान के अन्दर मूर्ति वगैरा को अपना जिस्म का कोई अंग लगा कर अराधना करना मना होगा।

अपने देव ईष्ट को सर झुका कर प्रणाम् कर लेना कोई बुरा न होगा इसके बर्खलाफ

2. अगर खाना नः 8 और 12 में कोई बाहम दोस्त ग्रह बैठे हो या खाना नः 6 में कोई उत्तम ग्रह बैठा हो और ऐसी दोनों हालतों में खाना नः 2 खाली हो तो ऐसा प्राणी को धर्मस्थान के अन्दर देव ईष्ट को अपना कोई न कोई अंग लगाकर प्रणाम् करना सब तरह ही नेक असर पैदा करेगा।

3, 11, 5, 9, 10 मुश्तरका का असर किस्मत का गैबी असर व हवाई बारिश या अचानक उतार चढ़ाव मुतल्लका बर्जुगान

बचपन और शबाब (जवानी) किस्मत की चमक का जमाना यानि भाईयों के जन्म के दिन से अपना अहदे जवानी और अपने बच्चों के जन्म दिन से आईन्दा जिंदगी का हाल अपने बर्जुगों और अपनी औलाद का हाल या अपना माजी अपने जन्म से पहले का जमाना और अपना मुस्कबिल जो आईन्दा नसलों का हाल होगा।

खाना नः 9 अपने बर्जुगों की हालत बताता है लेकिन जब नः 3 में कोई ग्रह हो तो भाईयों के जन्म दिन से उस खाना नः 9 के ग्रह का असर टेवे वाले पर शुरू होगा और औलाद के पैदा होने के दिन से उसमें तबदीली आएगी अगर नः 5 और नः 9 में पापी बैठे हो तो औलाद के दिन से कोई रबारा नेक हालत हो जाने की उम्मीद नहीं गिनते बल्कि जब खाना नः 5 में पापी बैठे हो और उधर खाना नः 8 में कोई दुश्मन या मन्दा ग्रह बैठ रहा हो तो खाना नः 11 का ग्रह बिजली की तरह बुरे असर की चमक देनी शुरू कर देगा और बिजली आखीर पर या खाना नः 8 के ग्रह के मुतल्लका रिश्तेदार या खाना नः 5 के मुतल्लका रिश्तों की मारफत या उस पर (8 या 5) पड़ेगी अगर खाना नः 11 खाली हो तो

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

अपनी आमदन के ताल्लुक में सोई हुई किस्मत का जमाना होगा और माई बन्दों से भी कोई ऐसा फायदा नहीं गिनते अगर खाना नः 10 और खाना नः 5 में दोनों ही कोई न कोई ग्रह बैठे हो तो इन दोनों घरों के ग्रह बाहम जहरी दुश्मन होंगे। मसलन खाना नः 10 में चन्द्र हो और खाना नः 5 में मंगल अब यह दोनों ग्रह जो आपस में दोस्त है मगर ऐसे प्राणी की 24 साला उम्र (चन्द्र का जमाना) और 28 साला उम्र (मंगल का अहद) माता (चन्द्र) और भाई (मंगल) पर भला न होगा।

अगर खाना नः 9 में सूरज या चन्द्र बैठे हो तो खाना नः 5 में पापी बैठे हुओं का खाना औलाद पर कोई बुरा असर होगा। न होगा और न ही जिन्दगी को तल्ख करने वाली किसी मन्दी बिजली गिरने का खौफ होगा खाना नः 9 को अगर एक समन्दर गिने खाना नः 2 पहाड़ो का लम्बा चौड़ा सिलसिला होगा।

दोनों को मिलाने के लिए यह हवाई ताकत का मालिक दोनों ही जहां का ग्रह बृहस्पत (खाना नः 9 नः 2) दोनों ही का मालिक बृहस्पत गिना है) हवा की लहरों से अपना सुनहरी असर पैदा करता या फौकी उम्मीदों में पहाड़ी और समन्दरी सैर करता कराता होगा यानि अगर खाना नः 9 से बारिश से लदी हुई मौनसून की हवा चल निकले तो खाना नः 2 के पहाड़ से टकरा कर किस्मत के ताल्लुक में सोने की बारिश कर देगी लेकिन अगर खाना नः 2 खाली हो तो खाना नः 9 से निकली हुई मौनसूनी हवा खाली ही चली जाएगी। यानि अगर खाना नः 9 में उम्दा ग्रह हो और खाना नः 2 में भी कोई न कोई ग्रह बैठा हो तो ऐसे प्राणी को खाना नः 2 में बैठे हुए ग्रह की उम्र में अपने बर्जुगों की शानो दौलत का फायदा होता होगा लेकिन अगर खाना नः 2 खाली ही हो बैठे तो बर्जुगों के धन दौलत का ऐसे प्राणी को सिर्फ वहम या गुमान ही रहेगा मगर कोई ऐसा फायदा न होगा।

2. अगर खाना नः 2 में कोई ग्रह हो और खाना नः 9 खाली हो तो पहाड़ तो होगा मगर उस पर सब्जाजार कुछ न होगा यानि ऐसे प्राणी की आमदन या जर व माया खा कितनी ही हो मगर वह सिर्फ एक दिखावे का धन और जले हुए पहाड़ का नजारा दिखलाता होगा।

4, 10, 2 का मुश्तरका असर

(अ) किस्मत के मैदान की लम्बाई चौड़ाई या ऐसे प्राणी की किस्मत का मैदान जिसमें वो फैल सकेगा कितना लम्बा चौड़ा होगा, ऐसे मैदान में किसी भी दूसरे भाई बन्ध, माता पिता औरत या औलाद का ताल्लुक न होगा।

किस्मत के मैदान का रक्बा खाना नः 10 का ग्रह बता देगा मगर उस मैदान की मिट्टी की चमक खाना नः 2 (पहाड़ी या मैदानी) (पथरीली या खुश्की का हम वार टुकड़ा) और ऐसे मैदान में आबोहवा की मरतूब या खुश्क चरागाहों खुशगवार इलाके या पानी के चश्मों का हाल खाना नः 4 से जाहिर होगा अगर खाना नः 4 खाली हो या उसमें पापी बैठे हों तो किस्मत के मैदान में खाना नः 2 की स्वाह लाख चमक हो मगर अपनी प्यास के लिए पानी की जरूरत के वक्त वहां बैठे हुए पापी सांप (शनि), हाथी (राहू) और सूअर केतु गधे वगैरा (केतु) के भयानक नजारे पैदा करते रहेंगे यानि धन दौलत के चश्मे पर गंदा पहरेदार (पापी) होने की वजह से चश्मा का पानी कुछ अपनी शान न देगा यानि ऐसा प्राणी बेशक अपनी कितनी ही हिम्मत से क्या कुछ ही न बना लेवे मगर जब अपनी थैली में हाथ डालकर नकद माया गिननी चाहे तो उस थैली में पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े, सांप बिच्छू (शनि) और जलते हुए काले कोयले (राहू) और फटी हुई रंग-बिरंगी धज्जियां (केतु) अपना जलवा दिखा रहे होंगे।

खाना नः 10 की आलीशान इमारत या विस्तरा तक जला हुआ शहे जहान या जमाना का खानदान, गुलामां के खून का सबूत देने वाला दो हो रंगों का अक्सर जुगनु की तरह टिमलाता या खानों के कीमती पत्थर हीरों लालों की रोशनी की चमक से अन्धेरी रातों में भी चमकते हुए चांद से उमदा रोशनी देने वाला होगा। यानि अगर खाना नः 8 मन्दा हो तो मंदी हवा और मातम का जमाना बिन बुलाए तंग कर रहा होगा। बेशक खा कोई भी मौत का सदमा या नुकसान हुआ हो या न हो इसके बर्खलाफ अगर खाना नः 2 उत्तम हो तो गरीबी की स्याह रातों में मामूली से मामूली चिराग की बजाए कुदरती रोशनी रास्ता दिखाने के लिए स्वयं पैदा होगी क्योंकि ऐसा प्राणी बजाने खुद जन्म से या अपनी उम्र के जमाने से कितना ही नीचे दर्जे का हो।

(ब) अगर खाना नः 2 खाली हो तो खाना नः 10 यानि किस्मत का मैदान खा कितना ही लम्बा चौड़ा हो मगर उसमें कोई चमक या शान या दुनियावी जिंदगी का साजो सामान और आराम शायद ही कभी मुहैय्या होता होगा। इसी तरह ही अगर खाना नः 2 में कोई ग्रह बैठा हो और खाना नः 10 खाली हो तो किस्मत में लिखे हुए मालोधन का पार्सल हाकखाने या रेलवे स्टेशन पर बेशक पहुंच चुका हो मगर उसके लेने के लिए अपनी पहचान का सबूत सामान की जिम्मेवारी की कीमत और बाकी रसीद पर्चा शायद रास्ता में ही कहीं गुम ही हो गया होगा। जिसकी तलाशा के लिए कई कासिद भेजे मगर वो वापिस न आए और ऐसा प्राणी उनकी उम्मीद में रास्ता देखता ही देखता थक गया

(स) अगर खाना नः 2 और 10 दोनों ही खाली हो और खाना नः 4 में कोई बाराबाद ग्रह बैठा हो तो पीने के लिए पानी नजर तो आता होगा मगर पता नहीं चलता होगा कि इस जगह पहुंचने का रास्ता किधर है मृगतृष्णा में ऐसा प्राणी बेउम्मीदी में उम्मीदें बांधता हुआ। अपनी किस्मत के मैदान में बंधा हुआ पसीने के पानी से तरबतर होता चलेगा यानि जिंदगी और माया दौलत होगी तो जरूर मगर कब अपनी जरूरत के लिए मुकम्मिल उस बात का जवाब देने वाला शायद फिर कभी आएगा।

1, 7, 9, 11 मुश्तरका का असर

इन सब का हाल जैसा भी एक का हो चारों घरों में सबका वैसा ही होगा।

3, 11, 4, 7 का मुश्तरका का असर

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

धन की आमदन, फालूत धन और खर्च की लहर की हालत, (मुफरिसल धन दौलत के हाल में देखो)

8, 2, 4, 3 मुश्तरका का असर बीमारी का

बहाना सेहत का आखीर वक्त कूच, जायदाद, जद्दी चोरी ऐ यारी दोस्ती वगैरा मुफरिसल हाल सेहत बीमारी और इन्सानी उम्र के साल में देखो।

खास - खास असर

ग्रह दोस्त नही बाहम लड़ते, झगड़ा कराते दूसरे हैं
शनि रवि दो इकट्ठे बैठे, लड़ते ग्रह स्त्री से हैं
स्त्री ग्रह जब शनि से मिलकर, बैठे दो या कहीं भी हों
उन बैठे ग्रह जो कोई देखे, मरते अल औलाद से हों
इस जहर को घर नींबे से, राहू केतु हटाते हैं
अगर मदद न उनकी लेवे, मंगल केतु मर जाते हैं
एक दीवार के घर दो साथी, ग्रह मुश्तरका होते हैं
शत्रु ग्रह दो कभी न मिलते, दोस्त मिले ही लगते हैं

स्त्री ग्रह जब शनि से मिलकर खाना नः 2 में या कहीं भी और जगह बैठे हो तो जो ग्रह उन (स्त्री ग्रह व शनि मुश्तरका बैठे हो) को दृष्टि के असूलों पर देखेगा। उस ग्रह का मुतल्लका रिश्तेदार अल-औलाद की मौतों से दुखिया होगा।

वजह किसी दीवार फटे गर, दुगुनी जहर हो जाती है
अक्ल बुरी किस्मत हो मंदी, मौत खड़ी हो जाती है
ग्रह शत्रु में गुरु जो आवे, वैर खत्म हो जाता है
माता चन्द्र जब साथी होवे, मित्र सभी बन जाता है

किस खाना नः में हो	खाने में कौन ग्रह हो	तो किस ग्रह पर असर हो और क्या असर होगा
1.	केतु	सूरज हर तरह से ऊंच फल का होगा।
	राहू	सूरज जिस घर में बैठा हो। उस घर में सूरज ग्रहण होगा।
2.	बुध	बृहस्पत हर तरह से बरबाद होगा।
4	बुध	चन्द्र हर तरह से बरबाद होगा।
6	मंगल	सूरज हर तरह से ऊंच होगा।
	मंगल	केतु हर तरह से बरबाद होगा।
11	राहू	बृहस्पत हर तरह से बरबाद होगा।
	केतु	चन्द्र हर तरह से बरबाद होगा जब बुध नः 9 में हो।
	बृहस्पत	राहू हर तरह से बरबाद होगा जब बुध मन्दा हो।
12	चन्द्र	केतु हर तरह से बरबाद होगा।

जब कोई ग्रह ऐसे घर में आवे या बैठा हो जहां वो नीच मुकर्रर हो चुका है या वो ऐसे घर में बैठा हो जोकि उस ग्रह के दुश्मन ग्रह के दुश्मन ग्रह का घर हो। बहैसियत माल्कीयती या पक्का घर तो ग्रह का असर अमूमन मन्दा होगा। इसके बरबस जब वो ऐसे घरों में हो जो उसके लिए ऊंच हालत का मुकर्रर है या अपने दोस्त ग्रहों के घर में बहैसियत माल्कीयत या पक्का घर बैठा हो तो उसका असर अमूमन नेक होगा जब कोई ग्रह अपने पक्के घर में बैठा हो या कायम हो या उसके साथ उसकी बराबर की हैसियत का मुकर्रर शुदा ग्रह बैठा हो तो औसत हालत में उसका असर नेक ही होगा।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

कौन सा ग्रह सिर्फ अकेला ही बैठा हो तो क्या असर होगा

क्रमांक	ग्रह	क्या असर होगा
1.	अकेला बृहस्पत	टेवे वाले पर कभी मन्दा असर न देगा।
2.	अकेला सूरज	खुद अपना संघर्ष कर के खुद साख्ता अमीर होगा
3.	अकेला चन्द्र	हमेशा अपनी दयालुता और नर्मी से फांसी तक तक की सजा मुआफ करवा कर टेवे वाले की कुल (खानदान) नष्ट न होने देगा।
4.	अकेला शुक्र	कभी बुरा न होगा जब कभी बुरा होगा तो उस बुराई करने कराने में कोई न कोई दूसरा और साथी जरूर होगा।
5.	अकेला मंगल	चिड़िया घर का कैदी या बकरियों में पला हुआ शेर होगा।
6.	अकेला बुध	लालची देस परदेस में खाली चक्कर मुखन्नस हालत का असर होगा।
7.	अकेला शनि	अकेले सूरज के साथ खाली बुध का ही काम देगा।
8	अकेला राहू	एक अकेला तमाम ग्रहों की परवाह न करेगा और जमाने के सब दुश्मनों पर कड़कती हुई बिजली की तरह चमकता और टेवे वाले का हर तरह से तमाम मुसीबतों के ताल्लुक में बचाव पूरा-पूरा करेगा मगर माली हालत की शर्त न होगी यह मतलब नहीं कि गरीब ही बना देगा मगर जरूर ही अमीर बनाने की शर्त नहीं।
9.	अकेला केतु	या कुंडली में राहू से पहले घरों में बैठा हो या बाद के घरों में हर दो हालत में ग्रह अपना असर देने के लिए राहू के इशारा पर चलेगा। और हर वक्त यही अगूल बनाए रखेगा।

सर्पुदम वतो मायार खेशरा
तू दानी हिसावो कमो वेशरा

हर ग्रह के मन्दे या अच्छे हो जाने की आम निशनियां

क्रमांक	नाम ग्रह	मन्दा होने की आम निशनियां	मन्दी हालत में मददगार ग्रह
1.	बृहस्पत	सिर पर चोटी की जगह के बाल स्वयंगेव किसी बीमारी की वजह के बगैर उड़ जावे गले में माला रखने का आदी हो जावे, सोने का नुकसान या गुम हो जावे, झूठी अफवाहें बदनामी का कारण हो तालीम खाम-ख्वाह बन्द हो जावे।	माथे या पगड़ी पर जर्द तिलक लगाना, नाक का पानी खुश्क यानि नाक साफ करके काम शुरू करना मददगार होगा बचपन की उम्र में जिस दिन से नाक का पानी खुद-बखुद खुश्क हो जावे बृहस्पत मददगार गिना जावेगा।
2.	सूरज	सूरज रंग (लाल) गाय या भूरी भैंस का मर जाना या घर से गुम हो जाना जिस्म के अंगों को हरकत करने कराने की ताकत (खींचना या फैलाना) जाती रही या उश्वाह से हर दम थूक जारी रहे।	मुंह में मीठा डालकर पानी के चन्द घूंट पीकर काम शुरू करना मुबारिक होगा।
3.	चन्द्र	घर से दूध वाले जानवर मर जावें घोड़े की मौत हो जावे कुंआ या तालाब खुश्क हो जावे मदहूश करने की ताकत खत्म हो जावेगी।	दूसरों के चरण छूकर उनकी आशीर्वाद लेना मददगार होगा।
4.	शुक्र	अंगूठा बगैर बीमारी निकम्मा हो जावे या जिल्द (इंसान की चमड़ी) खराब हो जावे।	पोशाक का ख्याल रखना मददगार होगा।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

5.	मंगल	बच्चा पैदा होकर खत्म हो जावे आंख कानी हो जावे, खून खराब हो बैठे। जिस्म के जोड़ चलने से रह जावें, खून का रंग मुर्दे की तरह नजर आने लगे कुव्वते बाह मगर बच्चा पैदा करने की ताकत न हो।	मंगल बद में दिया हुआ इलाज मदद देगा। सुरमा सफेद का इस्तेमाल मदद होगा।
6.	बुध	दांत बरबाद, खुश्बू या बदबू का फर्क मालूम हो कुव्वते बाह धोखा देवे।	नाक छेद, दांत सफा रखना मददगार होगा
7.	शनिच्चर	मकान गिर जावे, भैंस मरे आग लगे जिस्म पर से बाल बिना बीमारी झड़ जावे खासकर पलकों और भवों के।	मिसवाक दातुन का इस्तेमाल मददगार होगा
8.	राहू	भूरे स्याह रंग बुढ़े की मौत या गुम हो जावे हाथ के नाखून झड़ जावें, दिमागी खराबियां श्यामला दुश्मन पैदा हों	मुश्तरका खानदान रहना सगुशगुन से ताल्लुक न बिगाड़ना सिर पर चोटी कायम करना खुद मुख्यार होकर न चलना मदद देगा।
9.	केतु	पांव के नाखून झड़ जाना, पेशाब या दर्द जोड़ की बीमारियां औलाद के निर्धन या तकलीफें और खराबियां	कान में सुराख करवाना। केतु की पालना करना मदद देगा।

फरमान नः 11

ग्रह चाली — रंग बिरंगियां

सिद्ध 12 ब्रहा, 9 निधि मोहमाई आकाश
राई घटे न तिले बढ़े, मच्छ भाई प्रकाश

1. ग्रहों के इलावा सिर्फ 9 निधि 12 सिद्धि के शब्द खाली बजते है उन्हीं दो शब्द से दुनियादारों ने बच्चों का नाम रखा और सिर्फ नाम पर ही कुछ लोगों ने किस्मत का असर माना है।

ब्रम्हा = बृहस्पत, मोह = शुक्र, माई = चन्द्र, आकाश = बुध,
राई= राहु, तिल=केतु, मच्छ = शनि, भाई = मंगल, प्रकाश = सूरज

Free by Astrostudents

ब्रहमांड में ग्रह चाली बच्चे की बदलती हुई अवस्था

1. बच्चा पैदा हुआ बन्द हवा से इस जमाने की हवा में आया। यह जमाना वह है जबकि बच्चे का जिस्म नरम, पोला और तबीयत बिल्कुल भोली भाली है। अभी सात ग्रह का असर पूर्ण नहीं हुआ और लोक परलोक के मुश्तरका ख्यालात उसमें पैदा हो रहे है। गुरु से तालीम हासिल की तो उस पर इस जमाना की हवा का असर सोलह आने होने लगातब कर्म धर्म करना सीखा और इज्जत बेइज्जती का फर्क मालूम होना शुरु हुआ तो उम्र का जमाना वह आया जो रूहानी हालत का हुआ। पट्ठे अब जो बढ़ने थे बढ़ा चुके गोया बृहस्पत की उम्र हुई सोलह साल।
2. इल्मो हुनर के बाद राजदरबार से खुद अपने हाथों से धन कमाना शुरु किया। तो यह वक्त अहद गुरज हुआ या बच्चा बालिग हुआ तो उम्र हुई 22 साल
3. अपनी कमाई से माता की सेवा करने लगा तो चन्द्रमा का जमाना आया उम्र हुई 24 साल
4. अपनी स्त्री, ताल्लुक बढ़े परिवार गृहस्थाश्रम और बाल बच्चे की बरकत का जमाना शुक्र का अहद हुआ तो उम्र हुई 25 साल।
5. खाना पीना भाईबन्दों की सेवा जंगी जदल, जिस्मानी दुःख बीमारी वगैरा का वक्त मंगल (नेकोबद) गिना गया तो उम्र हुई 28 साल।
6. बुद्धि के काम, तिजारत व्योपार हुनर दस्तकारी, दिमागी लियाकतों वगैरा से धन दौलत का जमाना बुध का अहद बना और उम्र हुई 34 साल।
7. सन्यास या मकान ज्यादा चालाकी की आंख से धन दौलत का ढंग पकड़ा तो शनिच्चर का राज फैला और उम्र हुई 36 साल
8. दुनिया के अन्देशा की फर्जी सोच विचार और ख्यालात की नकली हरकत का जोर हुआ तो राहू का जमाना आया और उम्र हुई 42 साला
9. अपने आपसे जब दुनिया का गोरखधन्धा हल न हुआ तो इधर उधर सलाह मशविरा के लिए पांव की नकली हरकत हुई या बच्चा चलने और दौड़ने लगा तो केतु का जमाना हुआ उभरा और उम्र हो गई 48 साल या दुनिया का लाल ग्रह चाली बच्चा 12 राशि के चार चक्कर लगाकर दुनिया की चारों खूंट में रोशन हुआ। दूसरे शब्दों में जब आकाश (खाली जगह) में बृहस्पत (हवा) का असर हुआ या जमाना की हवा में इन्सान फिरने लगा तो उसमें हरकत की ताकत पैदा हुई। अब हरकत से गर्मी आग या दुनिया में उसका साक्षात देवता सूरज निकल आया जो निकलते ही सुर्ख रंग देखा गया (सुर्ख रंग मंगल का है) यह बंजारा दिन के नाम से जाना गया। सूरज जिस कदर ऊंचा हुआ गर्मी बढ़ने लाली घटी और हवा ने सूरज का रुख किया बृहस्पत ग्रहों का गुरु था पिता था मगर सूरज दुनिया का पिता और रूहानी मालिक बना। बुध की अक्ल का गोल दायरा भी सूरज का अपना ही आकार है। सूरज निकला तो बृहस्पत मंगल चन्द्र और बुध सबके राय एक हो गए और शुक्र राहु और सूरज का लड़का शनिच्चर केतु को साथ लिए बाई तरफ हो बैठे जो हर एक के मुड़ने का हाथ है मगर मुड़ेगा कौन सूरज जो अपनी गोलाई के चक्कर के कारण हमेशा आगे को ही चलता जा रहा मालूम होता चला आया है। किसी ने उसे मुड़ते नहीं देखा और न उसने अपना

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

औसत हालत का असर अमूमन उन घरों में होगा जो घर के किसी ग्रह के लिए बगैर पक्का घर मुकर्रर नहीं कायम और नेक हालत का असर उस वक्त होगा जबकि उस ग्रह का साथ हो जावे जो उस ग्रह के बराबर का ग्रह मुकर्रर है और वह ग्रह जागता हो

जब दृष्टि की नजर से बाहर ग्रह अकेला ही बैठा हो	किन घरों अमूमन मंदा होगा	कहां अमूमन अच्छा होगा
बृहस्पत	6, 7, 10, 11 मंदे ग्रह को केतु से मदद होगी	1 से 5 8, 9, 10
सूर्य	6, 7, 10	1 से 5 8, 9, 11, 12
चन्द्र	6, 8, 10 से 12	1 से 5, 7, 9
शुक्र	1, 6, 9	2 से 5, 7, 8, 10 से 12
मंगल	4, 8	1 से 3, 5 से 7, 9 से 12
बुध	3, 8,से 12 खाना नः 9 में हमेश ही मन्दा नहीं न ही खाना नः 11 में हमेशा लानती होगा	1, 2, 4, 5 से 7
शनि	1, 4, से 6	2, 3, 7 से 12
राहू	1, 2, 5, 7, 12	3, 4, 6
केतु	3 से 6, 8	1, 2, 7, 9 से 12

1. दृष्टि की नजर से बाहर से मुराद यह है कि उस ग्रह कोई भी और कोई ग्रह किसी तरह की दृष्टि वगैरा से देख सकता हो या ऐसा ग्रह अकेला ही बैठा हो
2. जब ऐसे घरों में हो जहां कि वह नीच मुकर्रर किए गये है या अपने दुश्मन ग्रह के घर में बैठे होवे।
3. जब ऐसे घरों में हो जहां अपने घर का मालिक या अपने दोस्त ग्रह के घर बैठे होवे।

Scan by Astrostudents

☆ रास्ता बदला न पीछे हटा मगल दोस्त की लाली ज्यों-ज्यों सूरज ऊंचा हुआ सफेदी में बदलती गई और दुनिया को रोशन करने लगी। गोया मंगल अपनी किरणों से सूरज और दुनिया की जमीन शुक्र के दरम्यान खूब जोर से तन गया। दुनिया का दिल या इंसान के दिल चन्द्रमा ने अपनी अलहदा खिचड़ी पकानी छोड़ दी और अपना घोड़ा (चन्द्र) को घोड़ा भी माना है और दूध सफेद रंग सूरज के रथ में जोड़ दिया (सूरज को रथ माना गया है) और खुद सूरज के दिल के अन्दर बैठ गया। या इंसान का दिल दुनिया और दुनिया का दिल चन्द्रमा, सूरज के जिस्म में जा बैठा। बृहस्पत की हवा या राजा इन्द्र ने परलोक से इस दुनिया का रुख किया और निकलते ही सूरज (आग गर्मी) के हुक्म को पूरा करने के लिए पीले हवाई शेर को सिंह राशि के मालिक सूरज का प्रणाम् करने को भेजा जो मेख के नः 1 के मंगल को ऊंच कर रहा है और मंगल की किरणें बना-बना कर शुक्र की जमीन को खूनी, झंडे के मालिक से मैदान जंग बना रहा है सिंह का सूरज खुद शेर है मुंह लाल करने वाला मंगल उसे और भी ऊंची से ऊंची हालत में कर रहा है शेर के मुंह को मैदान जंग के खून की लाली का रंग नहीं चढ़ता वह लाल होने की बजाए और भी चमकता चला जा रहा है मंगल भी नर ग्रह है मैदान जंग के अरमूलों को चलाने वाला। मुकाबले पर शुक्र की जमीन सबको एक ही आंख से देखने वाली कानी औरत है इसलिए मंगल उस पर हमला नहीं करता किरणों को वापिस ले जाता है और सूरज और बृहस्पत के शेरों को (कानी अबला) निहायत गरीब की हकीकत बयान करता है। मंगल निर्णायक है या निर्णय करने का मालिक है। बृहस्पत हवाई शेर दयालु या दया का साक्षात देवता है किसी से दुश्मनी नहीं करता सूरज न्याय कर्ता है जिसमें दया और इन्साफ दोनों शामिल है क्योंकि उसके जाहिरा गुस्सा के अन्दरूनी वजूद में चन्द्रमा का शन्ति वाला दिल बैठा हुआ नजारा देख रहा है। फैसला होता है कि पांव पड़ी नीचे लेटी एक ही आंख की मालिक कानी औरत पर मर्दों का हाथ उठाना मंगल का काम और हमला करना शेरों और बहादुरों का काम नहीं। चुपचाप बैठा हुआ बुध अपनी अक्ल का दायरा विशाल करता है मिथुन राशि नः 3 पैदा हो जाती है या मेख के नम्बर एक के मंगल व सूरज मिलकर तीन होने पर मिथुन मिलावट या मर्द औरत का जोड़ा या मर्द औरत की मिलावट की बाहमी अक्ल या कायदे व विषय की ताकत साथ मिल बैठती है बुध शुक्र की अपने घर में ही पालना करने लग जाता है दूसरी तरफ शनिच्चर जिसने शुक्र (जमीन औरत) को देखने के लिए अपनी आंख उधार दी थी समझाता है कि मेरे होते हुए यह सब तेरी, (शुक्र की) आंख की नजर का सिर्फ एक मामूली करिश्मा है गोया शनिच्चर ने अपने बाप सूरज को बर्खलाफ की औरत को सलाह दी जो अमूमन भोली-भाली ही मानी गई है उसके फरेब में आ गई उसकी आंख शनिच्चर की मगर मिट्टी की शुक्र की जो जाहिरा भोली-भाली गऊ नजर आ रही है मगर उसकी शैतान आंख के एक ही मुसकुराहट के करिश्मा ने सूरज और बृहस्पत के शेरों को नीचा कर दिया, सब तरफ नीच फल पैदा हो गया जिस पर दुनिया में जानकारी शुरू हुई और मंगल चौकोर ☐ शरम के पेट में छुरिया फिरने लगी गोया वह राहू बन गया। जिससे दिमाग मेम नकली हरकत होने लगी अब मंगल की पेश नहीं जाती वह सूरज और बृहस्पत दोनों की खातिर जो सबके पिता है आंख से मार देने की अवज्ञा से तंग होने लगा और खुद अपने हाथ से उसे मार देने पर तैयार हुआ ऐसी हालत में अगर वह अकेला होवे तो क यराना (बुजदिली) की कारवाई कर जावे। इसलिए चुप है और मंगल के मौजूद होने हुए

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

राहु भी गुम है जिसकी वजह से मर्द औरत का जोड़ा कामदेव को अन्दर छुपाए फिर रहा है। मगर मगल दुश्मनी नहीं छोड़ता जब काबू आया औरत को मार ही देने का असूल बरतने लगा किस्सों को ताड़ शुक्र को केतु की मदद मिलने पर या कामदेव की मेहरबानी और मंगल की सलाह से किरणे फिर जमीन पर शुक्र को मार देने या नीच करने की बजाए उसके चमकाने को वापिस हुई अब जमीन क्या चमके सब ग्रहों को शनिच्चर की शैतानी मालूम हो गई। बृहस्पत की हवा हुक्म बजा ला रही है। मंगल का मैदाने जग अन्दरूनी तौर पर गर्मी नहीं छोड़ता वह सूरज के हुक्म या मंगल की किरणों को कभी इधर कभी उधर करता है। कशमकशा पैदा हो गई। किरणें सूरज का कुछ बाड़ नहीं सकती बृहस्पत की हवा भी जोर पकड़ रही है शुक्र की माया के झगड़े और मिट्टी के जर्रे साथ उड़कर सब की आखों में पड़ने लगे। मगर उसकी आखें बदस्तूर देख रही है क्योंकि शनिच्चर की बनी हुई है यही जर्रे दुनिया के झगड़े है इसलिए उनसे वही बच्चा जिसने शनिच्चर की आंख से आंख न मिलाई जर्रों से गर्मी बढ़ी मैदान मर्ग हुए मगर ऊंचे पहाड़ ठंडे रहे और कायनात के सर्द और मर्ग दो पहलू हो गये। गर्जे कि औरत के नयरगुम (मुस्कराहट) की आंख के शरारों से सैकड़ों बखेड़े और जंगोजदल होने लगे। यहां तक कि दुनिया लड़ाई का मैदान बन गई और सुख दुख की नदियां या रेखाएं हाथ के महादीप में बहने लगी। मंगल ने नजारा दिखाया चन्द्र ने तमाशा खा मगर रेखाओं के समन्दर (चन्द्र का दूसरा नाम) ने शांति न छोड़ी। पानी आहिस्ता-आहिस्ता गर्म हुआ मगर खुश्की का तमाम ब्रह्मांड या शुक्र की कुल जमीन या हाथ का महाद्वीप सूरज और शुक्र की बाहमी दुश्मनी के सबब से इतना तंग हुआ कि सूरज को दवा लेने के लिए सारे सारा ही उठकर दौड़ता हुआ मालूम होने लगा। बृहस्पत की हवा में शुक्र की मिट्टी के जर्रे तूफान जोर से फैल गये। तमाम मुतल्लकीन तंग हुए जो सूरज की तपिश को मद्धम किया मगर उस के रथ को न कर सके और आखिर सबने अपना आप ही खराब किया और सूरज का कुछ न बिगाड़ सक संक्षिप्तः अहिस्ता-अहिस्ता सूरज का रथ छुपने लगा और काली रात शनिच्चर का पहरा होने लगा। किरणें खत्म हुई मंगल चला गया और मंगल की गैर हाजरी में राहू भी आ निकला रात हो गई सूरज की पुरानी चमक बृहस्पत की ठंडी हवा के साथ चन्द्र की ताकत से फिर दावारा पाहिर होने लगी। गर्मी घटी, सर्दी बढ़ी। जमीन के को कुछ शान्ति हुई और समुन्द्र नेभी गर्मी को अपने घर के अन्दर से दरबदर करना शुरू किया। राहू ने रात खत्म की तो फिर ठंडी हवा चलने लगी जिस पर रात के बाद दिन के फरक की हद बन्दी या केतु निकल आया दिन खत्म और रात शुरू के बाद राहू था अब फिर नये सूरज की उम्मीद हुई या राशि मण्डल में ग्रह वाली बच्चे को ज्यों-ज्यों हवा लगने लगी बुद्धिक या अक्ल आने लगी और जर्द से सब्ज रंग होने लगा जो बुध का रंग और जमाना है अब जमाने की हवा अक्ल तो देगी मगर जर्द से सब्ज करेगी यानि बृहस्पत की मदद कम होती जाएगी और उसके बुध के सब्ज रंग से मिली हुई अक्ल से ही इन्सान धन दौलत के कमाने की धुन और लगन में रात दिन मरते फिरना सीखेगा क्योंकि बुध बृहस्पत से दुश्मनी पर है या कहती है कि बच्चा बड़ा हुआ मगर बृहस्पत की उम्र घटती जाएगी। पैदायश के वक्त बृहस्पत पूरी उम्र का था हर तरह से साफ या जमाने की हवा से कई रंग बनने लगे जर्द से सब्ज हुआ तो (नीला रंग) राहू साथ मिला गोया दिमाग में नकलो हरकत पैदा हो गई और नेकी के साथ बदी करने का बीज आ मला आखिर यहां तक कि सब जमाना उलझ गया फिक्रो गम खड़े हुए । मगर शुक्र का मुकाम है कि राहु और बृहस्पत बराबर है आर बाहम कभी दुश्मन नहीं होते दोनों के मिलाप ने सब्ज रंग पैदा हुआ तो बुध आ निकला और जर्द बिल्कुल ही जाता रहा यानि अक्ल पूरी हुई तो जमाने की हवा कम ऐतबार ही उठ गया और नीले रिजक यहाने मौत का मसला खड़ा हो गया। गोया फरिश्ते का लिखा हुआ या कुदरत का लिखा भूल ही गया इतना ही नहीं बल्कि जब उस बुध या बुद्धि की अक्ल का गोलदायरा बृहस्पत के बुर्ज पर आया तो बृहस्पत की हवा का वह चक्र बन्ध कि उसे निकलने को सिर्फ वही खाली जगह अकाश बाकी रह गई। किस्मत की हवा के बात बबूले बनने और आसमान सर नजर से गायब हुआ रात आई आग बुझने और सर्दी उभरने लगी घबराहट खुली और शन्ति आने लगी चन्द्र चमक रहा है। दिन के थके हारे सोने लगे कई तरह की खराबियां होने लगी। जिसके पर्दे में हवा से आग हुई आग से पानी पानी से मिट्टी बनी या बच्चों जमाना की हवा से गर्मी सर्दी महसूस करने और माता पिता के साया में आराम करने लगा और वहीं बन्द मुट्ठी के आकाश की हवा अब उसे सांस का काम देने लगी। इसी असूल पर माना है कि हर सांस के आने और जाने में इंसान की किस्मत का ताल्लुक होता है जिसकी वजह से कोई बुद्धिमान या बुध का मालिक या अक्ल मन्द यह नहीं दावा बांध सकता कि एक के बाद दूसरा सांस आयेगा या नहीं मगर हरदम यही ख्वाहिश करता है कि अगर एक सांस बाहर को गया हुआ है तो दूसरा मेरे अंदर ही आ जाए। यानि अगर दाएं ने किस्मत की हार दी है तो बायां ही मदद करे वही दायां बायां करता रात दिन चौबीस घन्टे से बारह राशि गुणा 7 का ग्रह या 84 लाख सांस पूरे कर लेता है और इस दुनिया की नरक चौरासी या 12 राशियों में सातों ग्रहों की घोट को सहारता चला जा रहा है अगर यह सांस हवा या बृहस्पत न होता तो सब चौरासी खत्म हो जाती क्योंकि बृहस्पत उड़ जाने पर बुध का गोल अंडे या सिर्फ खाली खप्पा ही रह जाएगा। जो दुनियावी ख्याल में अण्डे से बृहस्पत की जर्दी निकाला हुआ अंडे का खाली खेल या दाया सिर या बच्चे के ऊपर की झिल्ली या जेर होगी। जो बृहस्पत व राहू के दरम्यान हदबन्दी करने वाली चीज आसमान की

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

हुदूद (उफक या निगाह की हद) कहलाएगी जिसकी जांच पड़ताल इस इल्म सामुद्रिक से होगी।

जर्द कनक,जौ के पौधे और वृक्षों के पत्ते भी निकलते ही पीले जर्द रंग के होते है बंद बरतन में पैदा हुए पौधे इस बात का साफ करते है।

फरमान नः 12

कुंडली की बनावट (रचना) और दुरुस्ती (संशोधन)

कुंडली

क्यापा (अनुमान)

हाथ व पांव की उंगली के नाखून के सिरे से कलाई व टखना तक और 9 ग्रह 12 राशि की कुंडली से बाहर तरफों के दरम्यानी मैदान में नबातात (जड़ी बूटियां और धातुएं इत्यादि) जमावात हैवानात (कौ में) किस्म-किस्म के लोग हैवानात मकान आयो-खास व जाएव रिहायशी ख्याव शगून, माल, मवेशी, चरिन्द, परिन्द, दरिन्द, दोस्त दुश्मन जहर व अमृत दुनियावी दीगर साथियों और इल्म क्यापा वगैरा से जो सामुद्रिक जरूरी हिस्से है वक्त से पहले ही लिखे हुए नौ निधि बारह सिद्धि के खजाने की कर्मी वेशी के मुतल्लका कुदरती और अनमेट (अमिट) लेख या हुक्मनामा को पढ़ा जा सकता है।

टेवे की आसान दुरुस्ती

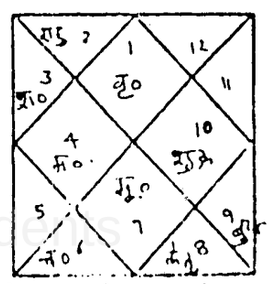

Free by Astrostudents

इल्म ज्योतिष के मुताबिक बनाई हुई जन्म कुंडली के लग्न के खाना नः को 1 का अंक देकर जब कुंडली बन चुकी तो मालूम हो जाएगा कि लग्न से हर ग्रह कौन-कौन से घर है। इस तरह बैठे हुए ग्रहों के मुताबिक मकान कुंडली जो दूसरी जगह दर्ज है बनाई और हर एक ग्रह की मुतल्लका चीजों से पड़ताल की या उसके खून के रिश्तेदारों हर एक से मुतल्लका का हाल और सब ग्रहों का फल मिलाया गया अब तमाम हालात आम उम्र और साल वार देख ले।

दूसरी हालत में देखो कि हाथ रेखा के अनुसों पर कुंडली बनाने के ढंग से नर ग्रह कहां-कहां मालूम हो रहे है जिस घर में कोई एक नर ग्रह भी पूरे तौर पर तसल्ली का मालूम होवे उस उस घर में मुकर्रर करके बाकी सब ग्रहों को क्रमवार लिख देवें। अब लग्न सारणी के मुताबिक देख ले। कि जन्म वक्त दरअसल क्या हुआ साथ ही इस तरह पर दुरुस्त किए हुए टेवे का फल देश बोल कर देख ले फिर आया गुजरा हुआ हाल मिल गया। ग्रह स्पष्टी के लिए हर ग्रह में उस के खानावार अरार की दी हुई चीजों व ग्रह मजकूर (वर्णित) की आम चीजों का तल्लुक भी बोलकर देख ले। जब पूरी तसल्ली हो जावे कि मकान कुंडली के मुताबिक भी अब वह टेवा दुरुस्त हो गया है तो आगे फलादेश देखना शुरु करें। इल्म ज्योतिष की बनाई हुई जन्म कुंडली इल्म ज्योतिष और सामुद्रिक में राशियों के एक ही नम्बर मुकर्रर है कुंडली वाले के जन्म के मुताबिक जो राशि नम्बर होता है पंजाब में इल्म ज्योतिष वाले वह अंक सबसे ऊपर चौकोर जगह में लिखते है इस नम्बरी को बहलोग जन्म लग्न गिनते है इल्म सामुद्रिक में उसी ऊपर की चौकोर को खाना नः 1 दे दिया गया है ताकि बार-बार न गिनना पड़े। कि हर एक ग्रह जन्म लग्न से कौन से नम्बर के घर में या यूं कहिए कि पंजाब में कुंडली के बारह खानों की शक्ल पंक्ति तौर पर मुकर्रर है या इल्म ज्योतिष वाले उदर क चौकोरे खाना में जन्म वक्त की राशि के नम्बर का अंक लिख दे दे या। सामुद्रिक वाले उस ऊपर के चौकोर का खाना नः एक दे देवें बात एक ही है नः 1 मेष 2 वृष 3 मिथुन 4 कर्क 5 सिंह 6 कन्या 7 तुला नः 8 वृश्चिक नः 9 धन नः 10 मकर 11 कुंभ 12 मीन

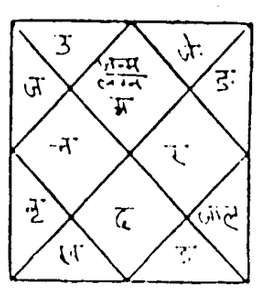

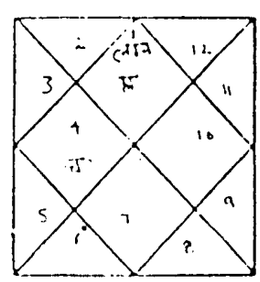

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

फर्जन किसी की जन्म राशि या जन्म लग्न की राशि सिंह जिसका नः है पांचवां ज्योति वाले तो लिखेंगे खाना अ में अंक नः 5 ब में 6 और आखिर बिल तरतीब के खाना जमीन अंक नः 10 लिखेंगे ज्योतिष वाले खाना नः 1 ब को कहेंगे कि यह ब वाला खाना जन्म लग्न से दूसरे नम्बर पर है, सामुद्रिक वालों के लिए भी खाना नः ब होगा खाना नः 2 वगैरा। खाना अ से दोनों विधाओं वालों ने शुरु करना है ज्योतिष में वह लग्न कहलाता है सामुद्रिक में यह 'अ' में अंक नः 1 लिखने से सामुद्रिक में राशि नः 1 में ब मुमकिन नहीं हो जाती यह लग्न है 'अ' को 1 ब को 2 ज को 3 घ 4 बिल तरतीब हिन्दसा (अंक) देकर लिखी हुई कुंडली निम्नलिखित होगी। लाल किताब की पक्की कुंडली खाना नः ब में 4 का अंक देखकर ज्योतिष वाले कहेंगे कि यह ब का घर का कर्क राशि नः 4 है मगर नहीं दरअसल यह घर सामुद्रिक में खाना नः 4 और ज्योतिश में जन्म लग्न से चौथा घर है सामुद्रिक में राशि नक्षत्र के बाद में उड़ा ही दिया गया है कुंडली के अंक बदलने से सामुद्रिक वालों ने लग्न से हर एक घर गिन लिया अतः यह राशि नः का अंक नहीं लेंगे या यूं कहो कि सामुद्रिक वाले एक पक्की कुंडली बनाकर उसमें सबसे ऊपर चौकारे में 1 का अंक लिखकर तमाम बारह खानों में अंक लिख देंगे और जहां सामुद्रिक वालों का अंक नः 1 है उस घर में ज्योतिष वालों की बनाई हुई कुंडली के इस घर अंक वाले ग्रह को लिख देंगे जो अंक के उन्होंने वक्त की जन्म राशि का सबसे ऊपर के चौकोर खाने में लिखा है। अब सामुद्रिक वालों की कुंडली के हिसाब से हर ग्रह का पता लग गया कि वह जन्म लग्न से कौन से घर है इस तरह जब पता लग गया कि हर एक खाने में कौन-कौन सा ग्रह है तो लाल किताब के मुताबिक अब देखना शुरु करें।

लाल किताब की 'चन्द्र कुंडली'

जिस घर में ज्योतिष वालों ने शब्द चन्द्र का ग्रह लिखा हो उस घर को जन्म लग्न वाली राशि का नम्बर लगाकर तमाम खानों में बारह अंक पूरे कर देंगे इस तरह से जहां भी एक का अंक आवे वह घर सामुद्रिक में चन्द्र कुंडल के देखने के लिए पहला खाना होगा।

पैदायश 2 चैत सम्वत 1992 शनिच्चर व मुकाम लाहौर छावनी सन 5 बजे सुबह मुताबिक 14-3-36 हो तो उस दिन की अब लाल किताब के लिए दिन वाली चन्द्र कुंडली में चन्द्र के जन्म लग्न की राशि यानि अंक नः 11 दिया तो नहीं चन्द्र कुंडली निम्न अवस्था होगी या अंक नः 1 को अपनी ऊपर की जगह किया तो लाल किताब के मुताबिक लाल किताब की कुंडली होगी।

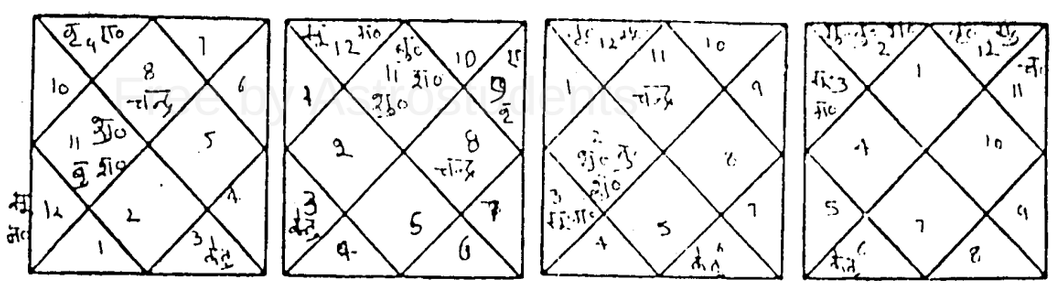

अब ऊपर की लाल किताब वाली चन्द्र कुंडली का असर अचानक और सहवन और भूल भलाए कभी-कभी जाहिर होगा और वह भी महादशा के खाली रखे हुए सालों में यह होगा पक्का भेद जिसे राशि फल कहकर शक का फायदा उठा लेंगे। राशिफल ग्रह फल का फर्क वगैरा जुदी जगह सिखा गया है। उस शख्स की औरत का हाल उसी तरह ही देख ले जिस तरह कि जन्म कुंडली से मर्द का हाल देखते है वर्षफल भी उसी लिहाज और ढंग पर होगा जिस तरह कि जन्म कुंडली और मर्द का है फर्क सिर्फ यह है कि शादी दो पहले ऊपर की चन्द्र कुंडली अचानक और सहवन असर दिया करेगी।

मगर शादी के दिन या औरत आने पर पूरा-पूरा फल देगी जो औरत का मुकम्मल हाल होगा और राशिफल बनकर मदद देगी इल्का ज्योतिष में जन्म कुंडली बनाने का तरीका बमूजब इल्म ज्योतिष सूरज गिना जावेगा जिस राशि नः में

नम्बर राशि→	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
नाम राशि का	मेख	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
मिन्ट घण्टे	1-12 घ. मि.	1-36	2-0	2-24	2-24	2-24	2-24	2-24	2-24	2 घंटे	1-36	1-12
अवधि सूरज	तीन	4	5	6	6	6	6	6	6	5	4	3
प्रति राशि प्रतिदिन	घड़ी	घड़ी	घड़ी	घड़ी	घड़ी	घड़ी	घड़ी	घड़ी	घड़ी	घड़ी	घड़ी	घड़ी
नाम महीना	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मंगर	पोह	माघ	फागुन	चैत

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

एक घड़ी बराबर होती है 24 मिट के राशि नः
1 और 12 = 3 घड़ी 4 से 9 = 6 घड़ी
2 और 11 = 4 घड़ी 5 से 8 = 6 घड़ी
3 और 10 = 5 घड़ी
मुख्य काल = असूल वक्त सूरज का राशि मुकर्रर दाखिल होने का कुल = 1 दिन से 60 घड़िया

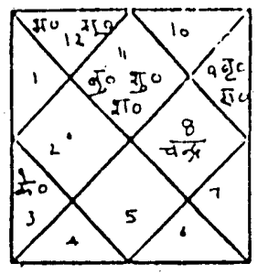

उदाहरणः-

वक्त पैदायश सुबह पांच बजे शनिवार 2 चैत सन्वत 1992 मुताबिक 14 मार्च 1936

सबसे पहले की कुंडली की शक्ल बनाई मगर उसमें कोई अंक नहीं लिखा। उर्दू की जन्तरी 1936 मुरान्नका (मुद्रम) पं. देवी दयाल में लग्न सारणी 12 ही महीनों की दी गई है इस लग्न सारणी में हर एक राशि नः के सामने वक्त घंटा और मिन्टों में लिखा है यानि हर एक महीने की हर एक तारीख में वक्त के अंक लिखे है हर एक तारीखा में पहली राशि के सामने जो वक्त लिखा है वह सुबह (A.M) सूरज निकलने की तरफ से शुरु होता है हर राशि के सामने जो वक्त लिखा है वह वक्त उस राशि के खत्म होने का है यानि उस राशि का जमाना दिए हुए वक्त पर खत्म हो जाएगा। जिसके बाद उस राशि के बाद की राशि चलेगी।

2) ए वक्त पैदायश के मुताबिक जन्म वक्त की राशि का नः 11 या कुंभ मालूम हुआ तो ऊपर की बनाई हुई कुंडली में सब से ऊपर की चौकोर में अंक नः 11 लिख दिया और बाकी खानों में बाकी अंक भर दिए यानि 11 से बाद उसके बाद जिस-जिस कि अंक नः के साथ जो जो ग्रह जन्त्री में लिखे हैं वह हुबहु वैसे के तैसे ही नकल कर दिए तो मालूम हुआ कि चन्द्र बाकी रह गया है।

3) जन्त्री के दाखिला औकात (प्रवेश समय) चन्द्रमा केस खाना में इस राशि में जिस वक्त दाखिल होगा वह शख्स घड़ी में लिखा है जिसको घंटों और मिन्टों में हल कर लेंगे।

4) समय प्रवेश चन्द्रमा के सामने दिए हुए वक्त से अभिप्राय यह है कि सूरज निकलने के बाद चन्द्रमा इस राशि में उस दिए हुए वक्त पर जाएगा मगर उस वक्त से पहले नहीं या उस वक्त के शुरु होने से पहले चन्द्रमा पहली ही दी हुई राशि में गिना जाएगा।

5) सूरज निकलने का वक्त भी जन्त्री में दिया है अतः इसी तरह से पता लग गया कि कुल कितने बजे के वक्त पर चन्द्रमा दी हुई राशि में जाएगा।

6) इस मिसाल के मुताबिक चन्द्रमा तो 13-3-36 को ही वृश्चिक राशि में 30 घड़ी 45 पल दिन चढ़ने पर जा चुका है और 15-3-36 को 53 घड़ी 19 पल पर वृश्चिक की बाद की राशि में जाएगा। संक्षिप्तः 1-3-36 को चन्द्रमा वृश्चिक में ही है। इस लिए कुंडली में जिस खाना नः में अंक नः 8 (वृश्चिक है) वहां चन्द्रमा लिख दिया।

7) जिस अंक नः में चन्द्रमा लिख हो उस खाना नः को लग्न की जगही कर देवे तो चन्द्रमा सबसे ऊपर खाना नः में आ जाएगा ऐसी कुंडली ज्योतिष की चन्द्र कुंडली कहलाएगी।

8) लग्न साखी मद्रास के वक्त की बुनियाद पर बनाई गई है और मद्रास के वक्त के मुताबिक ही सब घड़ियां घन्टे चल रहे है और घड़ी टाईम पीस के जरिए ही वक्त पैदायशा देखा गया इस लिए किसी हालत में भी सूर्योदय के ढंग पर कुंडली बनाने का जो एक तरीका है पड़ने की जरुरत नहीं।

वहमः इल्म ज्योतिष में कुंडली की बुनियाद जन्म वक्त का लग्न है जिसका वक्त तकरीबन-तकरीबन दो घंटे लगातार एक ही होता है फर्जन दो बजे से लेकर चार बजे तक पैदाशुदा बच्चों के लिए एक ही लग्न होगा

जन्म कुंडली ज्योतिषि की

चन्द्र कुंडली में जिस खाना नः में चन्द्रमा ऊपर के हिसाब से आवे वह खाना नः ऊपर के चौकोर में लिखकर वही ग्रह नकलनन कर देवे। ऊपर की मिसाल से चन्द्र कुंडली होगी। लाल किताब के हिसाब से हालात देखने के लिए वही ज्योति वाली बाकी वही ग्रह बदस्तूर ज्योतिष वाले जो जन्म कुंडली में थे लिखे गये है। 1) वहम इल्म ज्योतिष वाले जो जन्म कुंडली की बुनियाद जन्म वक्त का लग्न है। जिसका वक्त तकरीबन तकरीबन दो घंटे लगातर एक ही होता है फर्जन दो बजे से लेकर चार बजे तक पैदा शुदा बच्चों के लिए एक ही लग्न होगा वह एक ही लग्न के सब ही किस्मत का जवाब तकरीबन एक ही होगा। 2) इल्म सामुद्रिक में 12 साला या नाबालिग बच्चे की रेखा का ऐतबार नहीं गिनते ऊपर के दोनों वहमों का जवाब दोनों इल्मों की कुंडलियों के मिल जाने पर दूर होगा लेकिन हो सकता है कि आखिर पर वह कुंडलियां किसी तरह भी न मिले ऐसी हालत में दोनों को गल्त समझ लेना मुनासिब न होगा। फर्क यह होगा कि अगर इल्म ज्योतिष वाली कुंडली उस बच्चे की

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

गुजश्ता (गुजरी हुई) पुश्तों का हाल बताएगी। यानि अगर उस हरत रेखा जाकि कुंडली के जरिये उस शख्स से न मिले तो उसके बाये या या दादे से जरूर जा मिलेंगे ऐसी हालत में पितृ या मातृ ऋणों की वजह फर्क का प्रयत्न होगी मगर कुंडली गल्त न समझी जाएगी। इसलिए ऐसे इल्म ज्योतष वाले टेवे के लिए सबसे पहले ऋण का उपाय करें। इस फर्क का मतलब यह न ले लेवें कि दोनों इल्मों की कुंडलियों पर नजर सानी (दृष्टि पात) ही न की जावे कि फर्क क्यों है मकसद यह है कि हर चन्द्र देखभाल की और फिर भी फर्क ही रहा तो ऊपर का अलाज मददगार होगा। मगर जरूरी बात तो यह होगी कि फर्क निकाल ही लिया जावे मर्द का दाया हाथ (सूरज) तकदीर जाहिर अपने आपका काम और बायां हाथ (चन्द्र) तकदीर बजुर्गों का हिस्सा गैबी मदद के हालात से मुतल्लका है औरत का यही हाल उल्ट हाथों माना है अगर किसी शख्स का दायां और बायां दोनों हाथ आपस में फर्क करते हों तो दोनों हाथों का हाल बिल्कुल जुदा-जुदा देख कर फिर दोनों के असर का मुकाबला लेकर मुकम्मल नतीजा होगा उसकी आम जिंदगी में दाया हाथ ज्यादा असर करेगा मगर बाएं का असर भी अत्फाक होगा। जो चन्द्रमा और शुक्र के वास्ते जरूर असर देगा नर ग्रह सूरज बृहस्पत और मंगल का फल दाएं हाथ पर जयादा होगा। बाकी ग्रह मुकन्नस (न ही नर न ही मादा यानि खुसरे ग्रह है) इसलिए दोनों तरफ यानि दाएं और बांए के हिसाब वह अपना अपना असर दोनों के वास्ते में दे दिया करते है। आमतौर पर इंसान दिमाग के बाएं तरफ के खानों से काम लेता है जिनके ताल्लुक दाएं हाथ पर होता है और दिमाग के दाएं तरफ के खानों से कम ही काम लेता है जिनका ताल्लुक बाएं हाथ से है इसलिए अगर कोई रेख बाएं हाथ पर ही हो वे और दाएं पर जाहिर न हो तो उस रेखा का असर कम ही गिना है क्योंकि इस असर को पैदा करने के लिए इन्सान कभी ख्यालों ख्याल में ही न लाएगा। कुदरती तौर पर इसका अगर असर जाहिर हो जावे तो मुमकिन है।

क्याफा की मदद

हरत रेखा से जन्म कुंडली बनाने का ढंगः जब कोई रेखा एक बुर्ज में से दूसरे बुर्ज में चली जावे तो जिस बुर्ज से निकली थी उस तरफ के बुर्ज का घर कुंडली में वह होगा जहां जाकर वह रेखा खत्म हुई यानि अगर चन्द्र से शनिच्चर को रेखा होवे तो कुंडली में शनिच्चर को खाना नः 4 मिलेगा और चन्द्र को खाना नः 10 मिलेगा। बाकी जिस ग्रह निशान और जिस बुर्ज पर पाया जावे वह ग्रह उस नम्बर पर कुंडली में होगा यानि अगर यह निशान चौकोर शनिच्चर के बुर्ज पर हो तो मंगल खाना नः 10 में होगा वगैरा वगैरा। हाथ में अगर कोई रेखा या निशान न ही होवे तो बुर्जों की ऊंचाई निचाई से ही कुंडली मुकम्मल होगी इस तरह से बुर्जों के घर और निशान और तरकीब हमेशा के लिए मुकर्रर है जिस बुर्ज का निशान जहां कहीं पाया जावे उसी हिसाब से ग्रहों को कुंडली में भर लिया जावेगा नीचा बुर्ज और वह ग्रह जिसका निशान न मिले नीच फल और नीच राशि का होगा और अगर बुर्ज कायम हो और निशान उसका न मिले तो अपने घर का मालिक गिना जाएगा बुर्ज की मुतल्लका रेखा से शक दूर होगा हाथ पर जन्म कुंडकी के खाने (1) हर ग्रह की मुकर्ररा रेखा भी कुंडली का खाना नः हो जाती है (2) तर्जनी और मध्यमा के दरम्यान अ खाना नः 11 शनिच्चर का Head quarter शुद्ध व की जगह खाना नः 8 होता है।

Free by Astrostudents

बृहस्पत

1. किस्मत रेखा की जड़ चार शाखा खत हो सूरज के बुर्ज पर बतरफे बुध एक चक्कर हो। बृहस्पत का खास अपना निशान या दोनों हाथों को इकट्ठा गिना उंगलियों पर तादाद में सिर्फ शंख या एक चक्कर या एक सीधा खत बृहस्पत के अपने बुर्ज पर पाया जावे तो बृहस्पत का मिलेगा कुंडली का खाना = 1
2. सदफ या बृहस्पत के बुर्ज पर दो सीधी लकीरें = 2
3. सदफ, सात चक्कर या सात सीधे खत या गृहस्थ रेखा बृहस्पत के बुर्ज पर खाना नः 3
4. सदफ या चार शंख या चार खत या दो चक्कर चन्द्र पर शंख होवे सिर्फ एक चन्द्र रेखा बृहस्पत के बुर्ज पर खत्म होवे = 4
5. सदफ 5 चक्कर या 5 खत तमाम उंगलियों पर हो या सेहत रेखा नीचे जाकर किस्मत के शुरू हिस्सों में मिल जावे यानि कलाई से किस्मत रेखा निकलकर सेहत रेखा से मिल जवे = 5
6. चक्कर या किस्मत रेखा की जड़ में केतु का निशान हो या बृहस्पत से शाख खाना नः 6 हाथ के मुस्तकील में खत्म होवे = 6
7. तीन चक्कर तीन शंख या तीन सदफ, तीन खत, खत चार चक्कर, 5 शंख या शुक्र का बृहस्पत होवे यानि या तो बृहस्पत होवे औलाद रेखा शादी रेखा को काटे किस्मत रेखा की जड़ पर बुध का दायरा हो शुक्र के बुर्ज पर भाईयों की रेखा लम्बी लम्बी और टेढ़ी होवे, सर रेखा उम्र रेखा से जुदी होकर बृहस्पत के बुर्ज का रुख करे। = 7
8. दो शंख, 8 सीधे खत, गृहस्थ रेखा मानिन्द अलफ हो आठ चक्र या 11 चक्कर जब छः उंगलियों हो किस्मत रेखा सूरज रेखा से न मिले बृहस्पत का बुर्ज बिल्कुल न होवे और हाथ पर हो किस्मत रेखा या दिल रेखा तो शाखी हो किस्मत की खाली जड़ पर हो = 8
9. किस्मत रेखा सीधे डंडे की तरह शुरू होकर खड़ी होवे = 9
10. सूरज के बुर्ज पर बतरफ बुध एक सदफ हो दस चक्कर हों या उम्र रेखा चन्द्र पर खत्म हो यानि तबरी = 10
11. बृहस्पत और शनिच्चर के बुर्ज दो शाखी से मिले हो 9 चक्कर या सर की सरपुष्ट रेखा होवे = 11
12. तीन खत, 6 शंख 12 चक्कर (जब उंगलियों छ हो) किस्मत रेखा की जड़ पर राहु का निशान हो या मच्छ रेखा शुक्र के बुर्ज पर, या शुक्र व चन्द्र दोनों बुर्जों के दरम्यान मुंह ऊपर को किए हुए और दूध रेखा या उम्र रेखा उसके मुंह में हो = 12

<u>नोट</u> : उंगली की पोरियों से लिया हुआ बृहस्पत सिर्फ राशि नः का होगा बुर्ज नः का न होगा हाथ की हथेली से लिया हुआ बृहस्पत बुर्जों के खाना नः का होगा बशर्ते कि बृहस्पत के निशान चक्कर, शंख सदफ से न लिया हुआ रखे क्योंकि ऐसे निशानों से लिया हुआ बृहस्पत की राशि नः का होता है सिर्फ बृहस्पत की रेखा व बृहस्पत का खास निशान अन्दरिया से लिया बृहस्पत बुर्ज नः का होगा।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

सूरज का ग्रह

शुक्र बुध दोनों सूरज की सेहत रेखा से मिल जावे और सूरज रेखा बजाते खुद दुरुस्त हालत में बुर्ज नः 1 में पाई जावे। सूरज का सितारा सूरज के अपने बुर्ज पर बतरफा बुध हो सूरज का बुर्ज कुण्डली का खाना नः 1 है मगर सूरज खाना नः 1 में तब ही होगा जबकि सूरज पर बुध की तरफ सूरज का सितारा कायम हो वरना सूरज खाना नः 5 का होगा सूरज रेखा या सेहत रेखा खाना नः 11 के आखीर तक कुंडली का खाना नः 1

किस्मत रेखा या सूरज रेखा जब बृहस्पत का रुख करे अगर शनिच्चर के बुर्ज पर न हो = 2	2
सूरज रेखा से शाख मंगल नेक को कुंडली का खाना नः 1 सूरज के बुर्ज से शाख चन्द्र के बुर्ज को मगर मंगल बद का ताल्लुक न हो। चन्द्र और सूरज के बुर्जों के दरम्यान रेखा जो बुर्जों को मिलाती मालूम होवे मगर दरअसल मिलावे न। शराफत रेखा जब दरम्यान से ऊपर को झुकी हो सूरज रेखा दिल रेखा पर खत्म होवे।	3 4
सूरज रेखा बिल्कुल सीधी सूरज के बुर्ज पर ही हो और सूरज के अपने घर में ही मालूम होवे। और सूरज का बुर्ज कायम हो सेहत रेखा बुध से चलकर हथेली में खाना नः 11 तक खत्म होवे।	5
सूरज रेखा हाथ की बड़ी मुस्तर्ताल में खत्म होवे।	6
शुक्र के बुर्ज से शाख सूरज के बुर्ज को शुक्र का फतंग हथेली पर कायम हो खाना नः 7 में जो बुध का भी घर है बुध जुदा असर नहीं करता।	7
सूरज के बुर्ज से शाख मंगल बद को किस्मत रेखा न होवे सूरज रेखा न हो या किस्मत रेखा और सूरज रेखा दोनों बाहम न मिले।	8
किस्मत रेखा की जड़ पर चार शाखा खत्म होवे।	9
सूरज रेखा शनिच्चर के बुर्ज पर हो।	10
सूरज रेखा हथेली पर खाना नः 11 बक्त में खत्म होवे....	11
सूरज रेखा हथेली पर खाना नः 12 खर्च में खत्म होवे।	12

चन्द्र का ग्रह

चन्द्र से सूरज को रेखा।	1
मुख्यत रेखा किस्मत रेखा चन्द्र से शुरू हो कर बृहस्पत पर खत्म होवे।	2
मंगल नेक से शाख चन्द्र को हो या चन्द्र रेखा मंगल नेक के बुर्ज पर खत्म होवे।	3
धन रेखा जब चन्द्र से शुरू हो या सर रेखा के नीचे △	4
दिल रेखा सूरज के बुर्ज की जड़ तक ही खत्म होवे चन्द्र के बुर्ज से शाख सेहत रेखा में जा मिले।	5
चन्द्र रेखा जब सर रेखा के अबूर (पार) करके हाथ की बड़ी मुस्तर्ताल (आयत) में खत्म होवे।	6
दिल रेखा जब कनिष्ठका की जड़ या बुध के बुर्ज पर ही खत्म हो जावे। चन्द्र रेखा सर रेखा से मिलकर खत्म हो जावे तो उम्र खत्म मालूम होगी ऐसी हालत में फकीरी रेखा नशा बाजी की रेखा शराफत रेखा सर और दिल रेखा मिल जावे सेहत रेखा दिल रेखा को काटे।	7
सर रेखा के ऊपर △ हो मंगल बद से चन्द्र की रेखा पतली रेखा या किस्मत रेखा चन्द्र के बुर्ज पर सी बनावे उम्र रेखा या किस्मत रेखा दो शाखी हो जावे कलाई की तरफ खाना नः 9 के करीब बाहम मिलकर।	8

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

किस्मत रेखा चन्द्र के बुर्ज से कलाई पर शुरू हो।

दिल रेखा मध्यमा की जड़ शनिच्चर के बुर्ज तक हो उम्र रेखा दिल रेखा से मिल जावे सर उम्र और दिल रेखा दोनों मिल जावे। 9

चन्द्र या दिल रेखा बृहस्पत को जा निकले मगर बृहस्पत तक न हो या हथेली पर खाना नः 11 वक्त में ही खत्म हो जावे। 10

चन्द्र रेखा हथेली पर खाना नः 12 खर्च में खत्म हो जावे। 11

12

शुक्र का ग्रह

शुक्र के बुर्ज पर अंगूठे की जड़ में सूरज का सितारा हो शुक्र से शाख सूरज के बुर्ज का हो शुक्र का पतंग पूरा हो। 1

अकेली शुक्र रेखा बृहस्पत के बुर्ज पर वाका हो मुहब्बत रेखा औलाद रेखा शादी रेखा को काटे भाईयों की रेखा लम्बी-लम्बी और टेढ़ी बृहस्पत का हो। 2

ग्रहस्थ रेखा मंगल नेक से शुक्र के बुर्ज में अंगूठे की जड़ में झुक जावे, धन रेखा शुक्र के बुर्ज से शुरू होकर मंगल नेक पर खत्म होवे। 3

फकीरी रेखा नशा रेखा, शराफत रेखा सीधी लेटी हुई च. शु. को मिलावे 4

रोहत रेखा या सूरज की तरक्की रेखा सूरज से चलकर बुध पर खत्म होवे। 5

सेहत रेखा या सूरज की तरक्की रेखा जब शुक्र से चलकर अब हथेली की मुस्तील खाना नः 6 में खत्म होवे। 6

शुरू पर राहू का निशान हो।

रोहत रेखा बुध से चलकर शुक्र के बुर्ज की जड़ में खत्म होवे या शुक्र के बुर्ज पर बुध का O दायरा हो 7

शुक्र से मंगल बद को शाखा। 8

धन राशि से आकर कोई खत शादी रेखा को काट देवे। 9

शुक्र का पतंग या शुक्र रेखा शनिच्चर के बुर्ज पर मध्यमा की जड़ में वाका हो। 10

शुक्र से शाख हथेली पर खाना नः 11 वक्त के खत्म होवे 11

शुक्र से शाख हथेली के खाना नः 12 खर्च में खत्म होवे या हाथ में मच्छ रेखा हो। 12

मंगल बद का ग्रह

मंगल बद से शाख सूरज के बुर्ज को। 1

मंगल बद से शाख बृहस्पत के बुर्ज को 2

मंगल बद से शाख मंगल नेक को। 3

मंगल बद से शाख चन्द्र को। 4

मंगल बद से शाख रोहत रेखा को काटे या कलाई रेखा हथेली के अन्दर घुस जावे। 5

मंगल बद से शाख रेखा खाना नः 6 मुस्तील में हो। 6

शुक्र से शाख मंगल बद में या सर रेखा मंगल बद या सर रेखा आखिर पर दो शाखी। 7

सर रेखा के ऊपर △ होवे। 8

किस्मत रेखा की जड़ में △ हो ∠∧ होवे। 9

उम्र रेखा दो शाखी ∧< मंगल बद से शनिच्चर के बुर्ज को रेखा चले 10

मंगल बद से शाख खाना नः 11 वक्त में होवे। 11

मंगल बद से शाख खाना नः 12 खर्च में होवे। 12

क्राग रेखा मंगल बद की खुली निशानी होगी।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

बुध का ग्रह

सूरज के बुर्ज से बुध के बुर्ज को रेखा खाना नः	1
सर रेखा जब उम्र रेखा से जुड़ी होकर बृहस्पत के बुर्ज का रूख करे।	2
सर रेखा मंगल नेक में खत्म होवे।	3
दिल रेखा और सर रेखा मिल जावे सेहत रेखा दिल	4
रेखा को काटे सर रेखा झुककर चन्द्र के बुर्ज में खत्म होवे।	
सेहत या तरक्की रेखा कायम हो जरूरी नहीं कि शुक्र के बुर्ज की तक होवे सही हालत यह होगी हथेली में खाना नः 11 की जड़ तक ही हो।	5
बुध से शुक्र तक सेहत रेखा कायम हो सर की श्रेष्ठ रेखा मौजूद होवे।	6
सर रेखा की लम्बाई सेहत रेखा की हद तक होवे शादी रेखा बुध पर तदाद में दो= हो।	7
सर रेखा मंगल बद पर खत्म होवे या आखिर पर दो शाखी हो।	8
धन राशि से शाख बुध पर या किस्मत रेखा की जड़ में होवे।	9
बुध का घेरा शनिच्चर के बुर्ज पर होवे।	10
बुध से शाखा खाना नः 11 वक्त में होवे।	11
बुध से शाखा खाना नः 12 खर्च में होवे।	12

astrostudents

शनिच्चर का ग्रह

सूरज का सितारा शनिच्चर के बुर्ज पर या सूरज के बुर्ज पर बतरफ शनिच्चर हो या शनिच्चर से शाख सूरज के बुर्ज को चली जावे तो कुंडली का खाना नः	1
शनिच्चर बृहस्पत के बुर्ज से शुरू होवे।	2
शनिच्चर से शाख उम्र रेखा को काटकर मंगल नेक में ग्रहस्थ। रेखा शनिच्चर के बुर्ज पर।	3
शनिच्चर रेखा और दिल रेखा मिल जावे।	4
शनि से शंख सेहत रेखा को कटे	5
शनिच्चर से शाख मुस्तैतील में जावे	6
शानिच्चर रेखा और सर रेखा मिली होवे या शनिच्चर से शाख सर रेखा पर या शुक्र के बुर्ज में होवे।	7
मंगल बद से शाख शनिच्चर में शनिच्चर का Head Quarter खाना नः 8 होता है।	8
किस्मत रेखा की जड़ पर + त्रिशूल हो अर्ध रेखा होवे।	9
शानिच्चर के बुर्ज पर अपनी रेखा।	10
बृहस्पत शनिच्चर के बुर्जों की दरम्यानी जगह	11
मच्छ रेखा जब उम्र रेखा या अर्ध रेखा मछली के मुंह पर होवे।	12

राहू केतु

इन ग्रहों की कोई रेखा मुकर्रर नहीं सिर्फ निशान मुकर्रर है जहां निशान मिले वहीं पर कुंडली का होगा अगर निशान भी न हो तो दोनों अपने अपने घर के होंगे। यानि राहू खाना नः 12 और केतु खाना नः 6 में होगा मच्छ रेखा के वक्त केतु ऊंच घरों में यानि राहू 6, 3 केतु 1 ऊंच घर काग रेखा के वक्त यह दोनों ग्रह नीच घरों के होंगे यानि राहू 9. 12 नीच और केतु 6, 3 नीच।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

बन्द मुट्ठी व कुंडली का बाहमी ताल्लुक

बुध आकाश और बृहस्पत (हवा) को गांठ लगाकर बाँधने वाली चीज को बच्चा गिना तो बच्चे की हर गांठ से 9 ग्रहों की मिलाई हुई चमक इन्सानी किस्मत का खजाना हुई और इन सब गांठों से गांठा हुआ सामुद्रिक का इल्म सब भेदों के खोलने वाला मुकर्रर हुआ जिसमें बन्द मुट्ठी को ग्रह कुंडली माना गया तो यह कुंडली तमाम ग्रहों के अपने अपने ऊंच होने के घरों की बुनियाद पर रखी गई है बंद मुट्ठी का अन्दर या बच्चा का साथ लाया हुआ अपनी किस्मत का खजाना (तमामदी नर ग्रह) जवानी हाल देखने के लिए खाना नः 1, 7, 4, 10 होंगे खुद अपना बचपन और जन्म से पहले बालदैन की हालत 9, 11. 12 होंगे। औलाद के जन्म दिन से अपना बुढ़ापा मरने पर उसके बाकी रहे हुओं का हाल खाना नः 2, 3, 5, 6 होंगे। मौत बीमारी गन्दा जमाना खाना नः 8 मार्ग स्थान होगा जो आगे की बजाए पीछे को देखने वाला मौत निशानी का फन्दा

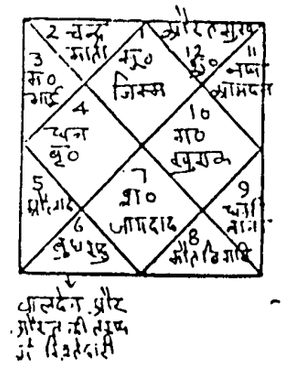

(अ) 10% फीसदी दृष्टि के खाने 1, 7, 4, 10 होंगे। साथ लाए हुए भरे खजाने।
(ब) 50% दृष्टि के खाने 3, 11, 5, 9 दूसरों की मदद से पैदा करदा हालत
(स) 25% दृष्टि के खाने 2, 12 रिश्तेदारों से ली हुई चीजें

ग्रह कुंडली की मकान के हिसाब से दुरुस्ती का जांच

कुंडली के खाना नः 1 से चलकर अगर नौवें को जाएं या मकान से बाहर को निकलें तो जिस तरफ दायां हाथ होगा उस तरफ मकान के तमाम ग्रह जो खाना नः 1 से 8 तक हो अपना सबूत देंगे इसी तरह अगर 12 नः खाने से अपने आपको खाना नः 9 की तरफ आते हुए गिने या मकान में बारह से आकर दाखिल होने लगे। तो खाना नः 12 से 12, 11, 10 के घरों के ग्रह दाई तरफ मकान के सबूत देंगे।

Free by AstroStudents

मकान से टेवे की दुरुस्ती

लाल किताब के मुताबिक जब खाना नः 1 लगन को होकर कुंडली तैयार हो जावे तो मकान कुंडली में तमाम ग्रहों को नकल कर लेवे अब मकान कुंडली में तमाम दिशायें उतर दक्षिण पूर्व पश्चिम आदि निश्चित है मान लिया जन्म कुंडली के सूरज कुंडली के बीच में लिखा जाएगा जिसकी दुरुस्ती के लिए उसके जद्दी मकान के मरकज में खुला सहन या सूरज की रोशनी पड़ती होगी जन्म कुंडली में शुक्र नः 5 का हो तो मकान कुंडली में शुक्र पूर्व की दीवार की होगी जो कच्ची मिट्टी की होगी या गाय ताल्लुक पूर्वी दीवार के साथ होगा वगैरा-वगैरा सब ग्रहों की चीजें होंगी बचाव सिर्फ यह है कि टेवे में मन्दे ग्रह की चीज मकान में उस खाना नः (मकान कुंडली के अनुसार कायम न होने देवें। जिसमें कि वो जन्म कुंडली में है।

एक बाप के कई बेटे मगर सबका जद्दी मकान एक ही हो तो जरूरी नहीं कि हर एक लड़के के टेवे से उनकी मकान कुंडली मिलती हो।

चित्र

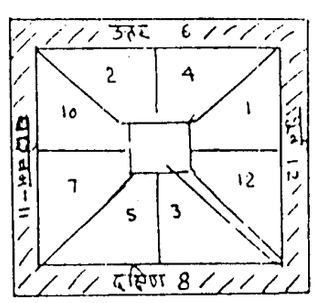

मकान की हालत मालूम होने से टेवा बनाने का ढंग

पहले अपने मकान कुंडली की शक्ल बन लेवे अब देखें कि इस घर में कहां कहां ग्रह बैठे है।

बृहस्पतः हवाई रास्ते दरवाजे या सामान बृहस्पत सूरज रोशनी धूप, राज हकूमत, राज दरबार से मुतल्लका सामान — या चीजें।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

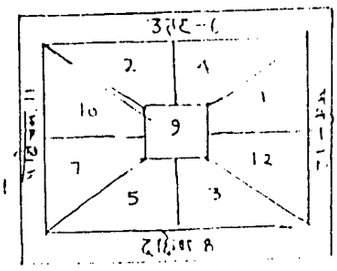

चन्द्रः चन्द्र की चीजे जानदार या बेजान।
शुक्रः कच्ची दीवार गाय या दीगर शुक्र की चीजें।
मंगलः मंगल का सामान या जानदार चीजें।
बुधः बुध की जानदार या बेजान चीजें
शनिच्चरः लड़कियों की जगह वरना सामान शनिच्चर जिस जगह हो ख्याह जानदार ख्याह बेजान।
राहुः मकान की नाली गंदा पानी गर्की अगर वह न हो तो धुएं की जगह।
केतुः रोशनदान अगर ज्यादा तरफ हो तो रोशन दान सबसे कम तादाद में जिस कमरा में हों। उस जगह केतु होगा।

अगर जानदार और बेजान चीजों दोनों ही हावें तो जानदार चीजों की जगह को बुनियाद रखें जिस ग्रह की कोई चीज न हो वह ग्रह अपने पक्के घर का होगा। ऊपर के ढंग पर जब मकान कुंडली बन जावे तो आम कुंडली में नकल कर लें ।

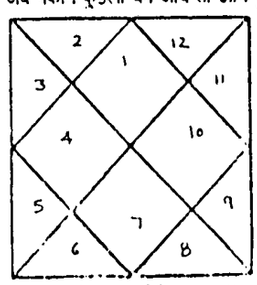

कुंडली मुश्तरका खानदान सूरज जहा कि खुद टेवे वाले की अपनी कुंडली में हो

मुश्तरका असर सात पुश्त तक होगा और तीन ऊपर तीन नीचे दरम्यान में सूरज खुद टेवे वाला	बृहस्पतः बाबा चन्द्रः माता शुक्रः स्त्री मंगलः बड़ा भाई बुधः बहिन	शनिच्चरः हम उम्र मगर रिश्ता में फर्क राहुः ससुराल केतुः औलाद लड़का	जहां कि बाबे की कुंडली में बृहस्पत लिखा हो उसी घर में टेवे वाले की कुंडली में बृहस्पत लिखे इसी तरह से सब रिश्तेदार के मुतल्लका ग्रह टेवे वाले के अपने ही टेवे के बदस्तूर लेवें।

कुंडली की जांच

एक शख्स ने फरमाया कि तीन भादों सम्वत् 1968 मुताबिक 18 अगस्त 1911 को शायद सूरज निकलने से पहले 3 या 5 बजे के दरम्यान और शायद सूरज छुपने के बाद तीन या पांच घंटे गुजरे हुए अरसा के अन्दर-2 मेरा जन्म हुआ या माता पिता गुजर गये हैं और आज 39 साला उम्र गुजर रही है कोई फक्की शहादत मौजूद नहीं। सिर्फ हाथ का खाका दे सकता हूं या अपने जद्दी घर घाट का हाल जानता हूं कभी-कभी अपनी माता से सिर्फ इतना सुना करता था कि मेरा जन्म श्री कृष्ण महाराज के जन्म वक्त से मिलता जुलता है।

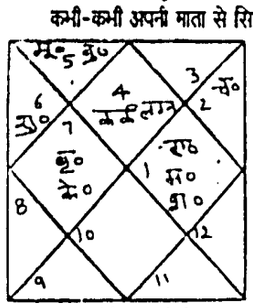

गुरुह के तीन और 6 बजे के बीच (कर्क लग्न) 19.5 तक 1-3

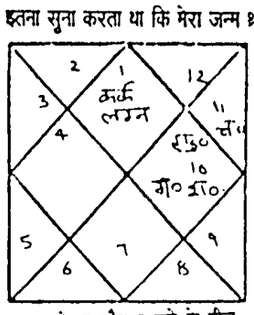

गुरुह के न और 5 बजे के बीच (कर्क लग्न) 19.5 से 1.3 पढ़ने के लिए और फलादेश देखने के लिए।

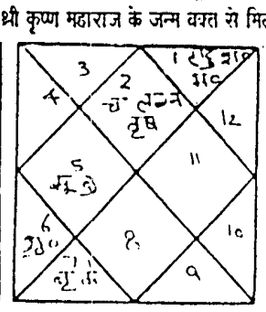

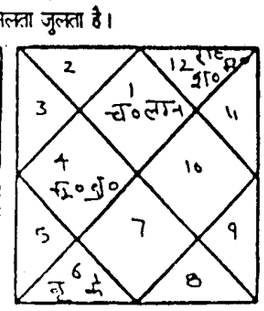

रात के 11½ से 3 घंटे रात बजे के बाद बारह बजे और 5 घंटे गुजरने पर बारह बजे या 12.10 की दरम्यान वृष लग्न = 18 अगस्त को सूर्योदय 6 और 7-12 बजे।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

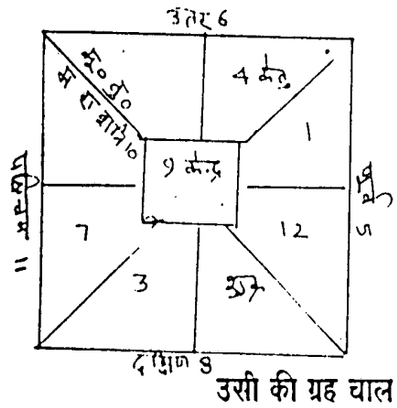

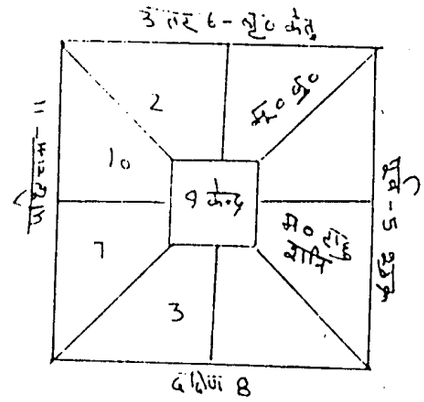

उसी की ग्रह चाल

वर्तमान ज्योतिष के अनुसार बनी हुई जन्म कुंडललियों में रखे हुए अंक मिटा दिये गये और फिर लगन के घर को दीवारा अंक नः 1 देकर कुंडलियों में क्रम पूर्वक 1, 2, 3 और आखरी नः 12 लिखे गये। तो यह नई जन्म कुंडलियां फलादेश देखने के योग्य हो गई। मकान कुंडलियों में सब ग्रहों को हूबहू उसी अंक नम्बर पर नकल किया गया। जो बदल कर लिखे जाने के बाद की जन्म कुंडलियों में मुकर्रर हुए। मकान में सिम्मत (दिशा) पहले ही मुकर्रर है हर एक ग्रह की सम्बन्धित वस्तुएं कारोबार या सम्बन्धी मुतल्लका हर ग्रह की मुकर्रर है इसलिए ऊपर की कुंडलियों के मुताबिक ग्रह चाल नीचे लिखी हुई होगी।

नाम ग्रह	सुबह तीन से 5 बजे वाली कुंडली के मुताबिक		रात को 11.30 बजे वाली कुंडली के मुताबिक	
	किस घर में	मकान के किस तरफ	किस घर में	मकान के किस तरफ
सूरज बुध	2	उत्तर पश्चिम में	4	उत्तर पूर्व में
शुक्र	3	दक्षिण में	5	पूर्वी दीवार में
बृहस्पत	4	उत्तर पूर्व में	6	उत्तरी दीवार में
मंगल राहू		पश्चिम	12	दक्षिण पूर्व में
शनिच्चर	10	(मकान का अन्दर)	1	पूर्व (मकान का अन्दर)
चन्द्र	11	पश्चिम की दीवार		

Free by ASTROstudents

ग्रह स्पष्टी (ग्रहों की दुरुस्ती)

ग्रह चाल के मुताबिक क्या होना चाहिए	मगर दर असल ठीक ठीक क्या है
सूरज बुध नः 2 खुद कमाई (नौकरी या वजीफा वगैरा) 25 साला उम्र से शुरू हुई।	वजीफा अगस्त 1935 में मिला था और तारीख शायद 17-18 अगस्त थी शायद 20-22 अगस्त बहरहाल 18 अगस्त जन्म दिन के लगभग थी।
सूरज बुध नः 4 खुद कमाई 24 साल उम्र से शुरू हुई।	
बुध अकेला नः 2 पिता की उम्र 16 से 21 तक शक्की।	पिता 10 साला उम्र में और माता 20 साला उम्र में
बुध अकेला नः 4 माता की उम्र 16 से 21 तक शक्की।	
शुक्र नः 3 मकान कच्चा होगा दक्षिण की तरफ का हिस्सा।	मकान सारे का सारा कच्चा था

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

शुक्र नः 5 मकान कच्चा होगा पूर्व की तरफ का हिस्सा।

बृहस्पत केतु नः 4 धर्म स्थान उतर पूर्व में होगा।

बृहस्पत केतु नः 6 धर्मस्थान उतर में केतु अकेला नः 4 औलाद 29 साला उम्र में कायम

केतु अकेला नः 6 औलाद के दिन ही बहन के घर भी औलाद

उतर और उतर पूर्व के दरम्यान धर्ममन्दिर पिता जब तक था शहाना ठाठ था। औलाद 29 वें साल कायम हुई लड़की पैदा हुई मगर लड़का नहीं और उसी वक्त के लगभग बहन के यहां भी औलाद हुई।

मंगल शनि राहू नः 10 बड़ा भाई चचा ससुर तीनों ही गर्वनमैंट के घर के ताल्लुकदार मानिन्द राजा राय साहब राय बहादुर होवे।

दो सरकार के घर में राय साहब रायबहादुर और तीसरा भारी सरकारी ठेकेदार था खुद मय भाई बाल-बच्चे की बरकत का मालिक मगर ससुर और चचा दोनों लावल्द।

चन्द्र नः 11 औलाद माता के मरने के बाद कायम होगी और माता शादी से पहले चल बसेगी स्त्री के भाई नीच जरूर होंगे।

शादी ही माता के मरने के बाद हुई ससुराल लावल्द औरत का कोई भाई नहीं।

चन्द्र नः 1 मकान के पूर्व में कुआं हो नः 2 खाली जो खुश्क होगा मंगल शनि राहू नः 10 अगर शराब का आदी हो तो 34 साला उम्र में युद्ध भूमि में मुर्दों के बीच मुर्दा जैसा या बिजली सांप का वाका भी हो सकता है

कभी कभी मामूली शराब बतौर जाम का शुगल के तौर पर 34 साल उम्र में मैदान जंग में सात गोलियों से जख्मी होकर मुर्दों की लाशों में से उठाकर लाया गया अंगूठा बनावटी (शुक्र) बाजू (मंगल) दोनों ही कट गए मगर कटे अंगूठे और कटे बाजू का हाथ पूरा काम करता है।

बृहस्पत केतु नः 9 घर में पूजा स्थान जान बख्शवा गया लड़का मौजूद न था स्त्री (चलन उतम) मदद देगी।

दरअसल घर में एक खास जगह पूजा स्थान (दिया जलाने की जगह पूजा की) मुकर्रर थी जो हमेशा पूरी अदा से मानी गई अपनी औरत के बगैर दूसरी औरत से कोई ताल्लुक नहीं।

34 उम्र वर्षफल के अनुसार वर्ष लगन

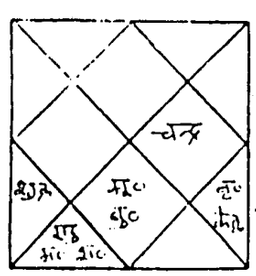

कर्क लग्न वाला टेढ़ा दुरुस्त माना गया हाथ पर बृहस्पत की रेखा खाना नः 4 में है बाकी सब बातें दोनों तरफ ही मिलती जुलती एक जैसी शक्की हालत बता रही है

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

पारमार्थ नं० - 13

वर्षफल :

किस्मत का हाल साल वार देखने के लिए यह आवश्यक भाग है। जब जन्म वक्त दिन माह पक्की उम्र गुजरी हुई मालूम न हो तो सामुद्रिक में घटनाओं की नींव पर बनाया हुआ वर्षफल अधिक संतोष प्रद होगा। घटनाओं से अभिप्राय प्रसन्नता व गमी के। पक्की घटनाओं से होती है मसलन शादी का महीना दिन और साल किसी हकीकी खून के ताल्लुकदार की पैदायश या मौत नर ग्राहों स्त्री ग्रहों या मुखन्नस ग्रहों के मुतल्लका असर में से किसी चीज की पक्की घटना जन्म दिन तारीख पैदाइश नहीं इतवार सोमवार वगैरा इन्सान किस ग्रह का है वाला ग्रह या इसका जद्दी या खुद साख्ता मकान किस ग्रह का है। वाला ग्रह जन्म कुंडली में लगन के खाना का घर और अगर लगन का खाना खाली हो तो जन्म राशि के घर का मालिक ग्रह। गर्जे कि जो भी सही सही और दुरुस्त व पक्का वाका मिल सके ले लेवे। फर्जन किसी शख्स की शादी का पक्का वाका मिल गया है पहली शादी का (अगर कई दफा शादी हो तो पहली शादी का दिन ही गिनने के काबिल होगा) जो इसकी 17 साला उम्र में हुई। यानी 17 साला उम्र से शुक्र शुरु हो गया अगर शादी का साल महीना दिन मालूम न हो और पहली शादी की औरत के गुजर जाने या शुक्र के खत्म होने का साल होगा : हर एक ग्रह की दी हुई आम मियाद में शुक्र का अरसा तीन साल दिया है 17 साला उम्र में शादी हुई तो उसका शुक्र का ग्रह 17 साल से शुरु हो गया मानकर तीन साल उन्नीस साल उम्र के आखीर तक रहा अगर 17 साला उम्र में औरत मर गई तो सतरवें साल या औरत के मरने के दिन शुक्र खत्म हुआ। या औरत की मौत के दिन से तीन साल पहले चलकर करने के दिल तक शुक्र का दौरा था। वर्षफल सुनाने के लिए ग्रहों का दौरा तरतीब वार दिया है शनि सब से पहले बृहस्पति के बाद सूरज के बाद चन्द्र वगैरा आखीर नौवा केतु का नम्बर है। ग्रहों की मियाद के सालों में तादाद और तरतीब भी दर्ज है। सारे ही ग्रहों की कुल मियाद का योग 35 साला उम्र का एक चक्कर होगा। मसलन किसी शख्स का शुक्र शुरु हुआ 17 साला उम्र में तो वर्ष होगा।

Free by Astrostudents

6 साल बृहस्पति था	2 साल सूरज या	एक साल	तीन साल चन्द्र या शुक्र होगा	छ साल मंगल होगा	2 साल बुध होगा	6 साल शनिच्चर होगा	6 साल राहु होगा	3 साल केतु होगा
8 से 13	14 से 15	16	17-19	20-25	26-27	28 से 33	1 से 4	5 से 7
43 - 48	49 से 50	51	52 से 54	55 से 60	61 से 62	63 से 68	34 से 39	40 से 42
78 से 83	84 से 85	86	87 से 89	90-95	96 से 97	98 से 103	69 से 74	75 से 77
113 - 118	119 - 120	जितने साल तक उम्र चलती या हो जाने वाली होवे लिख देवे :					104-109	110 से 112

जो अंक शामिल गिनकर हर ग्रह की मियाद होगी।

पहचान कि वर्षफल दुरुस्त है या गल्त उम्र के शुरु होने का पहला साल या अंक नः 1 जिस खाना में हो वहां देखे कि पेशानी पर कौन सा ग्रह का नाम लिखा है उस हालत में अंक नः 1 के खाना वाला ग्रह इस कुंडली के खाना नः 9 या खाना नः 1 में होगया या उस शख्स की जद्दी मकान अंक नः 1 के खाना के ग्रहों से मिलता या वो शख्स खुद इस ग्रह का होगा जन्म दिन का ग्रह (इतवार के लिए सूरज सोमवार के लिए चन्द्र वगैरा) भी अंक नः 1 के ग्रह का हो सकता है इस जांच के लिए मंगल और शनिच्चर या सूरज और बुध या सूरज और चन्द्र एक ही गिने जाएंगे। वरना दूसरा वर्षफल इस्तेमाल करें अगर ऊपर जिक्र कर दो बातों से कोई भी दुरुस्त मालूम होवे या अंक नः 1 से न मिले तो कोई और वाका लेकर वर्षफल बनावे।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

तमाम उम्र पर असर (आम वर्षफल)

किस से किस वर्ष तक	असर ग्रह	किस से किस वर्ष तक	असर ग्रह	किस से किस वर्ष तक	असर ग्रह
1-6	शनिच्चर	51- 56	बृहस्पत	92-93	सूरज
7-12	राहू	57-58	सूरज	94	चन्द्र
13-15	केतु	59	चन्द्र	95-97	शुक्र
16-21	बृहस्पत	60-62	शुक्र	98-103	मंगल
22-23	सूरज	63-68	मंगल	104-105	बुध
24	चन्द्र	69-70	बुध	106-111	शनिच्चर
25-27	शुक्र	71-76	शनिच्चर	112-117	राहू
28-33	मंगल	77-82	राहू	118-120	केतु
34-35	बुध	83-85	केतु		
36-41	शनिच्चर	86-91	बृहस्पत		
42-47	राहू				
50	केतु				

Free by Astrostudents

12 साल तक बच्चे की किस्मत का कोई ऐतबार नहीं 70 साल के बाद मर्द की अपनी किस्मत या कोई ऐतबार नहीं बच्चों की किस्मत होगी तो खुद सतर या बहतर होगा या 35 साल में तमाम ग्रह चलकर चक्करी पूर करते है हर एक ग्रह के असर के साल वगैरा सिर्फ उस शख्स की उम्र के लिहाज से दिए है जो शख्स कि लाल किताब में हर ग्रह की ऐन मुकर्रर मियाद के अन्दर अन्दर पैदा हुआ होवे दिया हुआ नक्शा दिखलाता है कि इल्म सामुद्रिक के हिसाब से हो उम्र हर ग्रह की मुकर्रर है वह हर ग्रह की कब जाहिर होगी हर एक आम दुनियावी इन्सान पर हर ग्रह का दौरा इस इल्म के साल से और होगा।

हर ग्रह के आम साधारण असर का वक्त

हर ग्रह की मुतल्लका जानदार चीजों पर उस का आम साधारण असर का वक्त देखने के लिए देखे वाले की उम्र के साल को उस अंक नः पर विभक्त करें जिस खाना में कि वो ग्रह जन्म कुंडली में बैठा हो बाकी बचने वाले अंक के खाना नः में ग्रह मुतल्लका उस उम्र के साल में अपना असर करेगा खाना नः 1 में बैठे हुए ग्रह की हालत में उम्र के अंक को 12 पर खाना नः 2 के लिए 11 और खाना नः 3 की हालत में 10 पर तकसीम करें बाकी सब घरों के ग्रह अपने अपने खाना नः में बैठे हुए अंकों पर विभक्त करें सिफर बाकी बचने या बाकी बचे हुए अंक वाला घर खाली होने की हालत में ग्रह मुतल्लका जन्म कुंडली वाले खाने में ही असर कर रहा गिना जाएगा।

मिसाल

(अ) किसी शख्स की उम्र का 25 वां साल जारी है और चन्द्र जन्म कुंडली में खाना नः 3 में बैठा है 25 के अंक को उपर विभक्त किया तो बाकी बचा। यानि इस देखे का चन्द्र का जो नः 3 का जन्म कुंडली में था उम्र के 25 वे साल वही असर दे रहा होगा जो फलादेश के अनुसार चन्द्र खाना नः 1 में दिया है

इसी तरह सभी ग्रह का हाल होगा।

(ब) हर काम के लिए जन्म कुंडली के खास-खास खाने मुकर्रर है या कुंडली 12 ही खानों का जिन जिन चीजों कया कामों से ताल्लुक वह हमेशा के लिए मुकर्रर है (देखो फरका घर नः 1 से 12)

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

अब अगर औलाद का हाल 25वें साल देखना है तो देखे कि औलाद के लिए कौन सा घर मुकर्रर है वह है खाना नः 5 अगर जन्म कुंडली के खाना नः 5 खाली हो तो औलाद के लिए केतु के ग्रह की हालत जो भी वर्षफल के अनुसार हो लेंगे। इस लिए 25 के अंक को 5 पर विभक्त किया तो बाकी बचा सिफर तो औलाद का वही हाल लेंगे जो जन्म कुंडली के मुताबिक खाना नः 5 का होवे। अगर 26 वें साल देखना पड़े तो औलाद के मुतल्लका खाना नः 5 से 26 को तकसीम किया तो बाकी बचा बचा एक यानि 26 वे साल औलाद का वैसा ही हाल होगा जैसा कि इस जन्म कुंडली के मुताबिक खाना नः 1 का है अगर खाना नः 1 खाली हो तो वो हाल लेंगे जो खाना नः 5 का है।

2. कुंडली के 12 खानों में बैठे हुए ग्रहों की बाहमी दृष्टि (नजर) का दर्जा मुकर्रर है (देखो ग्रह दृष्टि) उनकी बाहमी दोस्ती दुश्मनी और मियादें भी मुकर्रर है इसलिए जब कभी दो या दो से ज्यादा ग्रहों का अगर उनकी दृष्टि या बाहम मुश्तरका होने की वजह से मिल मिलाकर इकट्ठा हो रहा हो तो उनके असर का वक्त और तासीर में अच्छी या बुरी हालत के दर्जा का फर्क जरूर हो जाया करता है।

3. खाना नः 1 वैशाख नः 2 को जेठ और नः 3 को आषाढ़ वगैरा वगैरा इसी तरह ही 12 खानों को 12 महीनों में बांटा गया है इस तरह जन्म कुंडली के जिन जिन घरों में कोई भी ग्रह बैठा हो जब कभी भी इन घरों में कोई भी ग्रह वर्षफल के अनुसार आएगा वो अपना असर उस खाना नः के लिए मुकर्रर किए हुए महीने में जाहिर करेगा। मसलन जन्म कुंडली के खाना 2 में कोई ग्रह बैठा है जिस के ये मायने हुए कि खाना नः 2 का असर जेठ में होगा अब वर्षफल के मुताबिक किसी भी साल तो वहां (खाना नः 2 में बुध आ गया तो पिता के लिए गैर मुवाफिक है) (देखो फलादेश बुध खाना नः 2) ऐसी ग्रह चाल के वक्त पिता पर हर वक्त मन्दगी न होगी। मगर जेठ के महीने में पिता बृहस्पत की अंशिया या रिश्तेदार मुतल्लका बृहस्पत पर मन्दी हवा के झोंके जरूर साथ होंगे।

(ब) जन्म कुंडली के मुताबिक जो घर खाली होंगे उन घरों में वर्षफल के मुताबिक जो ग्रह आएंगे वो (आए हुए ग्रह) अपना मुकर्ररा फल इस महीने नः में देंगे। जिस नम्बर में कि सूरज वर्षफल के मुताबिक बैठा हो मसलन नः 4 जन्म कुंडली में खाली हो और वर्षफल के अनुसार मंगल नः 4 में आ जावे और उस साल के वर्षफल के अनुसार सूरज लगन से खाना नः 8 में हो तो मंगल नः का दिया हुआ फल जन्म दिन से आठवें महीने में जाहिर होगा।

4. वर्ष (उम्र के साल) का शुरू का आर्थार देसी महीनों की तारीख के हिसाब से लेंगे। क्योंकि जन्म कुंडली और वर्षफल में सूरज की तबदीली 1 वैशाख से मानी गई है और 1 वैशाख अंग्रेजी तारीखों के हिसाब से कई दफा 11 अप्रैल या 12 अप्रैल या 13 अप्रैल का भी हो जाता है। बाज इलाकों में देसी महीने की पहली तारीख भी न तो अंग्रेजी तारीखों के ढंग पर हमेशा एक ही दिन आती है और न ही विक्रमी सम्वत् के महीनों से मिलती है इसलिए पक्का अगूल यह है कि सूरज की बुनियाद पर इल्म ज्योतिष चलता है और सूरज की तबदीली 1 वैशाख से खाना नः 1 या मेष राशि में गई है इसी वजह से बाकी सब महीनों की भी तबदीली हो सकती है।

1 नः में बैठे हुए ग्रह के लिए उनके साल को 12 पर विभक्त करेंगे।

2 नः में बैठे हुए ग्रह के लिए उनके साल को 11 पर विभक्त करेंगे।

3. नः में बैठे हुए ग्रह के लिए उम्र के साल को 10 पर विभक्त करेंगे।

हर एक ग्रह (सिर्फ अकेला अकेला ही) इसी तरह ही

घुमाया जा सकता है यानि जितने नः के खाने में

कोई ग्रह जन्म कुंडली में बैठा हुआ होवे। देखें कि जिस साल का हाल देखना है वह उम्र का कौन सा साल है उस उम्र के साल के अंक को उस नम्बर पर तकसीम करें जिस में कि वह ग्रह बैठा है (जन्म कुंडली में) बाकी जो अंक बचे उस खाना नः में उस साल (जितने साल की उम्र का हाल देखा जा रहा है) वह ग्रह असर करता और बोल रहा होगा

सिफर बाकी बचने की हालत में उसी घर (जन्म कुंडली में जिस अंक पर है) असर दे रहा होगा मसलन किसी जन्म कुंडली में सूरज है खाना नः 11 में और उम्र का 52 वां साल जारी है इस 52 के अंक को 11 पर तकसीम किया तो बाकी बचे 8 अब 52 साला उम्र में सूरज खाना नः 8 में गिना जायेगा। जब बाकी उम्र बदस्तूर जैसे कि वह जन्म कुंडली में हो रखकर सूरज की मुतल्लका चीजों का असर देखा जाएगा। इसी तरह हर एक ग्रह का हाल साल वार देखते जाएंगे। ख्याल रहे जिस ग्रह के मुतल्लका चीजों का हाल देखना है सिर्फ उसी ग्रह को घुमाएंगे बाकी सब ग्रह बदस्तूर जन्मकुंडली के खानों के होंगे इसी अगूल पर तमाम ग्रहों को अकेला अकेला घर के घुमा कर जो कुंडली बनाएंगे वो उस साल की औसत हालात जवाब देगी।

2. जन्मकुंडली जो ख्याह इल्म ज्योतिष के मुताबिक बनाकर और लगन को खाना नः 1 देकर बाकी खाने पूरे किए हो या इल्म सामुद्रिक से बनाई गई हो मुकम्मल करने के बाद आगे दी हुई गुत्थी के मुताबिक अमल दरामद (प्रयोग करें)

सालाना हालत के लिए दिया हुआ वर्षफल में :
महावारी हालात के लिए सूरज को चला दें
रोजना के हालात के लिए मंगल को चला दें
घन्टों के हालात के लिए बृहस्पत को चला दें
मिन्टों के हालात के लिए शनिच्चर को चला दें
सैकिण्डों के हालात के लिए बुध को चला दें

डिग्री के हालात के लिए चन्द्र को चला दें
हफ्तों के हालात के लिए शुक्र को चला दें
रातों के हालात के लिए राहू को चला दें
दिनों के हालात के लिए केतु को चला दें
यानि कुंडली को घुमा दें।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

वर्षफल का असली असर उसी महीने में होगा जिस खाना नः में कि उस साल सूरज बैठा होवे राजदरबार में खराबियां वगैरा उस साल के (जन्म दिन से) सातवें महीने पैदा होगी मगर बाकी सब महीनों में सूरज असर मन्दा नहीं गिन सकते। इसी तरह ही बाकी सब कुंडलियां (सालना महावारी रोजना वगैरा) में असर होगा।

एक साल के अन्दर के हालात के लिए ऊपर के हिसाब से लिए हुए वर्षफल की कुंडली के जिस खाना में सूरज बैठा होवे उस खाना को उस के महीने का अंक देकर तमाम कुंडली मुकम्मल कर लें।

महीना शुरू जन्म वक्त से लेंगे। मसलन 31 को पैदाइश हो तो दूसरे महीने की 30 तक पूरा महीना होगा। सूरज की तब्दीली चूंकि या कम वैशाख से शुरू होती है इसलिए जन्म दिन दरअसल देसी महीनों के हिसाब से ही दुरस्त किया जाएगा। अंग्रेजी तारीख के हिसाब से सूरज के असर में फर्क हो सकता है।

3 कुंडली के बारह याने दरअसल विक्रमी की साल जो तकरीबन 13 अप्रैल वैशाख से शुरू होगा कि बारह महीने ही है या यूं कहो कि बारह खानों का असर हर महीने निम्न होगा।

खाना नः	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
असर का महीना	वैशाख	जेठ	आषाढ़	सावन	भादों	असोज	कार्तिक	मग्घर	पोह	माघ	फागुन	चैत
तकरीबन 10	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च
से 12 तक	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल

एक साला उम्र के बच्चे के लिए भी यही असूल होगा मसलन जन्म कुंडली (लग्न से हरगिज)
जन्म वक्त 10-5-98 मंगलवार 5.43
बजे शाम 11.5. 41 शाम 5.43
बजे के बाद 44 वां साल जारी लग्न
से हर ग्रह(सालना कुंडली)

जन्म कुण्डली

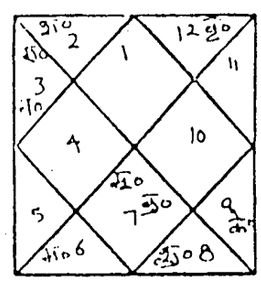

प्रथम भाग
वर्षफल की रूचि के अनुसार वर्ष फल बदला गया। 44 वां साल

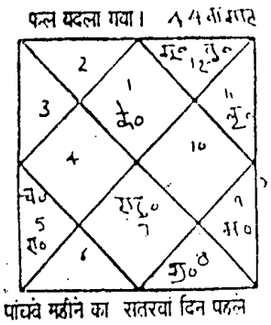

पांचवे महीने का सतरवां दिन पहले दिन से 12 वें दिन तक 1 से 12 महावारी कुंडली में जिस जगह मंगल बैठा है इस घर को एक से गिनकर 17 वे नः यानि नः दिया गया मंगल को

दिन कुंडली

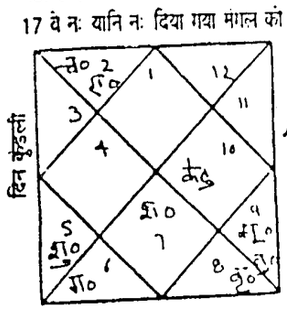

द्वितीय भाग
11..9.41 शाम 5.43 बजे के बाद पांचवा महीना शुरू सूरज बैठा होने वाले घर को खाना नः 5 दिया गया
वर्षफल की कुंडली
महावारी कुंडली

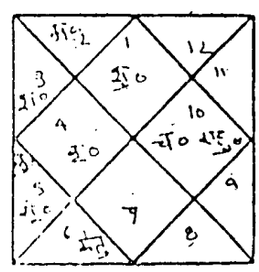

पांचवे महीने का 23 वां घंटा रोजना कुंडली में बृहस्पत वाले घर को एक गिन कर 23 वां नः बृहस्पत को

घन्टा कुंडली

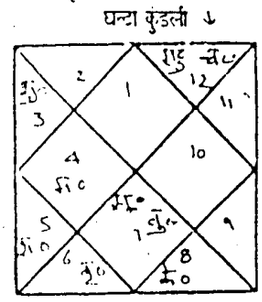

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

प्रथम भाग

घन्टों वाली कुंडली से 25 वां मिन्ट
शनिच्चर को चला गया
मिन्ट कुंडली

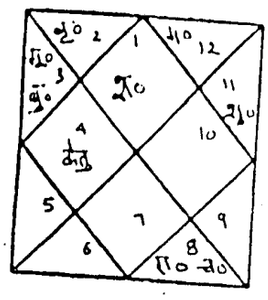

द्वितीय भाग
28 वां सैकिण्ड मिन्टों वाली कुंडली से
अब बुध को चला गया
सैकिण्ड कुंडली

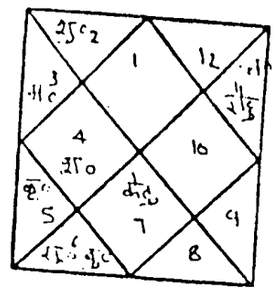

सैकिण्डों वाली कुंडली से 53 डिग्री
पर अब चन्द्र को चला गया
डिग्री कुंडली

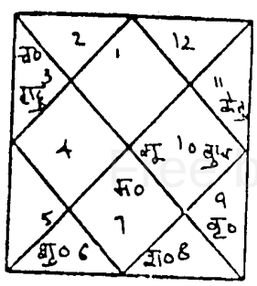

साल की कुंडली को रातों के हाल
के लिए उसे अपने खाना नः
या अपने Hoadquarter
में कर दिया।

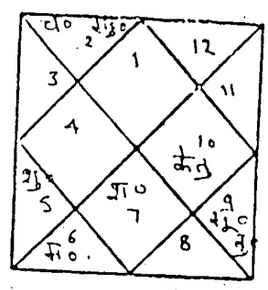

दिन कुंडली

राहु की जगह अब केतु
को खाना नः 2 में
दिनों के लिए कर दिया

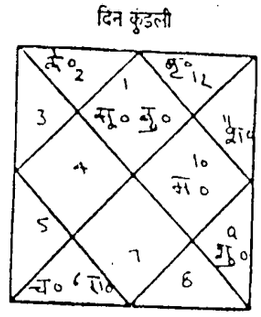

वर्षफल की सूचि की पेशानी पर जो अंक लिखे है वह जन्म कुंडली के खाना नः है और उस के नीचे वे अंक है जहां कि उस के साल में जन्म कुंडली के खाना नः का ग्रह चल घर अया हुआ होगा मसलन जन्म कुंडली के खाना नः 5 में मे मंगल है तो उस के 16 वें साल वहीं मंगल वर्षफल में खाना नः 12 में होगा वगैरा वगैरा।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

फरमान नः14
टेवे की किस्में

[1]
शत्रु बाहम घर दस में बैठे, टेवा होता ग्रह अंधा हो
सात शनि हो सूरज बाँधे, आधा अन्धा नो हराता हो
बुध छटे रवि 1, 5, 11, टेवा बालिग ग्रह होता हो
[2] खाली मुट्ठी या बुध पापी का, असर न नाबालिग देता हो [3]
11 शनि या सात गुरु का, पाप चन्द्र 10 बाँधे हो
पिछड़े जन्म का साधु होगा, धर्मी टेवा शुभ देवे जो
गुरु शुक्र हो टेवे मिलते, चलता जन्म खुद अपना हो
असर जन्म न लेंगे पिछले, साल गुजरते बारह जो

[1] बुध के साथ बृहस्पत या चन्द्र या मंगल
[2] मुट्ठी का अंदर से मुराद है कुंडली का खाना नः 1, 7, 4, 10
[3] पापी राहू केतु शनिच्चर तीनों ही के लिए एक नाम पापी होता है।

शुक्र के साथ बृहस्पत या सूरज या चन्द्र या राहू हो
शनिच्चर के साथ चन्द्र या राहू हो
शनिच्चर के साथ सूरज या चन्द्र या मंगल हो
राहू के साथ सूरज या चन्द्रमा मंगल या बृहस्पत हो
केतु के साथ सूरज या चन्द्र या मंगल हो
अन्धे ग्रहों मन्दे असर के वक्त केतु के उपाय या केतु (लड़का केतु के मुतल्लका अशिआ) के जरिये या केतु शुभग्रह सादिक के किये कार्यों के फल मुबारिक होंगे। एक ही वक्तपर दस अन्धों को बतौर खैरात खुराक तकसीम करने से नः 10 की जहर दूर होगी।
नौहराते वाले टेवे में नेक ग्रहों के मुतल्लका कारोबार रात के वक्त और गन्दे ग्रहों के मुतल्लका कारोबार दिन के वक्त करने मददगार होंगे।

बालिग टेवे का असर खुद बखुद ही होता रहता है कोई खास कोशिश की जरूरत नहीं।

गुरु शुक्र मुश्तरका टेवे वाले की हालत में 12 साला उम्र के बाद पिछले जन्मों के धक्के या धोके का कोई डर न होगा।

धनी टेवे वाले हर एक के लिए मददगार और सुख देने वाले हुआ करते हैं

नाबालिग टेवे वाले को दूसरों की मदद लेकर चलते रहना मददगार होगा। क्योंकि इन्सान का बच्चा तो नाबालिग से बालिग हो जाएगा मगर ग्रह वाली हालत का नाबालिग टेवा सारी उम्र ही नाबालिग गिना जाएगा।

टेवे मर्द का प्रबल होगा या औरत का

मर्द का टेवा औरत के टेवे को दाब लेता है मगर कई दफा बाहम बेलिहाज भी हुआ करती है। औरत जब तक शादी न हुई खुद अपने टेवे (औरत के) पर चलती रही और शादी के बाद से मर्द के टेवे का असर दोनों की किस्मत पर हावी (छाया हुआ) होता रहा। कोई ऐसा वक्त भी आ गया कि मर्द चलता बना। (मर गया, छोड़ गया, भाग गया, गुम हो गया या दो मर्दों की एक ही इकट्ठी बन बैठी वगैरा वगैरा) तो फिर वही औरत का अपना टेवा किस्मत के मैदान में बहाल होगा। इसी तरह ही जब तक बच्चा था बाल्दैनी किस्मत का असर और अपने पिछले कर्मों का फल मददगार हुआ। शादी हुई औरत का टेवा राशिफल की तरह मददगार होता रहा औरत चल बसी (मर गई, भाग गई, छोड़ गई, गुम हो गई या बेवक्त हुई वगैर वगैरा) या कोई और साथ-साथिन दूसरी शादी माशूक या वैसे ही दुनियावी तमाशबीन की रंग बिरंगियों वगैरा हुई तो किस्मत के समुद्र में कई तरह की हवाओं के झोंके आने लगे संक्षिप्त : मर्द और औरत की जोड़ी का मिलना और टूटना किस्मत के मैदान में जरूर फर्क देगा। लेकिन कई दफा बगैर टूटे हुए भी या बगैर मिले मिलाए भी किस्मत की दो रंगियां देखने में आएंगी। लेकिन निहायत ही कम तादद में और वह उस वक्त जब ऐसी जोड़ी की खुराक में शनि की चीजों की लहरें या पितृगण के समुद्र का तूफान ठाठें मार रहा होगा।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

फरमान नः 15

फलादेश (अकेले अकेले ग्रह)

देखने का ढंग

क्याफा:

1. सिर्फ एक ही ग्रह को देख कर किया हुआ फैसला कोई मुकम्मल फैसला नहीं होता। बल्कि वहम पैदा करने का सबब और धोखे में रख लेने वाला हुआ करता है।

2. तारीख पैदाइश और जन्म वक्त का लिहाज रखते हुए प्राचीन और प्रचलित ज्योतिष के मुताबिक जब जनम कुंडली बन चुके तो उसमें से तमाम अंक मिटा देवें और लगन के खाना को अंक नः 1 देकर बारह खानों में क्रमानुसार 12 अंक लिख दें। मसलन किसी की पैदाइश 15.2.93 सुबह 5.30 बजे 6 फागुन सम्वत् 1949 बुधवार हो तो उसकी जन्म कुंडली निम्नलिखित होगी।

3. अब इस जन्म कुंडली से फलादेश देखने के लिए सबके सब अंक मिटा हुए गए और लगन के अंक को (जो इलाका पंजाब में कुंडली का सबसे ऊपर का चोकोर होता है) अंक नः 1 देकर क्रमानुसार 12 अंक सब घरों के दिए मगर ग्रह सब के सब उसी तरह ही लिखे गए सिर्फ अंक नः बदला गया तो वही जन्म कुंडली निम्नलिखित होगी।

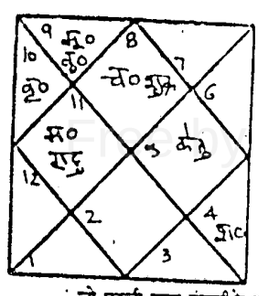

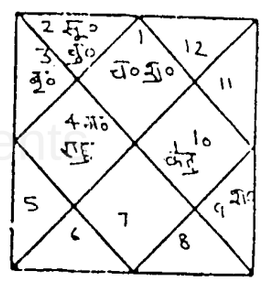

जो पहली जन्म कुंडली के लगन के खाना को 8 का अंक दिया है मगर बाद की कुंडली में उसी खाना को अंक नः 1 दिया है लगन से दूसरे घर को पहले नः 9 मिला था अब कहेंगे कि सूरज बुध उसके लगने से दूसरे घर में है इसी असूल पर फलादेश के लिए सूरज या बुध दोनों का ही नः 2 (सूरज नः 2 या बुध नः 2 या सूरज बुध नः 2) का दिया हुआ फल फलादेश देखले।

4. मुश्तरका ग्रहों की हालत

फलादेश के हिस्से में हर एक अकेले अकेले ग्रह में दिया हुआ फल मुश्तरका ग्रहों की हालत में दिए हुए फलादेश के इलावा होगा गोया पहले तो हर एक ग्रह का जुदा-जुदा दिया हुआ फलादेश देखें। फिर मुश्तरका ग्रहों का फल जरूर देख लें। क्योंकि बाज औकात जुदा जुदा तो भले ही नजर होंगे मगर इकट्ठे हो जाने पर कई दफा नतीजा उल्टा ही हो जाता है मसलन मंगल नः 8 जुदा ही और बुध नः 8 जुदा का ही फलादेश नः 8 के लिए बुरा ही होता है मगर जब दोनों इकट्ठे ही नः 8 में हो तो उत्तम होंगे इसी तरह ही शुक्र नः 9 मन्दा होता है लेकिन जब शुक्र केतु मुश्तरका नः 9 में हो तो दोनों का मुश्तरका फल निहायत उत्तम होगा।

दूसरी मिसाल

बुध नः 3 या शुक्र नः 9 अमूमन मन्दे और मंगल बद का असर दिया करते हैं लेकिन जब जन्म कुंडली में मंगल बुध मुश्तरका शुक्र से पहले घरों में हो तो बुध अपनी नाली की दृष्टि के असूल पर मंगल और शुक्र को बालम मिला देगा। जिससे टेवे वाला लाजवाब कभी न होगा। औलाद के योग ख्याह लाख मन्दे हों

इसी तरह शुक्र केतु मुश्तरका अगर खाना नः 1 में हो जावे तो मर्द नाकाबिले औलाद होगा हालांकि शुक्र नः 1 मददगार फूल और केतु नः 1 सूरज को ऊंच कर देता है बेशक सूरज टेवे में कैसा ही मन्दा बैठा हो।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

(य) किताब में ग्रहों के मुश्तरका गिरोह जो भी अगूल के तौर जायज हो सकते है दे दिए गए है। ऐसे इकट्ठे इकट्ठे दिए हुए ग्रहों के इलावा जो भी ग्रह बाकी बचे उसके लिए अलहदा-अलहदा ग्रहों में दिया हुआ फलादेश दुरस्त होगा। गर्जे कि सबसे पहले सात ग्रह मुश्तरका फिर 6 फिर पांच फिर चार फिर तीन फिर दो और आखीर पर अकेले अकेले ग्रहों के हाल में दिया हुआ फलादेश देखें। अपनी ही मर्जी की मनघड़त जोड़िया बनाकर फलादेश बना लेना नवाजिब बल्कि बाहम का बहाना होगा।

5. किताब में जगह व जगह हिदायत है कि गोश्त खाना, शराब पीना, झूठ बोलना, बददियानतीह करना बदचलन का आदी होना वगैरा वगैरा ऐसे (खास ग्रहों के टेवे वाले को परहेज चाहिए) से मुराद है कि वह प्राणी (ऐसे टेवे वाला जहां कि किसी काम की मनाही की गई है) सिर्फ उस नुकसा का आदी होगा जिस की हिदायत की गई है जब कहते है कि उसकी माता खानदान मातमी हालत में होगा तो मुराद होगी कि मामू तबाह बरबाद और उनकी नसल घटती होगी ऐसे ही जब कहे कि आपके घर में आपकी उम्र सबसे लम्बी होगी तो मुराद होगी कि उसके घर के सब जीव जन्तु मर जाएंगे और वह सब के बाद मरेगा वगैरा वगैरा। मतलब असल यह है कि किताब के लफ्जों को शन्ति से पढ़े फिर मुंह से निकाले।

फलादेश की बुनियाद का आम असूल

कुंडली के घर की माल्कीयत के हिसाब से तो कोई और ग्रह होता है और बहैसियत पक्के घर उसी खाना का मालिक कोई और ग्रह हुआ करता हैया यूं कहिए कि अगर कुंडली के हर खाना नः को एक मकान मान ले तो उसके मकान की तह जमीन में तो उस खाना नः के मालिक ग्रह (बहैसियत घर की माल्कीयत) की तासीर होगी। और उसकी इमारत पर उस ग्रह का जो उस खाना के लिए बहैसियत पक्का घर मुकर्रर है असर हो रहा होगा इस तरह पर उन दोनों ग्रहों (एक तो तह जमीन का मालिक जो घर की माल्कीयत की वजह से है और दूसरा बहैसियत पक्का घर ताल्लुकदार है) की बाहमी दोस्ती दुश्मनी उस खाना नः के फलादेश में फर्क डालती है अगर वह दोनों दोस्त हुए तो नेक असर और भी बढ़ गया अगर बाहम दुश्मन हुए तो उस खाना नः का असर दोनों की दुश्मनी की वजह से बरबाद हो गया इसके इलावा तीसरा ताल्लुकदार और भी बन जाया करता है यानि वह ग्रह जो उस खाना नः का पहले कहे हुए दो कारणों के हिसाब से कोई ताल्लुकदार नहीं मगर ग्रह वाली गर्दिश के हिसाब से वहां आ निकलता है अब वह बारह से आया हुआ ग्रह भी उन दोनों ग्रहों की बाहमी दोस्ती दुश्मनी जो उन दो की आपस में थी के इलावा खुद अपनी दोस्ती दुश्मनी जो कि उसकी (बाहर से आने वाले की) उन दो ग्रहों एक तो तह जमीन का मालिक और दूसरा मकान की इमारत का मालिक) से है कि मुताबिक फलादेश में फर्क डाल देगा। गर्जे कि हर खाना नः और ग्रह का खानाबार फलादेश देखते वक्त इसी अगूल को नजर में रखना मददगार होगा। मिसाल के तौर पर (1) खाना नः 11 में बहैसियत घर की माल्कीयत शनिच्चर का तो ताल्लुक तो है और वह बहैसियत पक्का घर बृहस्पत का गिना हुआ है अब इस खाना नः 11 में शनिच्चर और बृहस्पत के इलावा राहू आ बैठे तो असर में निम्नलिखित तबदीली होगी।

तह जमीन का मालिक शनिच्चर है और वह घर (खाना नः 11) दुनिया का आगाज। इंसान की आमदन व जाती कमाई या दुनिया में आना यानि वह वक्त जब कि आगाज (आरंभ) हुआ था सबसे पहले की जगह की या वो जगह जहां से कुल ब्रह्माण्ड और तमाम ग्रह वगैरा निकले हुए माने गए है वगैरा वगैरा जिस की इमारत पर बृहस्पत कातिज है और उसे खाना नः 11 को जमाना के गुरु बृहस्पत में धर्म अदालत के लिए ही मुकर्रर कर दिया है यूं कहो कि खाना नः 11 की जमीन शनिच्चर की होने के कारण लोहे या पत्थर या सफेद संगमरमर (जो शनिच्चर की चीजें है) की है।

उस पर जो मकान बना है वह जगमग करने वाले दमकते हुए जर्द रंग सोने से दुनियावी चीजों को खुश कर रहा है अब इस धर्म अदालत पर राहू शरीफ की तरसलुत सराज आ हुआ जो राहू का ग्रह शनिच्चर का एजेंट है और सिर्फ बदी का ताल्लुकदार है शनिच्चर अगर स्याह रंग राज मिम्नी या तो बृहस्पत जर्द रंग [illegible] भण्डारी या या पूजापाठी प्राणी धर्म देवता जमाने का गुरु था इन दोनों की राजधानी पर राहू का राज आ हुआ तो जमानत में स्याह चमकता नीले रंग हाथी की तरह मद्दा सा वजूद जमीन के अंदर भूचाल पैदा करता है नतीजा क्या हुआ राहू की मेहरबानी से शरारत पर शरारत सोने की इमारत का रंग स्याह बल्कि नीला हुआ नीचे से भूचाल आ जाने पर पता न चला ककि वह इमारत गई कहां धर्म पूजा-पाठ का निशान न रहा। और हर तरफ बद अमनी का पहरा होगा। जर्द रंग (बृहस्पत) से नीला रंग राहू मिलने पर सब्ज रंग बुध खाली खुला आकाश पर शनिच्चर की स्याह रंग जहर (जहरों का मालिक शनिच्चर है) का काला रंग चमकने लगा। किरसा कोताह बृहस्पत नष्ट हुआ आकाश में राहू का मन्दा धुआं भर गया और जमाने में हर तरफ राहू के जालिम जल्लाद की कारवाईयां जोर पर होने लगी इसलिए राहू नः 11 में लिखा हुआ है कि बृहस्पत कायम करना या जिस्म पर सोना रखना मददगार बल्कि जरूरी होगा क्योंकि राहू की मेहरबानी से बृहस्पत नष्ट हो चुका होगा। इसी ख्याल को ध्यान में रखते हुए राहू का खाना नः 11 में दिया हुआ फलादेश देखने से मालूम होगा कि ऐसा प्राणी अपनी माता के पेट में आने के क्षण से ही अपने पिता (बृहस्पत) पर सौतेली (राहू को सौतेली भी माना है) कीतरह हमला करने लग जाता है और बृहस्पत के जर्द रंग सोने को पीतल बनाकर उस पर अपना नीले रंग का जंग लगा देता है

इसी तरह राहू बृहस्पत मुश्तरका में फलादेश से जाहिर होगा कि दोनों की मिलावट से मसनुई बुध या खाली आकाश बन जाएगा बृहस्पति दोनों ही जहां का मालिक है और राहू का नीला आसमान और दूसरी दो जहानों में हस्तक्षेप करता है इसलिए यहां जिक्र हुआ है कि राजा फकीर होने भी किस्मत हो गयी होगी। यानि राजा होते हुए भी एक दिन फकीर या फकीर से बादशाह होगा ऊपर कहे हुए अगूल पर सब ही ग्रहों का फलादेश विषय समझा देगा और इस विषय का तफ्सिल हर जगह सीके मुताबिक हर ग्रह का अलग फलादेश सही सही देश से समझा देगा।

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

आयु	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1	1	9	10	3	5	2	11	7	6	12	4	8
2	4	1	12	9	3	7	5	6	2	8	10	11
3	9	4	1	2	8	3	10	5	7	11	12	6
4	3	8	4	1	10	9	6	11	5	7	2	12
5	11	3	8	4	1	5	9	2	12	6	7	10
6	5	12	3	8	4	11	2	9	1	10	6	7
7	7	6	9	5	12	4	1	10	11	2	8	3
8	2	7	6	12	9	10	3	1	8	5	11	4
9	12	2	7	6	11	1	8	4	10	3	5	9
10	10	11	2	7	6	12	4	8	3	1	9	5
11	8	5	11	10	7	6	12	3	9	4	1	2
12	6	10	5	11	2	8	7	12	4	9	3	1
13	1	5	10	8	11	6	7	2	12	3	9	4
14	4	1	3	2	5	7	8	11	6	12	10	9
15	9	4	1	6	8	5	2	7	11	10	12	3
16	3	9	4	1	12	8	6	5	2	7	11	10
17	11	3	9	4	1	10	5	6	7	8	2	12
18	5	11	6	9	4	1	12	8	10	2	3	7
19	7	10	11	3	9	4	1	12	8	5	6	2
20	2	7	5	12	3	9	10	1	4	6	8	11
21	12	2	8	5	10	3	9	4	1	11	7	6
22	10	12	2	7	6	11	3	9	5	1	4	8
23	8	6	12	10	7	2	11	3	9	4	1	5
24	6	8	7	11	2	12	4	10	3	9	5	1
25	1	6	10	3	2	8	7	4	11	5	12	9
26	4	1	3	8	6	7	2	11	12	9	5	10
27	9	4	1	5	10	11	12	7	6	8	2	3
28	3	9	4	1	11	5	6	8	7	2	10	12
29	11	3	9	4	1	6	8	2	10	12	7	5
30	5	11	8	9	4	1	3	12	2	10	6	7
31	7	5	11	12	9	4	1	10	8	6	3	2
32	2	7	5	11	3	12	10	6	4	1	9	8
33	12	2	6	10	8	3	9	1	5	7	4	1
34	10	12	2	7	5	9	11	3	1	4	8	6
35	8	10	12	6	7	2	4	5	9	3	11	1

Free by Astrostudents

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

आयु	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
36	6	8	7	2	12	10	5	9	3	11	1	4
37	1	3	10	6	9	12	7	5	11	2	4	8
38	4	1	3	8	6	5	2	7	12	10	11	9
39	9	4	1	12	8	2	10	11	6	3	5	7
40	3	9	4	1	11	8	6	12	2	5	7	10
41	11	7	9	4	1	6	8	2	10	12	3	5
42	5	11	8	9	12	1	3	4	7	6	10	2
43	7	5	11	2	3	4	1	10	8	9	12	6
44	2	10	5	3	4	9	12	8	1	7	6	11
45	12	2	6	5	10	7	9	1	3	11	8	4
46	10	12	2	7	5	3	11	6	4	8	9	1
47	8	6	12	10	7	11	4	9	5	1	2	3
48	6	8	7	11	2	10	5	3	9	4	1	12
49	1	7	10	6	12	2	8	4	11	9	3	5
50	4	1	8	3	6	12	5	11	2	7	10	9
51	9	4	1	2	8	3	12	6	7	10	5	11
52	3	9	4	1	11	7	2	12	5	8	6	10
53	11	10	7	4	1	6	3	9	12	5	8	2
54	5	11	3	9	4	1	6	2	10	12	7	8
55	7	5	11	8	3	9	1	10	6	4	2	12
56	2	3	5	11	9	4	10	11	8	6	12	7
57	12	2	6	5	10	8	9	7	4	11	1	3
58	10	12	2	7	5	11	4	8	3	1	9	6
59	3	6	12	10	7	5	11	3	9	2	4	1
60	6	8	9	12	2	10	7	5	1	3	11	4
61	1	11	10	6	12	2	4	7	8	9	5	3
62	4	1	6	8	3	12	2	10	9	5	7	11
63	9	4	1	2	8	6	12	11	7	3	10	5
64	3	9	4	1	6	8	7	12	5	2	11	10
65	11	2	9	4	1	5	8	3	10	12	6	7
66	5	10	3	9	2	1	6	8	11	7	12	4
67	7	5	11	3	10	4	1	9	12	6	8	2
68	2	3	5	11	9	7	10	1	6	8	4	12
69	12	8	7	5	11	3	9	4	1	10	2	6
70	10	12	2	7	5	11	3	6	4	1	9	8
71	8	6	12	10	7	9	11	5	2	4	3	1
72	6	7	8	12	4	10	5	2	3	11	1	9
73	1	4	10	6	12	11	7	8	2	5	9	3
74	4	2	3	8	6	12	1	11	7	10	5	9

Free by Astrostudents

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

भाव नं० / आयु	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
73	1	4	10	6	12	11	7	8	2	5	9	3
74	4	2	3	8	6	12	1	11	7	10	5	9
75	9	10	1	3	8	6	2	7	5	4	12	11
76	3	9	6	1	2	8	5	12	11	7	10	4
77	11	3	9	4	1	2	8	10	12	6	7	5
78	5	11	4	9	7	1	6	2	10	12	3	8
79	7	5	11	2	9	4	12	6	3	1	8	10
80	2	8	5	11	4	7	10	3	1	9	6	12
81	12	1	7	5	11	10	9	4	8	3	2	6
82	10	12	2	7	5	3	4	9	6	8	11	1
83	8	6	12	10	3	5	11	1	9	2	4	7
84	6	7	8	12	10	9	3	5	4	11	1	2
85	1	3	10	6	12	2	8	11	5	4	9	7
86	4	1	8	3	6	12	11	2	7	9	10	5
87	9	4	1	7	3	8	12	3	2	6	11	10
88	3	9	4	1	8	10	2	7	12	5	6	11
89	11	10	9	4	1	6	7	12	3	8	5	2
90	5	11	6	9	4	1	3	8	10	2	7	12
91	7	5	11	2	10	4	6	9	8	3	12	1
92	2	7	5	11	9	3	10	4	1	12	8	6
93	12	8	7	5	2	11	9	1	6	10	3	4
94	10	12	2	8	11	5	4	6	9	7	1	3
95	8	6	12	10	5	7	1	3	4	11	2	9
96	6	2	3	12	7	9	5	10	11	1	4	8

भाव नं० / आयु	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
97	1	9	10	6	12	2	7	5	3	4	8	11
98	4	1	6	8	10	12	11	2	9	7	3	5
99	9	4	1	2	6	8	12	11	5	3	10	7
100	3	10	8	1	5	7	6	12	2	4	11	4
101	11	3	9	4	1	6	8	10	7	5	12	2
102	5	11	3	9	4	1	2	6	8	12	7	10
103	7	5	11	3	9	4	1	8	12	10	2	6
104	2	7	5	11	3	9	10	1	6	8	4	12
105	12	2	4	5	11	3	9	7	10	6	1	8
106	10	12	2	7	8	5	3	9	4	11	6	1
107	8	6	12	10	7	11	4	3	1	2	5	9
108	6	8	7	12	2	10	5	4	11	1	9	3
109	1	9	10	6	12	2	7	11	5	3	4	8
110	4	1	6	8	10	12	3	5	7	2	11	9
111	9	4	1	2	5	8	12	10	6	7	3	11
112	3	10	8	9	11	7	4	1	2	12	6	5
113	11	3	9	4	1	6	2	7	10	5	8	12
114	5	11	3	1	4	10	6	8	12	9	7	2
115	7	5	11	3	9	4	1	12	8	10	2	6
116	2	7	5	11	3	9	10	6	4	8	12	1
117	12	2	4	5	6	1	8	9	3	11	10	7
118	10	12	2	7	8	11	9	3	1	6	5	4
119	8	6	12	10	7	5	11	2	9	4	1	3
120	6	8	7	12	2	3	5	4	11	3	9	10

Free by Astrostudents

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00

भाव न० / आयु	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
73	1	4	10	6	12	11	7	8	2	5	9	3
74	4	2	3	8	6	12	1	11	7	10	5	9
75	9	10	1	3	8	6	2	7	5	4	12	11
76	3	9	6	1	2	8	5	12	11	7	10	4
77	11	3	9	4	1	2	8	10	12	6	7	5
78	5	11	4	9	7	1	6	2	10	12	3	8
79	7	5	11	2	9	4	12	6	3	1	8	10
80	2	8	5	11	4	7	10	3	1	9	6	12
81	12	1	7	5	11	10	9	4	8	3	2	6
82	10	12	2	7	5	3	4	9	6	8	11	1
83	8	6	12	10	3	5	11	1	9	2	4	7
84	6	7	8	12	10	9	3	5	4	11	1	2
85	1	3	10	6	12	2	8	11	5	4	9	7
86	4	1	8	3	6	12	11	2	7	9	10	5
87	9	4	1	7	3	8	12	3	2	6	11	10
88	3	9	4	1	8	10	2	7	12	5	6	11
89	11	10	9	4	1	6	7	12	3	8	5	2
90	5	11	6	9	4	1	3	8	10	2	7	12
91	7	5	11	2	10	4	6	9	8	3	12	1
92	2	7	5	11	9	3	10	4	1	12	8	6
93	12	8	7	5	2	11	9	1	6	10	3	4
94	10	12	2	8	11	5	4	6	9	7	1	3
95	8	6	12	10	5	7	1	3	4	11	2	9
96	6	2	3	12	7	9	5	10	11	1	4	8

भाव न० / आयु	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
97	1	9	10	6	12	2	7	5	3	4	8	11
98	4	1	6	8	10	12	11	2	9	7	3	5
99	9	4	1	2	6	8	12	11	5	3	10	7
100	3	10	8	1	5	7	6	12	2	4	11	4
101	11	3	9	4	1	6	8	10	7	5	12	2
102	5	11	3	9	4	1	2	6	8	12	7	10
103	7	5	11	3	9	4	1	8	12	10	2	6
104	2	7	5	11	3	9	10	1	6	8	4	12
105	12	2	4	5	11	3	9	7	10	6	1	8
106	10	12	2	7	8	5	3	9	4	11	6	1
107	8	6	12	10	7	11	4	3	1	2	5	9
108	6	8	7	12	2	10	5	4	11	1	9	3
109	1	9	10	6	12	2	7	11	5	3	4	8
110	4	1	6	8	10	12	3	5	7	2	11	9
111	9	4	1	2	5	8	12	10	6	7	3	11
112	3	10	8	9	11	7	4	1	2	12	6	5
113	11	3	9	4	1	6	2	7	10	5	8	12
114	5	11	3	1	4	10	6	8	12	9	7	2
115	7	5	11	3	9	4	1	12	8	10	2	6
116	2	7	5	11	3	9	10	6	4	8	12	1
117	12	2	4	5	6	1	8	9	3	11	10	7
118	10	12	2	7	8	11	9	3	1	6	5	4
119	8	6	12	10	7	5	11	2	9	4	1	3
120	6	8	7	12	2	3	5	4	11	3	9	10

Free by AstroStudents

This book is the copy of the 3 volume book of LalKitab 1952 whose photocopy is being sold in the Black market at Rs. 2100.00